(तुलसीदास कृत रामचरितमानस आधारित)

Indra R. Sharma

This page is intentionally left blank

विषय सूची

BACKGROUND OF THE COMPILATION **4**

भूमिका- इस संग्रह के परिप्रेक्ष्य में **8**

रामचरितमानस पर उपनिषद्, भगवद्गीता का प्रभाव **15**

AN INTERESTING INSERTION **23**

बाल कांड **24**

मंगलाचरण 24
साधु एवं संत के आचरण 26
खलों की प्रवृति 30
संत-असंत 32
श्री राम नाम की महिमा 36
सगुन-अगुन 44
निरगुन सगुन 53

अयोध्या कांड **63**

बाल्मिकी गीता 63
वाल्मीकि कहते हैं 82

अरण्यकांड से **74**

नारी धर्म 74
नवधा भक्ति 84
संतों के लक्षण और सत्संग 90

किष्किंधा कांड **99**

मित्र के लक्षण 99

लंका कांड **102**

राम का युद्ध विजय सूत्र 102

उत्तर कांड **106**

रामराज्य 106
संत असन्त 110
राम का असन्तों के आचरण वर्णन 115
राजा रामजी का प्रजा को उपदेश 119
पक्षीराज गरूण - कागभुसुंडी प्रसंग 130
कागभुसुडी द्वारा कलिकाल का वर्णन 145

सगुन राम की भक्ति.....156
ज्ञान-भक्ति-निरुपण, ज्ञान-दीपक और भक्ति की महान् महिमा 162
संत कवि का आख़िरी प्रार्थना.....193

Background of the compilation

My interest in memorising verses from religious books started during my rural school days. My grandfather was a teacher at Birlapur, in the state of Bangal, which is now West Bengal after the partition in 1947. He, in one of the visits to our village, had invited Shri Gangadyal Pandey to live with our family in around 1947 and be the tutor for me and my uncle, who was three years elder,. Respected Pandeyji, the only teacher of the primary school, was the inspirer for memorising good poems of Hindi poet with his organising Antakshari regularly among his students. With the availability of Tulsidas' Ramcharitmanas and one Radheshyam Ramayan at home, we started reading and memorising its verses for the competition of the Antakshari he would quite often.. I shall like to mention here that Radheshyam Ramayana was handwritten by my grandfather and his students. I have few pages of it even now with me. After seeing that neglect of that, when I visited my villageI, I brought it as a memento of my grandfather. It had happened because my uncles failed to keep it only in family but started lending everyone who asked for it. It was in very readable simple Hindi and loved to recite enthusiastically unlike the Awadhi used in Tulsidas written in Awadhi, and for our age then a little difficult to understand.

During 1961 to 1965, I had totally given up going through those religious books, because of my company of friends and work

assignments in the automobile manufacturing company at Hind Motor. However, after 1966, my wife joined me in Hindustan Motors residential complex. She gradually made me more and more spiritually oriented with her pujas and fasts. And one day, in a gala night on a new year's eve, at HM club, I vowed to drop drinking and resorted to vegetarian foods for ever. I have kept my vow till date.

I don't remember exactly when did I start regular morning puja after bath before going to my work. I started to read some portions of the Ramcharitmanas. This interest grew with time. I had seen my grandfather completing Ramcharitamanas every month (Masaparayana) and then even in nine days (Navaparayana) in two Navratri festival times in the year. By 1990, I also started doing that. And my religious interest grew more intensively over the years. I did carry on with reading Ramcharitamanas under all odd conditions. It continued even while travelling inside the country or abroad to many countries on company assignments that had become very frequent at that time at Hindustan Motors. Now also I am carrying out the reading full Sundar-Kand everyday morning except the day when I am physically unable due to some ailment.

Ramcharitamanas

The Vedas are the main root books of all Hindu religious scriptures. 108 Upanishads were basically integrated in the four Vedas. Ramcharitamanas of Goswami Tulsidas has taken the story from

the earliest Sanskrit epic of Valmiki Ramayana. Rishis who created Upanishads and then Bhagawad Gita have added their own views on the spiritual views propounded in four Vedas about the Ultimate Reality, with their own experiences of spiritual realisation, researches and experiences in their own writings. They also had to correct many abrasions that had cropped up due to degenerations of the older established values. It had happened because of the some teachers with their limited knowledge and understanding of the scriptures. They taught or preached wrong interpretations and then the social leaders over years created many myths and superstitions in the minds of common people common..

In Ramcharitamanas, some Doha and chaupais are almost translations of the same messages with a little variation of the slokas in Upanishads, and then that of Bhagavad Gita. But the uniqueness of Ramcharitamanas is that it was in the language of his region. However, it has now reached all over the world through its translations.

>

I hope it will be useful for my children and their friends in the US, so away from India where the people at large are more and more over the years getting educated in English media because of the wrong notion about the value of it over getting educated in the languages of the states. I am sure people will gradually get interested in spiritual knowledge too along with secular knowledge. Particularly after a particular time in life, as we age we start losing our interest in what we had been doing and need some knowledge

about something more than the secular knowledge that we keep on gaining over years. I hope this collection will serve with an initiation in spiritual knowledge for everyone of all ages.

https://en.m.wikipedia.org/wiki/Tulsidas#:~:text=Tulsidas%20was%20acclaimed%20in%20his,divine%20devotee%20of%20lord%20Rama

भूमिका- इस संग्रह के परिप्रेक्ष्य में

रामकथा की शुरूआत आदिकवि महर्षि वाल्मीकि के 'वाल्मीकीय रामायण' (संस्कृत : रामायणम् = राम + आयणम् ; शाब्दिक अर्थ : 'राम की जीवन-यात्रा) नाम के प्रसिद्ध महाकाव्य से हुई, जो संस्कृत में लिखा सर्वप्रथम महाकाव्य है।

संस्कृत साहित्य परम्परा में दोनों महाकाव्यों - रामायण और महाभारत (जो रामायण के बाद का है और महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित है), को इतिहास कहा गया है और दोनों भारतीय सनातन संस्कृति की सबसे प्रसिद्ध सबसे ज़्यादा लोकप्रिय धरोहरों में हैं।
वाल्मीकीय रामायण में राम को आदर्श पुरूष के रूप में बताया गया है। भारत के मध्यकालीन भक्त संत कवि तुलसीदास का रामचरितमानस राम को ब्रह्म के सगुण अवतार के रूप में प्रस्तुत करता है।

वाल्मीकि रामायण की शुरुआत में ऋषि वाल्मीकि नारद से पूछते हैं-
कोन्वस्मिन्साम्प्रतं लोके गुणवान्कश्च वीर्यवान् ।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रत:।।1.1.2।।
चारित्रेण च को युक्तस्सर्वभूतेषु को हित: ।
विद्वान्क: कस्समर्थश्च कश्चैकप्रियदर्शन: ।।1.1.3।।
आत्मवान्को जितक्रोधो द्युतिमान्कोऽनसूयक: ।
कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे ।।1.1.4।।

"आजतक इस दुनिया में कौन उत्कृष्ट गुणों, पराक्रम, धार्मिकता, कृतज्ञता, सत्यता और अपनी प्रतिज्ञाओं में दृढ़ता से संपन्न, अच्छे आचरणवाला, सभी जीवित प्राणियों की भलाई में तत्पर, सबमें सक्षम और विलक्षण रूप से सुंदर, आत्म-संयमी और क्रोध पर विजय प्राप्त किया, प्रतिभा संपन्न और ईर्ष्या से मुक्त व्यक्ति हुआ है, जिसके क्रोधित होने पर शत्रु ही नहीं देवता भी डरते थे?"

नारद ने वाल्मीकि को अयोध्या के राजा राम को इन सब गुणों से सम्पन्न बता उनकी कहानी संक्षेप में सुनाई। नारद की कहानी छोटी और महत्वपूर्ण है। यही कथा वाल्मीकिय रामायण के

राजा राम की कहानी का महाकाव्य रूप में विस्तार है। वाल्मीकि को राम का समसामयिक माना जाता है।

वाल्मीकि रचित रामायण में व्यवहृत श्लोकों की भी एक कथा है जो उस रामायण में ही है।एक बार वाल्मीकि क्रौंच पक्षी के एक जोड़े को देख रहे थे। वह जोड़ा प्रेमालाप में लीन था, तभी उन्होंने देखा कि एक बहेलिये ने प्रेम-मग्न क्रौंच (सारस) पक्षी के जोड़े में से नर पक्षी का वध कर दिया। इस पर मादा क्रौंच विलाप करने लगी। उसके विलाप को सुनकर वाल्मीकि की करुणा जाग उठी और उसी द्रवित अवस्था में उनके मुख से स्वतः ही यह श्लोक फूट पड़ा।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वंगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकं वधीः काममोहितम्॥1.2.15॥

(हे दुष्ट, तुमने प्रेम मे मग्न क्रौंच पक्षी को मारा है। जा तुझे कभी भी प्रतिष्ठा की प्राप्ति नहीं हो पायेगी और तुझे भी वियोग झेलना पड़ेगा।)
ब्रह्मा जी ने उन्हें इसी छन्द में रामायण पूरा करने की सलाह दी। सर्वप्रथम रामायण की रचना का इस तरह आरम्भ हुआ।
https://www.valmiki.iitk.ac.in/content?field_kanda_tid=1&language=dv&field_sarga_value=2&field_sloka_value=15&

अन्य प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में भी राम कथा का विवरण मिलता है। पुराणों में ब्रह्मांड पुराण के अन्तर्गत जिन अध्यायों में राम के सम्पूर्ण चरित्र का वर्णन किया गया है उसे 'अध्यात्म रामायण' का नाम दिया गया है। श्रीमद्भागवत के नवम् स्कंध के दसवें अध्याय में राम के अवतरण से राज्याभिषेक तक की घटनाएं कुल 55 श्लोकों में प्राय: इत्ति वृत्तात्मक ढंग से वर्णित है।

वाल्मीकि के बाद के संस्कृत में लिखे महाकाव्यों में कालिदास का रघुवंश महाकाव्य और महाकवि भवभूति द्वारा रचित 'उत्तर राम चरित' प्रमुख हैं।

भारतीय भाषाओं में सबसे लोकप्रिय तुलसीदास की राम कथा रामचरितमानस है, जिसकी कथा मूलत: बालमिकीय रामायण पर आधारित है और उत्तर प्रदेश देश की एक आंचलिक भाषा अवधी में लिखी गई है। तुलसीकृत रामायण की रचना विक्रम संवत् 1631 में यानी 1575 ई. में प्रारम्भ हुई और विक्रम संवत् 1633 यानी 1577 ई. में पूरी हुई।
https://en.m.wikipedia.org/wiki/Tulsidas लगता है तुलसीदास अपने निगमागमों के अध्ययन के दौरान मद्भागवद् के कृष्ण का ब्रह्म के रूप में वर्णन से बहुत प्रभावित हुये थे।

रामचरितमानस लिखते समय तुलसीदास ने भी राम को सगुन साकार ब्रह्म रूप में चित्रण किया और यह पूरे रामचरितमानस में झलकताहै

अन्य भारतीय भाषाओं में भी अलग अलग समय में रामायणों की रचना हुई।
1. तमिल भाषा में कम्ब रामायण या रामावतारम्
रामावतारम् या कम्ब रामायण तमिल साहित्य की सर्वोत्कृष्ट कृति एवं एक बृहत् ग्रंथ है। कंबन की यह सर्वोत्तम रचना है और तमिल के प्रसिद्ध अंनुसाधक राघव आयंगर के अनुसार 'रामवतारम्' ११७८ ई. में समाप्त हुआ । भारत के बहुत से विद्वान इसको देश की एक अमूल्य कृति मानते हैं।
https://en.m.wikipedia.org/wiki/Ramayana
https://en.m.wikipedia.org/wiki/Versions_of_the_Ramayana
2. बांग्ला में कृतिवास रामायण
कृत्तिवास रामायण (कृतिबासी रामायण) या 'श्रीराम पाँचाली' बांग्ला की रचना पन्द्रहवीं शती के बांग्ला कवि कृतिवास ओझा ने की थी। यह संस्कृत को छोड़ अन्य उत्तर-भारतीय भाषाओं का शायद पहला क्षेत्रीय भाषा में लिखा रामायण है। तुलसीदास के रामचरितमानस के रचनाकाल से लगभग सौ वर्ष पूर्व कृत्तिवास रामायण की रचना हुई थी। निराला की प्रसिद्ध रचना 'राम की शक्तिपूजा' कृतिवास रामायण पर आधारित है।

3. केरल का एशुत्तच्छन रामायण
उत्तर भारत में तुलसी रामायण का जो स्थान है, वही केरल में एशुत्तच्छन द्वारा विरचित आध्यात्म रामायण किहिपांट' का है। सोलहवीं सदी में रचित इस लोकप्रिय कृति का पाठ सभी हिन्दूओं के घरों में पूरे श्रावण (मलयालम कर्कडकमास) महीने में रोज़ शाम को किया जाता है और प्रसिद्ध त्योहार ओणम से पूर्व संपन्न होता है। http://ignited.in/p/252543

असम में असमी रामायण, उड़िया में विलंका रामायण, कन्नड़ में पंप रामायण, कश्मीर में कश्मीरी रामायण, मराठी में भावार्थ रामायण आदि अन्य रामायण भारतीय भाषाओं में लिखी गईं। कहते हैं भारत के अन्य भाषाओं और विश्व के देशों को मिलाकर क़रीब क़रीब 300 या उससे भी ज़्यादा ही रामायण उपलब्ध हैं।

गीता प्रेस का भी सरल अंग्रेज़ी अर्थ के साथ रामचरितमानस है ।पिछले कुछ साल में सरल अंग्रेज़ी में पद्य में भी बहुत ही अच्छा अनुवाद हुआ है । पहला इंफ़ोसिस के संस्थापक प्रसिद्ध उद्योगपति श्री नारायनमूर्ति के पुत्र रोहन मूर्ति के 'मूर्ति क्लासिकल लाइब्रेरी फ़ाउन्डेशन' के

प्रयत्न से अमरीकन हिन्दी विद्वान फ़िलिप लूटेनजेनडौफ (Philip Lutgendorf) के The Epic of Ram का प्रकाशन हार्वरड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा हुआ है। चार खंडों में अयोध्याकांड तक उपलब्ध है। दूसरे अनुवाद का प्रकाशन पेनग्यून क्लासिक के अंतर्गत रोहिणी चौधुरी द्वारा 'तुलसीदास रामचरितमानस' नाम से तीन खंडों में किया गया है। रोहिणी चौधरी ने मूल को साथ साथ नहीं दिया है, जब पहले में मूल भी है। अत: हिन्दी जानने वालों को शायद अच्छा लगेगा।

गीता प्रेस के चलते पहले केवल मूल, फिर भावार्थ सहित, और फिर विशद व्याख्या करते हुए रामचरितमानस पर अलग अलग सस्ते रामचरितमानस का प्रकाशन हुआ। इसी कारण उत्तर भारत के हिन्दी प्रदेशों में शायद सब हिन्दू परिवारों में रामचरितमानस की एक या अधिक प्रति उपलब्ध है। एक और बहुत महत्वपूर्ण पुस्तक 'मानस-पीयूष' रामचरितमानस का गीता प्रेस ने प्रकाशित किया है '। यह भारी भरकम सात खंडों में रामचरितमानस का विस्तृत व्याख्या है।

तुलसीकृत रामचरितमानस का महत्व

https://en.m.wikipedia.org/wiki/Tulsidas

भारत के प्राचीन ऋषियों से लेकर बाद के रचनाकारों ने भी बहुसंख्यक समाज के लोगों में सनातन धर्म के गिरते मानदंड का ख़्याल रख उनके स्वभाव और आचरण को उन्नत करने के प्रयास अपने ग्रंथों द्वारा किया। यह अन्तर उपनिषदों के बाद के भगवद्गीता में भी दिखता है। बाद के अन्य धार्मिक ग्रंथों- बाल्मिकी रामायण, महाभारत, पुराण में भी मिलता है। वे सब हज़ारों वर्ष पूर्व के ग्रंथ है।यह क्रम बाद में चलता रहा।

रामचरितमानस भारत के विदेशी शासनकाल का ग्रंथ है। समय के साथ बहुत कारणों से संस्कृत में लिखे धर्मग्रंथों की हिन्दू समाज के केवल कुछ लोगों तक पहुँच थी। विदेशियों द्वारा किये जाते तहस-नहीं के कारण शायद संस्कृत जाननेवाले कम होते गये थे। तुलसीदास ने जन जन तक के लिये रामचरितमानस की लोकभाषा में रचना की। अत: उन्होंने समाज का नेतृत्व करने वाले वर्णों के लोगों में उनके आचरणों को गिरा होने के कारण रामचरितमानस राम के चरित्र में आदर्श राजा या महापुरूष या व्यक्ति का चित्रण किया। साथ ही साथ बहुत जगहों पर विशेषकर समाज के आमलोगों के गिरे आचरण में सुधार के लिये आदर्श और आवश्यक आचरण एवं स्वभाव का भी वर्णन किया और उनकी तत्कालीन विभिन्न कमियों को भी उजागर किया।

तुलसीदास को बचपन से बहुत कष्ट मिला समाज के पतन और प्रचारित प्रचलित भ्रान्तियों के कारण। बचपन माता पिता के दुलार स्नेह से बंचित रहा। यौवन में बिबाह के बावजूद गृहस्थ बनते बनते रह गये। फिर ज्ञानी ब्राहम्णों की अनुकम्पा से संस्कृत में पारंगत हुए, पर जन जन तक अपनी रचना को ले जाने के लिये वे उसे लोकभाषा में की। तत्कालीन तथाकथित ज्ञानी ब्राह्मणों ने रामचरितमानस का संस्कृत की जगह आंचलिक भाषा अवधी में लिखे जाने का विरोध किया और बहुत तरह से उनके अवधी में लिखे रामचरितमानस की श्रेष्ठता को सिद्ध करने की चुनौती दिया। इसका ध्यान रखते हुए ब्राह्मणों के विरूद्ध में तुलसीदास जी ने यदाकदा कुछ बातें कहीं भी, पर अधिकांशतः उनको आदर देने की भरसक कोशिश की। फिर भी रामचरितमानस के समय हिन्दू समाज में फैले हुये बुराइयों को, जो धर्म आधारित नहीं थे, और जो उन्नत समाज के लिये ज़रूरी था, दूर करने के लिये भक्त तुलसी दास ने बार बार अपने बिचार रखे हैं।

विभिन्न कारणों से हिन्दी भाषी भारतीय भी तुलसीदास का महत्व भूलते जा रहे हैं। उनके बारे में दो विदेशी विद्वान– प्रसिद्ध इतिहासकार विन्सेंट स्मिथ और भाषाविद् सर जार्ज ग्रिफ़िथ ने लिखा है। प्रसिद्ध इतिहासकार विन्सेंट स्मिथ अपने समय का सबसे बड़ा व्यक्ति कहा है, यहाँ तक की अकबर से भी बड़ा एवं भाषाविद् सर जार्ज ग्रिफ़िथ ने उन्हें बताया, 'the greatest leader of the people after the Buddha'. यह प्रसिद्ध विद्वान पवन कुमार वर्मा ने अपनी किताब 'The greatest ode to Lord Ram' में लिखा है--

"The historian Vincent Smith has called him the greatest man of his age in India, greater than even Akbar himself. The linguist Sir George Griffith has described him as 'the greatest leader of the people after the Buddha'. Tulsi's Ramcharitmanas has, in fact, been celebrated as "the greatest book of all devotional literature"; Mahatma Gandhi even praised it as "a living sum of Indian culture."

"इतिहासकार विंसेंट स्मिथ ने उन्हें भारत में अपने युग का सबसे महान व्यक्ति कहा है, यहाँ तक कि स्वयं अकबर से भी महान। भाषाविद् सर जॉर्ज ग्रिफ़िथ ने उन्हें 'बुद्ध के बाद लोगों का सबसे महान नेता' बताया है। तुलसी के रामचरितमानस को वास्तव में "सभी भक्ति साहित्य की सबसे बड़ी पुस्तक" के रूप में मनाया जाता है; महात्मा गांधी ने भी इसे "भारतीय संस्कृति का जीवंत योग" कहकर इसकी प्रशंसा की।

सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (1851-1941) अंग्रेजों के जमाने में "इंडियन सिविल सर्विस" के कर्मचारी थे और "लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इंडिया" के प्रणेता के रूप में अमर हैं। जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने तुलसी के भारतीय जनमानस में उभरने को तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में देखा है। उन्होंने बड़ी ही सरलता से यह बात स्पष्ट की है कि किस प्रकार हिन्दू धर्म विकृत होने के कारण 'शिथिल' पड़ रहा था, वहीं दूसरी ओर मुगल साम्राज्य संगठित हो रहा था। ग्रियर्सन लिखते हैं- "अनैतिकता के उस युग में जब हिन्दू समाज के बन्धन शिथिल पड़ रहे थे और मुगल साम्राज्य संगठित हो रहा था, इस ग्रन्थ की सबसे विशिष्ट बात इसकी कठोर नैतिकता है, जो इस शब्द के किसी भी अर्थ में मानी जा सकती है।" ग्रियर्सन फिर कहते हैं कि तुलसी का आगमन हिन्दुस्तान के लिए 'परम सौभाग्य' की बात है। ग्रियर्सन ने तुलसी को 'महान देवदूत' की संज्ञा दी है। ग्रियर्सन ने तुलसी का भारतीय जनमानस में आविर्भाव एक सुखद घटना थी, जिसने ना सिर्फ रूढ़ियों और विकृतियों को नष्ट किया बल्कि सुनहरा मर्यादित भविष्य भी अपनी समन्वयकारी दृष्टि से प्रस्तुत किया। ग्रियर्सन ने 'रामचरितमानस' की तुलना 'बाईबिल' से की है। उन्होंने लिखा है- "यह 10 करोड़ जनता का धर्मग्रंथ है और उसके द्वारा यह उतना ही भगवत्प्रेरित माना जाता है, अंग्रेज पादरियों द्वारा जितनी भगवत्प्रेरित 'बाइबिल' मानी जाती है।" 1886 ई. में ग्रियर्सन ने प्राच्य विद्या विशारदों की अन्तर्राष्ट्रीय सभा के वियना अधिवेशन में, "हिन्दुस्तान (हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेश) के मध्यकालीन भाषा-साहित्य और तुलसी" पर एक लेख पढ़ा था।" यह सहचर त्रैमासिक पत्रिका के एक लेख से उद्धृत है।

हिन्दी के साहित्यकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं- "प्राचीन भारतीय भक्तिमार्ग के भीतर भी उन्होंने बहुत-सी बढ़ती हुई बुराईयों को रोकने का प्रयत्न किया। शैवों और वैष्णवों के बीच बढ़ते हुए विद्वेष को उन्होंने अपनी सामंजस्य व्यवस्था द्वारा बहुत कुछ रोका, जिसके कारण उत्तरी भारत में वह वैसा भयंकर रूप न धारण कर सका जैसा उसने दक्षिण में किया।"

आगे चलकर प्रसिद्ध आलोचक हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने भी तुलसी को समन्वयकारी कहा है- "भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है, जो समन्वय कर सके, क्योंकि भारतीय समाज में नाना भाँति की परस्पर-विरोधिनी संस्कृतियाँ, साधनाएँ, जातियाँ, आचार-निष्ठा और विचार-पद्धतियाँ प्रचलित हैं। बुद्धदेव समन्वयकारी थे, गीता में समन्वयकारी चेष्टा है और तुलसीदास भी समन्वयकारी थे।"

तुलसीदास ने रामचरितमानस को संस्कृत को छोड़ लोक भाषा, अवधी में दोहा और चौपाइयों की काव्यशैली में लिखा। सभी कांडों के मंगलाचरण एक कुछ ऋषियों की राम प्रार्थना को संस्कृत में भी रखा, विद्वानों द्वारा अध्ययन करने के विषय रूप में भी रखा और आमलोगों को पढ़ने और अकेले या समूह में भी गा सकने की भी संम्भावना रखी। बिहार, उत्तरप्रदेश के गाँवों में हमने

बचपन में हर शाम को किसी न किसी के दरवाज़े पर इसके समूह गान को होते देखा है। सभी वर्गों के राम में भक्ति एवं श्रद्धा रखनेवाले या संगीत में रूचि लेनेवाले लोग आ बैठ जाते थे। झालों एवं ढोलक के साथ इसका गान होता था। गाँव में रामायण की घटनाओं पर आम लोग बात भी करते मिलते थे और कुछ शंका समाधान के प्रश्नोत्तर भी होते दिखते थे। आज के मापदंड पर साधारण पढ़े लिखों को भी बहुत दोहे चौपाइयाँ या प्रसंग याद हो जाते थे। मेरे गाँव के एक सामान्य शिक्षित सम्मानित वृद्ध की याद अभी भी है जिन्हें पूरी रामायण मुंहजवानी याद थी। अब अपने देश के गाँवों से तो यह क़रीब क़रीब खत्म हो गया है। पर मॉरीशस, फ़िजी आदि में दिखने को मिलता है। कुछ हिन्दी प्रदेशों के जो गिरमिटिया मज़दूर वहाँ गये थे, वे अपने साथ रामचरितमानस भी ले गये थे। वहाँ रामचरितमानस के पाठ का बड़े पैमाने पर आयोजन होता है। मुझे कुछ वहाँ इस सिलसिले गये दोस्तों ने यह बताया है।

राम की कथा वस्तु के बीच बीच बहुत सारी जगहों पर तुलसी दास जी ने गूढ़ अध्यात्मिक ज्ञान पर भी बहुत सरल तरह से लिखा है।

उन्होंने अंसत (खल), संत(साधु), संतसंगति आदि के प्रवृतियों पर बहुत साफ़ साफ़ और बार बार कहा है और एक धर्म आधारित आम समाज के रचना की पूरी चेष्टा की है। इनके अलावा निर्गुण सगुन में एकत्व, तत्कालीन विष्णु और शिव के माननेवालों के द्वेष को ख़त्म करने या समाज में फैले ऊँच नीच भावना को मिटाने की राय भी साफ़ शब्दों में बताये है। बहुत चौपाइयों एवं दोहों में भगवान कृष्ण के गीता में दिये उपदेशों को अपनी तरह से रखा है। ज्ञानयोग से भक्ति योग की प्रधानता को बहुत सरल तरह से बताया है। साथ ही साथ समाज में गिरते जीवन मूल्यों पर लिखा है जो आज के तथाकथित उन्नत शिक्षित समाज में भी बढ़ता जा रहा है। राम के चरित्र के द्वारा सबके लिये एक आदर्श समाज, आदर्श पुरूष और शासक के चरित्र को देश और समाज के सामने रखा है जो आज भी उतना ही सामयिक है।

तुलसीदास के रामचरितमानस में राम कथा चार संभाषणों के माध्यम से किया गया है- १. तुलसीदास का मुनि याज्ञवल्क्य और उनके प्रिय शिष्य भरद्वाज का प्रत्यक्ष दर्शन संवत् १६२८ में प्रयाग के माघ मेले में बताया जाता है। याज्ञवल्क्य को भरद्वाज के शंका समाधान के लिये राम की कथा सुनाते पाया था। यह वर्णन रामचरितमानस में शिव ने जो उमा को रामकथा सुनाया है उसमें आया है। याज्ञवल्क्य कहते हैं -'तात सुनहु सादर मन लाई। कहउँ राम कै कथा सुहाई।'

२. भगवान शिव ने पार्वती के आग्रह पर रामकथा सुनाया। पार्वती सती के दूसरे जन्म का नाम है। सती भगवान राम के बनवास काल में उनके ब्रह्म रूप को जानने के लिये राम की परीक्षा

लीं और उस बात को शिव को नहीं बताई। सती के के त्याग बाद अपने पर्यटन काल में शिव ने राम कथा कागभुसुण्डी से सुनी थी। शिव से प्रतिज्य हो वे उमारूप में पैदा हुई और शिव के साथ ब्याह कर कैलास आईं । एक दिन उमा ने शिव से राम की पूरी कथा सुनाने का आग्रह किया। शिव ने वही किया। पूरे रामचरितमानस में इसका ज़िक्र दिखता है।

३. वही राम कथा कागभुसुडी ने पक्षीराज गरूण को सुनाई जब वे राम रावण युद्ध के समय उठे अपने संशय का निवारण करने के लिये शिव के आदेश पर कागभुसुडी के पास गये। उत्तरकांड में यह प्रकरण आया है।
४. बीच बीच में तुलसीदास ने भी अपने भावनाओं को कथा प्रसंग में ब्यक्त किये हैं।
https://en.m.wikipedia.org/wiki/Tulsidas#:~:text=Tulsidas%20was%20acclaimed%20in%20his,divine%20devotee%20of%20lord%20Rama

---

रामचरितमानस पर उपनिषद्, भगवद्गीता का प्रभाव

तुलसीदास ने रामचरितमानस में उपनिषदों एवं भगवद्गीता के संस्कृत के श्लोकों के विचारों को अपनी अवधी में बडी सरलता से रखा है । उपनिषदों के विषय बहुत गूढ़ होते हुए भी सबकी समझ में आ जाता है । मैं थोड़े उदाहरण से यह लोगों तक पहुँचाने की चेष्टा करना चाहता हूँ ।शायद सबको अच्छा लगे।

ईशोपनिषद के पहले श्लोक की प्रसिद्ध प्रथम पंक्ति,'**ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्**' है।
बालकांड के प्रारम्भ के दोहे ७-ग में ही तुलसीदास ने इसे ही इस तरह कहा है -'जड़ चेतन जंग जीव जंतु सकल राममय जानि' और फिर 'सीय राममय सब जग जानी।करउं प्रनाम जोरि जुग

पानी॥ अयोद्ध्या कांड के १२७ दोहा चित्रकूट में जब राम अपने रहने की जगह पूछते हैं, तब बाल्मिकी उत्तर देते हैं- 'पूछेहु मोहि कि रहौं कहं मैं पूंछत सकुचाउं। जहं न होहु तहं देहि कही तुम्हहि देखावौं ठाउं॥' फिर नवधा भक्ति बताये हुए कहते हैं, 'सातंव सम मय जग देखा।...' अर्थात् 'मेरे सातवें प्रकार के भक्त पूरे जग को मुझसे ही व्यापित देखते हैं।'

ईशोपनिषद् में सोलहवें श्लोक में अंतिम पंक्ति है- '**योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि** ॥' तुलसीदास रामचरितमानस ने इसको उत्तरकांड में दोहा ११७ घ के बाद की पहली चौपाई में व्यवहार करते हैं-

'सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडा। दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा॥
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा। तब भव मूल भेद भ्रम नासा॥'

फिर तुलसीदास ने कठोपनिषद् के एक श्लोक को भी अपनी तरह कहा है। श्लोक है-
यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृद्स्येह ग्रंथय: अथ मर्त्यो ऽमृतो भवत्येतावद्ध्यनुशासनम्।॥२.३.१५॥
जब हृदय की सभी ग्रंथियाँ पूरी तरह खुल जातीं है, मनुष्य उस ब्रह्म को पा लेता है।

रामचरितमानस में वह इस तरह आया है-
छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई। तब यह जीव कृतारथ होई॥
छोरत ग्रंथ जानि खगराया। बिघ्न नेक करइ तब माया॥

राम ब्रह्म है और तुलसीदास ने राम के लिये भी उपनिषदों की तरह 'नेति नेति' रामचरितमानस में बार बार कहा एक से ज़्यादा जगहों पर।

ब्रह्म कैसे मिलते हैं? मुंडकोपनिषद के ३.२.३ श्लोक के दूसरी पंक्ति में कहा गया है-
'**यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्**'- यह ब्रह्म जब किसी साधक पर अनुग्रह करता है तब ही वह अपने स्वरूप को दिखाता है।

रामचरितमानस में बाल्मिकी श्री राम से मिलने पर एक प्रार्थनात्मक दोहे में कहते हैं-
"**सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई॥**
तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन। जानहिं भगत भगत उर चंदन॥'
-वही आपको जानता है, जिसे आप जना देते हैं और जानते ही वह आपका ही स्वरूप बन जाता है। हे रघुनंदन! आपकी ही कृपा से भक्त आपको जान पाते हैं।

तुलसीदास ने रामचरितमानस के सभी कांडों का मंगलाचरण संस्कृत श्लोकों से किया है। बालकांड के मंगलाचरण में ही अपने इष्टदेव राम के बारे में लिखे श्लोक में तुलसीदास ने एक उदाहरण दिया है साँप और रस्सी का, जो उपनिषद् और अद्वैत विचारधारा में काफ़ी बार व्यवहृत हुआ है। इस मंगलाचरण के श्लोक ५ की पहली दो पंक्ति और उसका हिन्दी अर्थ इस तरह है-

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्त्वादमृषैव भाति 'सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः'।

जिनकी माया के वशीभूत सम्पूर्ण विश्व, ब्रह्मादि देवता और असुर हैं, जिनकी सत्ता से 'रस्सी में सर्प के भ्रम की भाँति' यह सारा दृश्य जगत् सत्य ही प्रतीत होता है.....

बालकांड के ही दोहा सं.१११ के बाद की चौपाई में इसी उदाहरण का व्यवहार किया है इस तरह-
झूठेउ सत्य जाहि बिनु जानें। जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचानें॥
जेहि जानें जग जाइ हेराई। जागें जथा सपन भ्रम जाई॥1॥
जिसके बिना जाने झूठ भी सत्य मालूम होता है, जैसे बिना पहचाने रस्सी में साँप का भ्रम हो जाता है और जिसके जान लेने पर जगत का उसी तरह लोप हो जाता है, जैसे जागने पर स्वप्न का भ्रम जाता रहता है।

सुन्दरकांड के मंगलाचरण में राम के ब्रह्म रूप का ही गुणगान है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम को सगुण साकार ब्रह्म ही माना और वैसे ही वर्णन भी किया।

इसी तरह तुलसीदास ने उपनिषदों द्वारा परम ब्रह्म के लिये व्यवहृत शब्द **'सदचिदानन्द'-(सत्-चित्-आनन्द)** को राम के लिये रामचरितमानस में भी किया है- 'राम सच्चिदानंद दिनेसा।...'और आगे फिर-'राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना।...'

तुलसीदास के राम सगुन, साकार ब्रह्म हैं और यह भी माना और बताया कि ब्रह्म सगुन और अगुन दोनों ही हैं- 'अगुन सगुन दुइ ब्रह्म स्वरूपा। अकथ, अगाध, अनादि, अनूपा॥१.२२.१क॥
और वहीं फिर
ब्यापकु एक ब्रह्म अबिनासी। सत चेतन घन आनँद रासी॥१.२२.४क॥
सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा॥
अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई॥1॥

-सगुण और निर्गुण में कुछ भी भेद नहीं है- मुनि, पुराण, पण्डित और वेद सभी ऐसा कहते हैं। जो निर्गुण, अरूप (निराकार), अलख (अव्यक्त) और अजन्मा है, वही भक्तों के प्रेमवश सगुण हो जाता है॥1॥

जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें। जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसें॥

-निर्गुण है वही सगुण कैसे है? जैसे जल और ओले में भेद नहीं। (दोनों जल ही हैं, ऐसे ही निर्गुण और सगुण एक ही हैं।)

तुलसीदास के 'सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा' पर ईशोपनिषद् के श्लोक १४ का प्रभाव है-

सम्भूतिञ्च विनाशञ्च यस्तद्वेदोभयं सह।

विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुते ॥१४॥

वैसे इस श्लोक में असम्भूति को अगुन है एवं विनाशम् से सगुन का मतलब है। और दोनों को एक साथ पूर्ण रूप से जानने की हिदायत है पूर्ण ज्ञानी व्यक्ति को। और फिर उसकी मृत्यु को पार कर लेने एवं अमरता (अमृत) को पा लेने की इच्छाओं में क्या अन्तर है। यह सगुन और निर्गुन एक ही होने की बात भगवद्गीता में भी है।

पर मुझे सबसे बड़ा आश्चर्य तब हुआ जब अरण्य कांड में अत्रि ने सोरठा में गाये श्लोक ९ में राम की प्रार्थना में 'तुरीयमेव' शब्द का व्यवहार किया जो निम्न तरह से है-

तमेकमद्भुतं प्रभुं। निरीहमीश्वरं विभुं॥

जगद्गुरुं च शाश्वतं। 'तुरीयमेव'केवलं॥9॥

- उन (आप) को जो एक (अद्वितीय), अद्भुत (मायिक जगत से विलक्षण), प्रभु (सर्वसमर्थ), इच्छारहित, ईश्वर (सबके स्वामी), व्यापक, जगद्गुरु, सनातन (नित्य), तुरीय (तीनों गुणों से सर्वथा परे) और केवल (अपने स्वरूप में स्थित) हैं।

यह उपनिषदों में सबसे छोटे (कुल केवल १२ श्लोक) मांडूक्योपनिषद्,जिसे जगद्गुरु शंकराचार्य ने सबसे महत्वपूर्ण उपनिषद् माना और जिसका शंकराचार्य के गुरू के गुरू गौडपाद ने २१५ श्लोकों की कारिका लिखी और ७वें श्लोक में कहे चौथी अवस्था का नाम तुरियम् दिया।)।

-

भगवद्गीता का रामचरितमानस पर प्रभाव तो बहुत ही ज़्यादा दिखता है। कुछ उदाहरण की तौर पर पाठकों के नीचे दिये जा रहे हैं।

भगवद्गीता के पाठ को आरम्भ करने के लिये सात श्लोकों का 'गीता ध्यानम्' भक्तों में बहुत लोकप्रिय है। यद्यपि इसके रचयिता नाम का नाम कहीं मिलता नहीं है, पर अनुमान किया जाता है कि ११-१२वें सदी के श्रीधर स्वामी ने की, जिन्होंने भगवद्गीता के महत्वपूर्ण भाष्य की

रचना की, जिसको सब पंथ के विद्वान संतों ने अपनाया। इसके एक श्लोक को तुलसीदास ने बालकांड के मंगलाचरण के बाद के सोरठा में दिया है। गीताध्यानम् का मूल श्लोक है–

मूकं करोति बाचालं पंगु लंघयते गिरीम्,

यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्॥७॥

तुलसीदास का इसका अवधी में अनुवाद है-

मूक होई बाचाल पंगु चढ़इ गिरिवर गहन।

जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन॥४॥

अब भगवद्गीता के प्रभाव देखिये। सबसे पहले गीता के दो लोकप्रिय श्लोक ७ और ८ में भगवान कृष्ण अवतार के अवसर और उस अवसर का वर्णन और फिर उसका प्रयोजन बताते हैं-
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥७॥
जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ॥7॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥८॥
साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ॥8॥

तुलसी दास जी रामचरितमानस में उसे ही निम्न तरीक़े से कहा गया है-
“जब जब होई धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी॥
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ।।
असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग बिस्तारहिं बिसद जस राम जन्म कर हेतु।।”
जब-जब धर्म का ह्रास होता है और नीच अभिमानी राक्षस बढ़ जाते है । और वे ऐसा अन्याय

करते हैं कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता तथा ब्राह्मण, गो, देवता और पृथ्वी कष्ट पाते हैं, तब-तब वे कृपानिधान प्रभु भाँति-भाँति के (दिव्य) शरीर धारण कर सज्जनों की पीड़ा हरते हैं।वे असुरों को मारकर देवताओं को स्थापित करते हैं, अपने (श्वास रूप) वेदों की मर्यादा की रक्षा करते हैं और जगत में अपना निर्मल यश फैलाते हैं। श्री रामचन्द्रजी के अवतार का यह कारण है॥

गीता के अध्याय ९ के श्लोक ३० में कृष्ण दुराचारी से दुराचारी के साथ भी भक्त बन जाने कैसे वर्ताव करते बताते हैं-

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः॥८.३०॥

अगर कोई दुराचारी-से-दुराचारी भी अन्न्यभक्त होकर मेरा भजन करता है तो उसको साधु ही मानना चाहिये। कारण कि उसने निश्चय बहुत अच्छी तरह कर लिया है।

तुलसीदास सुन्दरकांड में कहते हैं-

कोटि बिप्र बध लागहि जाही।आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू ॥

सनमुख होइ जीव मोहिं जबहीं । जन्मकोटि अघ नासहिं तबहीं ॥५.४४.१॥

भगवद् गीता के अध्याय ९ का २९वां श्लोक है-

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रिय:।

ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्॥९.२९॥

-मैं सभी प्राणियों में समान हूँ। न कोई मेरा द्वेषी है, न कोई प्रिय है। परन्तु जो भक्त मुझे भजते हैं वे मुझमें हैं और मैं भी उनमें हूँ।

इसी को रामचरितमानस के अरण्यकांड में नवधाभक्ति प्रकरण में कहते है- 'सातवँ सम मोहि मय जग देखा, मोतें संत अधिक कर लेखा॥ ३६.२॥ भगवान की सभी प्राणियों समान व्यापकता, प्रियता और आत्मीयता है, पर भक्तों में विशेष दीखती है।

फिर अध्याय ९ के ही आगे का श्लोक ३० है-

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥९.३०॥

-अगर कोई दुराचारी-से-दुराचारी भी अनन्य भक्त होकर मेरा भजन करता है, उसको साधु ही माना चाहिये कारण कि उसने निश्चय बहुत अच्छी तरह लिया है।

तुलसीदास जी सुन्दरकांड के ४०.३ में लिखते हैं- ' सुमति सुमति सब कें उर रहहीं। नाथ पुरान निगम अस कहहीं॥ फिर ४४.१ में लिखते हैं-

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू। आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू ॥

सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं । जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं॥

बालकांड २९.३ में भी कहा गया है कि भगवान की दृष्टि मनुष्य के भाव पर रहती है, आचरणों पर नहीं, क्योंकि भाव बदल जाते हैं भगवान के कृपा से घटित उचित संयोग से-

'रहती न प्रभु चित चूक किए की।करत सुरति सय बार हुए की।

अगर कोई पाठक शिव पत्नी सती द्वारा सीता के विरह में दुखित वनवासी राम की परीक्षा लेनेवाले प्रसंग को पढ़ता है, तब एक बार भगवद्गीता के कृष्ण के विश्वरूप वाले अध्याय ११ के श्लोकों 11.15 की याद आ जाती है-

पश्यामि देवांस्तव देव देहे। सर्वांस्तथा भूतविशेषसङ्घान्।

ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थ- मृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥11.15॥

अब देखिये तुलसीदास के राम का विश्वरूप का वर्णन-
देखे सिव बिधि बिष्नु अनेका। अमित प्रभाउ एक तें एका॥
बंदत चरन करत प्रभु सेवा। बिबिध बेष देखे सब देवा॥
दो- सती बिधात्री इंदिरा देखीं अमित अनूप।
जेहिं जेहिं बेष अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप॥54॥
देखे जहँ जहँ रघुपति जेते। सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते॥
जीव चराचर जो संसारा। देखे सकल अनेक प्रकारा॥
पूजहिं प्रभुहि देव बहु बेषा। राम रूप दूसर नहिं देखा॥

रामचरितमानस के सभी कांडों में भगवद्गीता के विभिन्न अध्याय के श्लोकों के बिचारों को बहुत अच्छी तरह बताया है।

तुलसीदास ने रामचरितमानस में 'राम' नाम की महिमा का विस्तार से वर्णन कर 'राम'-जप को भक्तिमार्ग से राम को सगुन ब्रह्म की तरह उपासना और प्राप्त करने का मार्ग बताया। यह सहज मार्ग साधारण से साधारण व्यक्ति भी अपना कर मनुष्य जीवन सफल बना सकता है। यह नाम महिमा राम, शिव, कृष्ण, माँ दुर्गा, काली या अन्य किसी इष्ट देव की हो सकती है। ज़रूरत केवल की भक्त की एकनिष्टता और सम्पूर्ण श्रद्धा से नाम जाप करने पर है। यह उपनिषदों और भगवद्गीता में वर्णित ॐ शब्द को ब्रह्म मानने और अनन्य भाव से स्मरण से आया है। हर व्यक्ति के लिये अपने इष्ट के अति सहज नाम में लीन हो जाना आसान है और आपेक्षित 'ॐ' की तरह उसके सठीक उच्चारण की ज़रूरत नहीं है। दुनिया के कोई व्यक्ति इस 'राम' नाम का जाप कर सकते हैं।

An interesting insertion

"*Ram is found in every culture of the world. There was an ancestor of David who was the son of Hezron, he was called Ram. The son of Jerahmeel was also called Ram. A kindered of Elihu was also Ram. There are at least three to four places mentioned in Bible by the name of Ramah. There still is a town in Jersalem by the name of Ramnagar. Rama Raya is another name for Eid-ul-fitr. Ramadan is a holy month all over the globe, might be faith is different and belief is not of Ram but coincidently Ram's name is there. All this goes to tell that Vedic rishi was the master of creation and was all over, much before religion and division in the name of religion*." The Inner World, February 2019 issue of The Dhyan Foundation, New Delhi

'राम' दुनिया की हर संस्कृति में पाए जाते हैं। दाऊद का एक पूर्वज हेस्रोन का पुत्र था, उसे राम कहा जाता था। जेरहमील के पुत्र को राम भी कहा जाता था। एलीहू का एक रिश्तेदार राम भी था। बाइबिल में 'राम' के नाम का कम से कम तीन-चार स्थानों का उल्लेख है। जेरसलेम में अभी भी रामनगर नाम से एक शहर है। राम राय ईद-उल-फितर का दूसरा नाम है। रमज़ान पूरी दुनिया में एक पवित्र महीना है, हो सकता है आस्था अलग हो और आस्था राम की न हो लेकिन संयोग से राम का नाम है। यह सब बताता है कि वैदिक ऋषि सृष्टि के स्वामी थे और धर्म और धर्म के नाम पर विभाजन से बहुत पहले से ही सर्वव्यापी थे।" द इनर वर्ल्ड, द ध्यान फाउंडेशन, नई दिल्ली का फरवरी 2019 अंक

बाल कांड

राम- सगुन ब्रह्म

तुलसीदास जी के राम सगुन ब्रह्म हैं, सीता ब्रह्म की माया- उत्पति, पालन, और संहारकर्त्ता। बालकांड में ही अपने इस सत्य को तुलसीदास ने इसके मंगलाचरण से प्रारम्भ कर दिया है।

मंगलाचरण

सीता वन्दना

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्॥5॥

उत्पत्ति, पालन और संहार करने वाली, क्लेशों को हरने वाली तथा सम्पूर्ण कल्याणों को करने वाली श्री रामचन्द्रजी की प्रियतमा श्री सीताजी को मैं नमस्कार करता हूँ॥5॥

राम बन्दना

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्॥6॥

जिनकी माया के वशीभूत सम्पूर्ण विश्व, ब्रह्मादि देवता और असुर हैं, जिनकी सत्ता से रस्सी में सर्प के भ्रम की भाँति यह सारा दृश्य जगत् सत्य ही प्रतीत होता है और जिनके केवल चरण ही भवसागर से तरने की इच्छा वालों के लिए एकमात्र नौका हैं, उन समस्त कारणों से पर सबसे श्रेष्ठ राम कहलाने वाले भगवान हरि की मैं वंदना करता हूँ॥6॥

I adore Lord Hari, known by the name of Sri Rama, who is superior to and lies beyond all causes, whose Maya (illusive power) holds sway over the entire universe including gods from Brahma (the creator) downwards and demons, whose presence lends positive reality to the world of appearances- even as the false notion to a serpent is entertained with respect to a rope- and

whose feet are the only bark for those who are eager to cross the ocean of mundane existence.

सोरठा-

मूक होइ पांचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन।
जासु कृपा सो दयाल द्रवउ सकल कलिमल दहन॥

जिनकी कृपा से गूँगा बहुत सुन्दर बोलनेवाला हो जाता है और लँगड़ा-लूला दुर्गम पहाड पर चढ़ जाता है, वे कलियुग के सब पापों को जला डालनेवाला दयालु (भगवान) मुझ पर दया करें।

*

May that merciful Lord, whose grace enables the dumb to wax eloquent and a cripple to ascend an inaccessible mountain, and who burns all impurities of the Kali age, be moved to pity.

**

अन्य कांडों के मंगलाचरण में भी राम के सगुन ब्रह्म रूप का वर्णन आया है और अन्य प्रकरणों में भी, जैसे सुन्दरकांड में मंगलाचरण और अन्य जगह भी-

श्लोक:

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम्।

शान्त, सनातन, अप्रमेय (प्रमाणों से परे), निष्पाप, मोक्षरूप परमशान्ति देने वाले, ब्रह्मा, शम्भु और शेषजी से निरंतर सेवित, वेदान्त के द्वारा जानने योग्य, सर्वव्यापक, ... ॥1॥

दूसरे श्लोक में राम को 'अखिलान्तरात्मा' (आप सबके अंतरात्मा ही हैं) बताते हैं-'

फिर हनुमान को मेघनाद ब्रह्मास्त्र से बांध रावन के दरबार में लाता है, तब रावन हनुमान से पूछता है-' केहि के बल घालेहि बन खीसा ..फिर मारे निसिचर केहिं अपराधा।' हनुमान की उत्तर है-

'सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया। पाइ जासु बल बिरचति माया॥
जाकें बल बिरंचि हरि ईसा। पालत सृजत हरत दससीसा॥२०.२ख, ३क॥

विभीषण रावण को सीता को लौटा देने के संदर्भ में राम के लिये कहते हैं-
'तात राम नहिं नर भूपाला । भुवनेस्वर कालहु कर काला॥
ब्रह्म अनामय अज भगवंता । ब्यापक अजित अनादि अनंता॥३३.१॥

साधु (संत) के आचरण और सत्संगति

साधु और संत के लक्षणों का विस्तृत रूप से और अन्य कांडों के दोहों चौपाइयों बार बार दुहराते हैं और आम आदमी को उनकी तरह के आचरणों का अनुकरण करने को कहते हैं। तुलसीदास ने यह अनुभव किया जबतक तत्कालीन गुलाम देश के हिन्दूओं में जागृति लाने के लिये समाज के लोगों के आचरण की महत्ता आवश्यक होगी। सत्संगति एक मात्र रास्ता है लोगों की आसुरी प्रवृति को दैविक रास्ते पर ले जाने का। आज के भारत के समाज की भी यही ज़रूरत है। क्या दुर्भाग्य है कि आमलोग सत्संगति का अर्थ न अपने समझते हैं, फिर अपने बच्चों को कैसे बतायेंगे और लोगों का आचरण बेहतर कैसे होगा देश के तीव्र गति वैश्विक शक्ति बनाने के लिये? साथ ही क़रीब क़रीब साथ साथ तुलसीदासजी असंतों के बारे में खुल कर अपनी राय लोगों के सामने रखते हैं, जिससे आम आदमी समाज के ही इन लोगों को भी सुधारने का प्रयत्न करे।

बालकांड

साधु चरित सुभ चरित कपासू। निरस बिसद गुनमय फल जासू॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा। बंदनीय जेहिं जग जस पावा॥3॥

संतों का जीवन कपास के पेड के समान लाभदायक होता है। जैसे कपास का फल नीरस, विशद और गुणमय होता है। (नीरस होती है, संत चरित्र में भी विषयासक्ति नहीं है, इससे वह भी नीरस है; कपास उज्ज्वल होता है, वैसे ही संत का हृदय भी अज्ञान और पाप रूपी अन्धकार से रहित होता है, इसलिए वह विशद है; और कपास से बने धागे के उपयोग बने तरह तरह के

वस्त्र मनुष्य के शरीर को ढँकता है और उसे इज़्ज़त देता है। इसी प्रकार संत स्वयं दुःख सहकर दूसरों के दोषों को ढँकता है, जिसके कारण वह दुनिया में लोगों का इज़्ज़त पाता है॥3॥

The deeds of sadhus are like the cotton plant,
with its dry, stainless, many-fibered fruit,
which suffers pain to cover others' flaws
and wins praiseworthy fame in the world.

मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू॥
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा। सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा॥4॥

*

संतों का समाज आनंद और कल्याणमय है, जो जगत में चलता-फिरता तीर्थराज (प्रयाग) है। जहाँ (उस संत समाज रूपी प्रयागराज में) राम भक्ति रूपी गंगाजी की धारा है और ब्रह्मविचार का प्रचार सरस्वतीजी हैं॥4॥

*

The company of holy ones is joyful and blessed,
a king of pilgrim-sites wandering the world.
Devotion to Ram is its Ganga stream,
Its Sarasvati, the teaching of mystic knowledge.

**

दोहा :

सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग॥2॥

मनुष्य संत समाज तीर्थराज प्रयाग में जाने की तरह ही आनन्ददायक होता, वहाँ के यमुना के निर्मल जल नहाने का आनन्द संतों के प्रवचनों के ज्ञान जब मनुष्य प्रसन्न मन से सुनते और समझते हैं और फिर अत्यन्त प्रेमपूर्वक इसमें रमने लगते हैं, वे इस शरीर के रहते ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष- चारों फल पा जाते हैं॥2॥

*

Good people who listen and comprehend

with joyful hearts, fervently bathe
in that confluence of sadhus
and gain the four goals in this very life.

**

**

मति कीरति गति भूति भलाई। जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई॥
सो जानब सतसंग प्रभाऊ। लोकहुँ बेद न आन उपाऊ॥3॥

जिसने जिस समय जहाँ कहीं भी जिस किसी यत्न से बुद्धि, कीर्ति, सद्गति, ऐश्वर्य और भलाई पाई है, इन सब प्राप्तियों को सत्संग का ही प्रभाव समझना चाहिए। इनकी प्राप्ति का वेदों में और लोक में दूसरा कोई उपाय नहीं बताया गया है॥3॥

whatever they strive for and obtain–
wisdom, fame, salvation, glory, goodness–
know to but the grace of good companionship.
Worldly wisdom and Veda offer no other recourse.

बिनु सतसंग बिबेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥
सतसंगत मुद मंगल मूला। सोई फल सिधि सब साधन फूला॥4॥

सत्संग के बिना विवेक नहीं होता और भगवान राम की कृपा के बिना सत्संग सहज में नहीं मिलता। व्यक्ति की सत्संगति उसके आनंद और कल्याण की जड़ है। सत्संग से सिद्धि के फल की प्राप्ति होती है, दूसरे फूलों के समान सब साधनों से आती है॥4॥

*

Without good fellowship, there is no discernment,
and without Ram's mercy, that, too, is elusive.
Holy company is the root of joy and blessing,
Its fruit, attainment, its flower, all spiritual discipline.

**

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधात सुहाई॥
बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं॥5॥

दुष्ट भी सत्संगति पाकर सुधर जाते हैं, जैसे पारस पत्थर के स्पर्श से लोहा सुंदर मूल्यवान सोना बन जाता है। पर अगर दैवयोग से यदि कभी सज्जन कुसंगति में पड़ जाते हैं, तो वे वहाँ भी साँप की मणि जैसे साँप के विष के कारण विषैला नहीं होता, वल्कि अपने प्रकाश के सहज गुण नहीं छोड़ती, उसी प्रकार साधु व्यक्ति दुष्टों के संग में रहकर भी दूसरों का उपकार ही करते रहते हैं, दुष्टों के दुर्गुणों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।॥5॥

Scoundrels reform if they find good companions,
as a touchstone of the alchemy stone transforms base metal,
and if fate casts good folk among bad,
they maintain their own virtue, like cobra's gem.

दोहा :

बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ॥3 (क)॥

मैं संतों को प्रणाम करता हूँ, जिनके चित्त में समता है, जिनका न कोई मित्र है और न शत्रु ; जैसे व्यक्ति के हथेलियों में रखे फूले उसी हाथ से तोड़े जाने के उसके दोनों ही हाथों को समान रूप से सुगंधित करते हैं, वैसे ही संत शत्रु और मित्र दोनों का समान रूप से ही कल्याण करते हैं।॥3 (क)॥

I praise the equanimity of saintly ones,
who favour and oppose no one,
like an auspicious flower offering,
that bestows equal fragrance on both hands.

खलों की प्रवृति

तुलसीदास को जीवन में बहुत सारे दुष्ट प्रकृति के लोगों से पाला पड़ा। देश सदियों से विदेशी गुलामी में था एवं तत्जनित कमज़ोरियों के कारण भी समाज के लोगों में दुष्ट प्रकृति के लोगों की संख्या बढ़ने लगी थी। धर्म समाज में लोग भ्रान्तियाँ फैला अपना उल्लू सीधा कर रहे थे। अत: अपनी रामचरितमानस के प्रारम्भ में उनकी बंदना की जिससे उनके इस पवित्र काम को पूर्ण करनें उनकी तरफ़ से कोई बाधा न आये। इसके ज़रिये खल प्रवृति के स्वभाववालों का विस्तृत वर्णन भी किया है।

चौपाई-

पर हित हानि लाभ जिन्ह केरें। उजरें हरष बिषाद बसेरें॥1॥

दुष्टों को दूसरों की भलाई नहीं होते देखने पर अपना लाभ लगता है और उनको दूसरों का नुक़सान होने पर हर्ष और दूसरों को अच्छे जीवन जीते देख विना कारण ही अत्यन्त दु:ख होता है॥1॥

Next I sincerely praise the legion of scoundrels,
who, without cause return bad for good,
who find their profit in others' loss,
rejoice in their ruin, and mope over their success.

**

पर अकाजु लगि तनु परिहरहीं। जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं॥

जैसे ओले खेती का नाश करके आप भी गल जाते हैं, वैसे ही दुष्ट दूसरों का काम बिगाड़ने के लिए अपने मृत्यु की परवाह नहीं करते हैं।

They give up their lives for others' undoing,
like hailstones that melt after wrecking the crop.

**

बचन बज्र जेहि सदा पिआरा। सहस नयन पर दोष निहारा॥6॥

जिनको वज्र के समान कठोर वचन ही हरदम प्यारा लगता है और जो हजार आँखों से दूसरों के दोषों को देखते हैं॥6॥

---

cherishes the thunderbolt of cruel words,
and peers thousand-eyed at others' flaws.

**

दोहा :

उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति।

दुष्टों की यह रीति है कि वे उदासीन, शत्रु अथवा मित्र, किसी का भी हित सुनकर जलते हैं।॥4॥

If they hear of anyone's good fortune–
neutral, foe, or friend- they flare up.
Aware of this, I join my hand in homage.
and lovingly entreat them.

**

संत-असंत

इस अंश में तुलसीदास जी ने संतों एवं असंतों के आचरण का अन्तर उजागर किया है और संतों की संगति को बाद में सबरी को नवधा भक्ति में नौ में एक स्थान दिया है।

बंदउँ संत असज्जन चरना। दुःखप्रद उभय बीच कछु बरना॥
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं। मिलत एक दुख दारुन देहीं॥2॥

मैं संत और असंत दोनों के चरणों की वन्दना करता हूँ, दोनों ही दुःख देने वाले हैं, परन्तु उनमें कुछ अन्तर कहा गया है। वह अंतर यह है कि एक संत तो बिछुड़ते समय प्राण हर लेते हैं और दूसरे असंत मिलते हैं, तब दारुण दुःख देते हैं। अर्थात् संतों का बिछुड़ना मरने के समान दुःखदायी होता है और असंतों का मिलना।॥2॥

I reverence the feet of saints and scoundrels.

Both cause sorrow, but with difference:

separation from one steals away soul

and mere association with the other gives bitter pain.

**

उपजहिं एक संग जग माहीं। जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं॥
सुधा सुरा सम साधु असाधू। जनक एक जग जलधि अगाधू॥3॥

दोनों- संत और असंत जगत में एक साथ पैदा होते हैं, पर एक साथ पैदा होने वाले कमल और जोंक की तरह ही उनके गुण अलग-अलग होते हैं। कमल दर्शन और स्पर्श से सुख देता है, किन्तु जोंक शरीर का स्पर्श पाते ही रक्त चूसने लगती है। साधु अमृत के समान मृत्यु रूपी संसार से उबारने वाला और असाधु मदिरा के समान मोह, प्रमाद और

जड़ता उत्पन्न करने वाला होते हैं, दोनों को उत्पन्न करने वाला संसार एक ही है। (शास्त्रों में समुद्रमन्थन से ही अमृत और मदिरा दोनों की उत्पत्ति बताई गई है।)॥3॥

Though arisen together in this world,
they differ in nature lotus and leech.
Like nectar and liquor, the holy and the wicked
are born of the world's one fathomless sea.

**

भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुजस अपलोक बिभूती॥

भले और बुरे अपनी-अपनी करनी के अनुसार सुंदर यश और अपयश रूपि सम्पत्ति पाते हैं।

By their own kind or unkind acts
each garners the prize of fame or disgrace.

दोहा

भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु।
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु॥5॥

भला भलाई ही ग्रहण करता है और नीच नीचता को ही ग्रहण किए रहता है। अमृत की सराहना अमर करने में होती है और विष की मारने में॥5॥

The good accrue goodness,
the wicked, wickedness,
as nectar is lauded for immortality
and poison for dealing death.

दोहा :

जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार॥6॥

विधाता ने इस जड़-चेतन विश्व को गुण-दोषमय रचा है, किन्तु संत रूपी हंस दोष रूपी जल को छोड़कर गुण रूपी दूध को ही ग्रहण करते हैं॥6॥

The creator has fabricated a world
full of dull and sentient, good and evil.
Saintly souls, like holy hamsas, sip virtue's milk
and discard the water of sin.

सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं। दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं॥
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू। मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू॥2॥

भगवान के भक्त जैसे उस चूक को सुधार लेते हैं और दुःख-दोषों को मिटाकर निर्मल यश देते हैं, वैसे ही दुष्ट भी कभी-कभी उत्तम संग पाकर भलाई करते हैं, परन्तु उनका कभी भंग न होने वाला मलिन स्वभाव नहीं मिटता॥2॥

Though Hari's devotees amend such failings,
and replace sorrow and sin with pure renown,
scoundrels May act well in good company,
yet their tainted nature endures unchanged.

**

हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहुँ बेद बिदित सब काहू॥4॥

बुरे संग से हानि और अच्छे संग से लाभ होता है, यह बात लोक और वेद में है और सभी लोग इसको जानते हैं॥4॥

Wicked company is loss, good company gain–

so Veda and worldly wisdom affirm, and everyone knows.

गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा। कीचहिं मिलइ नीच जल संगा॥
साधु असाधु सदन सुक सारीं। सुमिरहिं राम देहिं गनि गारीं॥5॥

पवन के संग से धूल आकाश पर चढ़ जाती है और वही नीच (नीचे की ओर बहने वाले) जल के संग से कीचड़ में मिल जाती है। साधु के घर के तोता-मैना राम-राम सुमिरते हैं और असाधु के घर के तोता-मैना गिन-गिनकर गालियाँ देते हैं॥5॥

Dust rises to the sky in contact with wind

but turns to mud when mixed with earthly water.

Housed among good people or bad, parrots and mynahs

learn to Ram's name or countless curses.

**

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि॥7(ग)॥

जगत में जितने जड़ और चेतन जीव हैं, सबको राममय जानकर मैं उन सबके चरणकमलों की सदा दोनों हाथ जोड़कर वन्दना करता हूँ॥7 (ग)॥

Knowing all souls in creation, inert or sentient,
to be imbued with Ram,
I forever bow at their blessed feet,

my palms joined in reverence.

चौपाई :

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ बासी॥
सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥1॥

चौरासी लाख योनियों में चार प्रकार के (स्वेदज, अण्डज, उद्भिज्ज, जरायुज) जीव जल, पृथ्वी और आकाश में रहते हैं, उन सबसे भरे हुए इस सारे जगत को श्री सीताराममय जानकर मैं दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ॥1॥

In four orders, eighty-four hundred thousand
forms of life inhabit waters, earth, and sky,
Knowing the whole world to be imbued with Sita-Ram,
I pay homage, hands joined in supplication.

श्री राम नाम की महिमा

तुलसीदास जी राम के नाम को राम से भी बड़ा बताया है। वेदों के ॐ की तरह 'राम' शब्द को मंत्र की तरह बार बार लगातार एकनिष्ठा से जाप करने से व्यक्ति ब्रह्म राम को पा ब्रह्म बन जाता है। यहाँ राम नाम को सगुन एवं अगुन राम से ऊँचा स्थान दिया है।
दोहा 18 के बाद

चौपाई :

बंदउँ नाम राम रघुबर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को॥

जान आदिकबि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू॥

मैं श्री रघुनाथजी के नाम 'राम' की वंदना करता हूँ, जो कृशानु (अग्नि), भानु (सूर्य) और हिमकर (चन्द्रमा) का हेतु अर्थात् 'र' 'आ' और 'म' रूप से बीज है।

आदिकवि श्री वाल्मीकिजी रामनाम के प्रताप को जानते हैं, जो उल्टा नाम ('मरा', 'मरा') जपकर पवित्र हो गए।

दोहा :

बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास।
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास॥19॥

श्री रघुनाथजी की भक्ति वर्षा ऋतु है, तुलसीदासजी कहते हैं कि उत्तम सेवकगण धान हैं और 'राम' नाम के दो सुंदर अक्षर सावन-भादो के महीने हैं॥19॥

Reverence for Ram is the rain, says Tulsi,
his servants are the crop,
and the two lovely letters of Ram’s name
are the months of Savan and Bhadon.

चौपाई :

आखर मधुर मनोहर दोऊ। बरन बिलोचन जन जिय जोऊ॥
ससुमिरत सुलभ सुखद सब काहू। लोक लाहु परलोक निबाहू॥1॥

दोनों अक्षर मधुर और मनोहर हैं, जो वर्णमाला रूपी शरीर के नेत्र हैं, भक्तों के जीवन हैं तथा स्मरण करने में सबके लिए सुलभ और सुख देने वाले हैं और जो इस लोक में लाभ और परलोक में निर्वाह करते हैं (अर्थात् भगवान के दिव्य धाम में दिव्य देह से सदा भगवत्सेवा में नियुक्त रखते हैं।)॥1॥

Two sweet and lilting syllables, they are
the alphabet's eyes and life itself to his people.
Their remembrance gives bliss, is open to all,
And yields profit in this world, salvation beyond.

कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके। राम लखन सम प्रिय तुलसी के॥
बरनत बरन प्रीति बिलगाती। ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती॥2॥

ये कहने, सुनने और स्मरण करने में बहुत ही अच्छे (सुंदर और मधुर) हैं, तुलसीदास को तो श्री राम-लक्ष्मण के समान प्यारे हैं। इनका ('र' और 'म' का) अलग-अलग वर्णन करने में प्रीति बिलगाती है, परन्तु हैं ये जीव और ब्रह्म के समान स्वभाव से ही साथ रहने वाले (सदा एक रूप और एक रस),॥2॥

Exceedingly good to utter, hear, or recall,

they are as dear to Tulsi as Ram and Lakshman.

To enunciate these syllables severs their loving bond,

yet they are as innately one as God and the soul.

**

दोहा :

एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरननि पर जोउ।
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोउ॥20॥

तुलसीदासजी कहते हैं- श्री रघुनाथजी के नाम के दोनों अक्षर बड़ी शोभा देते हैं, जिनमें से एक (रकार) छत्ररूप (रेफ र्) से और दूसरा (मकार) मुकुटमणि (अनुस्वार) रूप से सब अक्षरों के ऊपर है॥20॥

One a parasol, the other a crest-jewel—-

above all other characters,
Tulsi says, the two letters
of the Raghu lord's name reign supreme.

**

चौपाई :

समुझत सरिस नाम अरु नामी। प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी॥
नाम रूप दुइ ईस उपाधी। अकथ अनादि सुसामुझि साधी॥1॥

समझने में नाम और नामी दोनों एक से हैं, किन्तु दोनों में परस्पर स्वामी और सेवक के समान प्रीति है (अर्थात् नाम और नामी में पूर्ण एकता होने पर भी जैसे स्वामी के पीछे सेवक चलता है, उसी प्रकार नाम के पीछे नामी चलते हैं। प्रभु श्री रामजी अपने 'राम' नाम का ही अनुगमन करते हैं (नाम लेते ही वहाँ आ जाते हैं)। नाम और रूप दोनों ईश्वर की उपाधि हैं, ये (भगवान के नाम और रूप) दोनों अनिर्वचनीय हैं, अनादि हैं और सुंदर (शुद्ध भक्तियुक्त) बुद्धि से ही इनका (दिव्य अविनाशी) स्वरूप जानने में आता है॥1॥

In understanding, name and named alike,
yet their intimate bond is that of lord and follower.
Name and form are dual attributes of God,
indescribable and eternal, as wisdom discerns.

**

को बड़ छोट कहत अपराधू। सुनि गुन भेदु समुझिहहिं साधू॥
देखिअहिं रूप नाम आधीना। रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना॥2॥

इन (नाम और रूप) में कौन बड़ा है, कौन छोटा, यह कहना तो अपराध है। इनके गुणों का तारतम्य (कमी-बेशी) सुनकर साधु पुरुष स्वयं ही समझ लेंगे। रूप नाम के अधीन देखे जाते हैं, नाम के बिना रूप का ज्ञान नहीं हो सकता॥2॥

To call one greater, one lesser, is wrong,
yet the holy hear and know their distinct traits.
Clearly, form depends on name,
for it cannot be known in name's absence.

**

रूप बिसेष नाम बिनु जानें। करतल गत न परहिं पहिचानें॥
सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखें। आवत हृदयँ सनेह बिसेषें॥3॥

कोई सा विशेष रूप बिना उसका नाम जाने हथेली पर रखा हुआ भी पहचाना नहीं जा सकता और रूप के बिना देखे भी नाम का स्मरण किया जाए तो विशेष प्रेम के साथ वह रूप हृदय में आ जाता है॥3॥

An object of unknown name remains
unrecognised, though held in one's hand.
But recall the name of even an unseen form,
and it enters the heart with distinct feeling.

**

नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परति बखानी॥
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी॥4॥

नाम और रूप की गति की कहानी (विशेषता की कथा) अकथनीय है। वह समझने में सुखदायक है, परन्तु उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। निर्गुण और सगुण के बीच में नाम सुंदर साक्षी है और दोनों का यथार्थ ज्ञान कराने वाला चतुर दुभाषिया है॥4॥

This untellable tale of name and form
delights contemplation but defies description.
Bearing witness between formless and formed,
name is the clever translator who enlightens both.

**

राम नाम मनिदीप धरू जीह देहरीं द्वार।
तुलसी भीतर बाहरहुँ जौं चाहसि उजियार॥21॥

तुलसीदासजी कहते हैं, यदि तू भीतर और बाहर दोनों ओर उजाला चाहता है, तो मुख रूपी द्वार की जीभ रूपी देहली पर रामनाम रूपी मणि-दीपक को रख॥21॥

Set the crystal lamp of Ram's name
on the threshold of your tongue,
says Tulsi, if you desire illumination
both within and without.

**

चौपाई :

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी। बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी॥
ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा॥1॥

ब्रह्मा के बनाए हुए इस प्रपंच (दृश्य जगत) से भलीभाँति छूटे हुए वैराग्यवान् मुक्त योगी पुरुष इस नाम को ही जीभ से जपते हुए (तत्व ज्ञान रूपी दिन में) जागते हैं और नाम तथा रूप से रहित अनुपम, अनिर्वचनीय, अनामय ब्रह्मसुख का अनुभव करते हैं॥1॥

By repeating the name, yogis awaken,
free of desire, from Brahma's fivefold dream.
to experience divine bliss –incomparable,
unutterable, pristine, nameless, and formless.

**

जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ। नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ॥
साधक नाम जपहिं लय लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ॥2॥

जो परमात्मा के गूढ़ रहस्य को (यथार्थ महिमा को) जानना चाहते हैं, वे (जिज्ञासु) भी नाम को जीभ से जपकर उसे जान लेते हैं। (लौकिक सिद्धियों के चाहने वाले अर्थार्थी) साधक लौ लगाकर नाम का जप करते हैं और अणिमादि (आठों) सिद्धियों को पाकर सिद्ध हो जाते हैं॥2॥

Those yearning to fathom profound mysteries
gain wisdom with the name on their tongues.
Aspirants who ardently utter the name
obtain success and occult powers,

**

नीचे दिये गये तीनों चौपाइयाँ भगवद्गीता के अध्याय ७ के श्लोक १६-१८ आधारित हैं-

जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी॥
राम भगत जग चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा॥3॥

(संकट से घबड़ाए हुए) आर्त भक्त नाम जप करते हैं, तो उनके बड़े भारी बुरे-बुरे संकट मिट जाते हैं और वे सुखी हो जाते हैं। जगत में चार प्रकार के-1- अर्थार्थी-धनादि की चाह

से भजने वाले, 2-आर्त संकट की निवृत्ति के लिए भजने वाले, 3-जिज्ञासु-भगवान को जानने की इच्छा से भजने वाले, 4-ज्ञानी-भगवान को तत्व से जानकर स्वाभाविक ही प्रेम से भजने वाले, रामभक्त हैं और चारों ही पुण्यात्मा, पापरहित और उदार हैं॥3॥

and when hard-hit folk say the name,
their afflictions cease and they become glad.
The world holds four kinds of Ram devotees,
all benevolent, sinless, magnanimous.

**

चहू चतुर कहुँ नाम अधारा। ग्यानी प्रभुहि बिसेषि पिआरा॥
चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ॥4॥

चारों ही चतुर भक्तों को नाम का ही आधार है, इनमें ज्ञानी भक्त प्रभु को विशेष रूप से प्रिय हैं। यों तो चारों युगों में और चारों ही वेदों में नाम का प्रभाव है, परन्तु कलियुग में विशेष रूप से है। इसमें तो नाम को छोड़कर दूसरा कोई उपाय ही नहीं है॥4॥

These four sorts of adepts depend on his name,
yet the truly wise are especially dear to the Lord.
The name's power fills the four actions and Vedas,
but in Kali age, there is no other recourse.

**

दोहा :

सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन।
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद तिन्हहुँ किए मन मीन॥22॥

जो सब प्रकार की (भोग और मोक्ष की भी) कामनाओं से रहित और श्री रामभक्ति के रस में लीन हैं, उन्होंने भी नाम के सुंदर प्रेम रूपी अमृत के सरोवर में अपने मन को मछली बना रखा है अर्थात् वे नाम रूपी सुधा का निरंतर आस्वादन करते रहते हैं, क्षणभर भी उससे अलग होना नहीं चाहते॥22॥

Those who are altogether free from desire
And rapt in Ram's adoration,
turn their minds into fish
in the love- nectar lake of his name.

सगुन-अगुन

श्रीमद्भागवत् के ब्रह्म के तीन प्रकार से वर्णित किये गये हैं- ब्रह्म (निर्गुण-निराकार), परमात्मा (सगुण-निराकार), भगवान(सगुण-साकार)। तीनों एक ही हैं। पर सगुण के अन्तर्गत ब्रह्म, परमात्मा, और भगवान तीनों आ जाते हैं। त्रेतायुग के इतिहास वाल्मीकीय रामायण के राम एवं फिर द्वापर के महर्षि व्यासरचित महाभारत के कृष्ण सगुण ब्रह्म के रूप माने गये। सगुण ब्रह्म और निर्गुण ब्रह्म का विषय सबसे प्राचीनतम उपनिषद् ईसोपनिसद् में वर्णित हुआ सम्भूति-असम्भूति शब्दों से श्लोक 12, 13, और 14 में। पर तुलसीदास ने राम के नाम को सगुण और निर्गुण ब्रह्म से भी ऊपर बताया।

चौपाई :

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा॥
मोरें मत बड़ नामु दुहू तें। किए जेहिं जुग निज बस निज बूतें॥1॥

निर्गुण और सगुण ब्रह्म के दो स्वरूप हैं। ये दोनों ही अकथनीय, अथाह, अनादि और अनुपम हैं। मेरी सम्मति में नाम इन दोनों से बड़ा है, जिसने अपने बल से दोनों को अपने वश में कर रखा है॥1॥

God's dual aspects are unqualified and qualified,

inexpressible, unfathomable, primal, incomparable.
Yet in my view, the name surpasses both,
for by its innate power, the name surpasses both.
**

प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की। कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की॥
एकु दारुगत देखिअ एकू। पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू॥2॥

सज्जन व्यक्ति इस बात को मुझ दास की धृष्टता या कल्पना न समझें, मैं अपने मन के विश्वास, प्रेम और रुचि की बात कहता हूँ। निर्गुण ब्रह्म का ज्ञान उस अप्रकट अग्नि के समान है, जो लकड़ी के अंदर है परन्तु दिखती नहीं है और सगुण ब्रह्म उस प्रकट अग्नि के समान है, जो प्रत्यक्ष दिखलाई देती है।
Good people should not think this servant overbold,
for I speak from heartfelt personal conviction.
Latent in wood or visibly ignited,
fire is like the dual concepts of brahm,
**

उभय अगम जुग सुगम नाम तें। कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें॥
ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी। सत चेतन घन आनँद रासी॥3॥

निर्गुण और सगुण ब्रह्म दोनों ही जानने में सुगम नहीं हैं, लेकिन नाम जप से दोनों को आसानी से जाना जा सकता हैं, इसी कारण मैंने, राम नाम को निर्गुण ब्रह्म और सगुण ब्रह्म राम से बड़ा कहा है, जबकि ब्रह्म एक ही है जो कि व्यापक, अविनाशी, सत्य, चेतन और आनंद की खान है।

both elusive, yet both accessible by the name.

So I declare the name greater than Brahman or Ram.
Brahma is one, pervasive and indestructible,
a dense mass of consciousness and bliss.
**

अस प्रभु हृदयँ अछत अबिकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी॥
नाम निरूपन नाम जतन तें। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें॥4॥

ऐसे विकाररहित प्रभु के हृदय में रहते भी जगत के सब जीव दीन और दुःखी हैं। नाम का निरूपण करके (नाम के यथार्थ स्वरूप, महिमा, रहस्य और प्रभाव को जानकर) नाम का जतन करने से (श्रद्धापूर्वक नाम जप रूपी साधन करने से) वही ब्रह्म ऐसे प्रकट हो जाता है, जैसे रत्न के जानने से उसका मूल्य॥4॥

Yet even with flawless Lord in their hearts,
all worldly creatures suffer miserably.
But if they recognise and repeat the name,
that One is revealed, like a gem's true worth.
**

दोहा :

निरगुन तें एहि भाँति बड़ नाम प्रभाउ अपार।
कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार॥23॥

इस प्रकार निर्गुण से नाम का प्रभाव अत्यंत बड़ा है। अब अपने विचार के अनुसार कहता हूँ, कि नाम (सगुण) राम से भी बड़ा है॥23॥

And so, attribute-less God is surpassed
by the name's infinite majesty.

Yet in my own understanding, I call the name
greater even than Ram.

चौपाई :

राम भगत हित नर तनु धारी। सहि संकट किए साधु सुखारी॥
नामु सप्रेम जपत अनयासा। भगत होहिं मुद मंगल बासा॥1॥

श्री रामचन्द्रजी ने भक्तों के हित के लिए मनुष्य शरीर धारण करके स्वयं कष्ट सहकर साधुओं को सुखी किया, परन्तु भक्तगण प्रेम के साथ नाम का जप करते हुए सहज ही में आनन्द और कल्याण के घर हो जाते हैं॥1॥।

Ram took human form for his followers' sake,
and by suffering hardships, pleased the holy.
But, spontaneously repeating his name with love,
devotees become abodes of bliss and blessing.

**

राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी॥
रिषि हित राम सुकेतुसुता की। सहित सेन सुत कीन्हि बिबाकी॥2॥
सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा॥
भंजेउ राम आपु भव चापू। भव भय भंजन नाम प्रतापू॥3॥

श्री रामजी ने एक तपस्वी की स्त्री (अहिल्या) को ही तारा, परन्तु नाम ने करोड़ों दुष्टों की बिगड़ी बुद्धि को सुधार दिया। श्री रामजी ने ऋषि विश्वामिश्र के हित के लिए एक सुकेतु यक्ष की कन्या ताड़का की सेना और पुत्र (सुबाहु) सहित समाप्ति की, परन्तु नाम अपने भक्तों के दोष, दुःख और दुराशाओं का इस तरह नाश कर देता है जैसे सूर्य रात्रि का। श्री रामजी ने तो स्वयं शिवजी के धनुष को तोड़ा, परन्तु नाम का प्रताप ही संसार के सब भयों का नाश करने वाला है॥2-3॥

Lord Ram liberated one ascetic women,

but his name reforms millions of wicked minds.
For a seer's sake, Ram slew Suketu's daughter,
with her minions and son.
But along with sin and sorrow, a devotee's despair
is destroyed by the name as night by the sun.
Ram himself broke Bhava's bow,
but the power of his name crushes rebirth's dread.

**

दंडक बन प्रभु कीन्ह सुहावन। जन मन अमित नाम किए पावन॥
निसिचर निकर दले रघुनंदन। नामु सकल कलि कलुष निकंदन॥4॥

प्रभु श्री रामजी ने (भयानक) दण्डक वन को सुहावना बनाया, परन्तु नाम ने असंख्य मनुष्यों के मनों को पवित्र कर दिया। श्री रघुनाथजी ने राक्षसों के समूह को मारा, परन्तु नाम तो कलियुग के सारे पापों की जड़ उखाड़ने वाला है॥4॥

The Lord tamed the Dandak wilderness,

but his name has purified countless hearts.

The Raghu prince slew an army of night- stalkers,

but his name uproots every sin of this dark age.

**

दोहा :

सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ।
नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ॥24॥

श्री रघुनाथजी ने तो शबरी, जटायु आदि उत्तम सेवकों को ही मुक्ति दी, परन्तु नाम ने अगनित दुष्टों का उद्धार किया। नाम के गुणों की कथा वेदों में प्रसिद्ध है॥24॥

The good servants Shabari and Jatayu were given salvation
by the Raghu lord,
but his name has liberated countless sinners,
as is famously sung in the Veda.
**

राम भालु कपि कटुक बटोरा। सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा॥
नामु लेत भवसिन्धु सुखाहीं। करहु बिचारु सुजन मन माहीं॥2॥

श्री रामजी ने तो भालू और बंदरों की सेना बटोरी और समुद्र पर पुल बाँधने के लिए थोड़ा परिश्रम नहीं किया, परन्तु नाम लेते ही संसार समुद्र सूख जाता है। सज्जनगण! मन में विचार कीजिए कि दोनों में कौन बड़ा है॥2॥

Ram assembled an army of monkey's and bears
and laboured long to cross sea,
but saying his name dries up the ocean of rebirth.
Ponder this in your hearts, good people!
**

सेवक सुमिरत नामु सप्रीती। बिनु श्रम प्रबल मोह दलु जीती॥
फिरत सनेहँ मगन सुख अपनें। नाम प्रसाद सोच नहिं सपनें॥4॥

सेवक (भक्त) प्रेमपूर्वक नाम के स्मरण मात्र से बिना परिश्रम मोह की प्रबल सेना को जीतकर प्रेम में मग्न हुए अपने ही सुख में विचरते हैं, नाम के प्रसाद से उन्हें सपने में भी कोई चिन्ता नहीं सताती॥3-4॥

Ram killed Ravan and his clan in battle
and returned with Sita to his city.
Ram became king, Avadh his capital,
and gods and sages sing their praises.3
But his servants, just recalling his name
with love, easily rout delusion's legions
and turn inward with blissful absorption,
ever free of care, by the name's grace.4

**

दोहा :

ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि।
रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि॥25॥

इस प्रकार नाम (निर्गुण) ब्रह्म और (सगुण) राम दोनों से बड़ा है। यह वरदान देने वालों को भी वर देने वाला है। श्री शिवजी ने अपने हृदय में यह जानकर ही सौ करोड़ राम चरित्र में से इस 'राम' नाम को (साररूप से चुनकर) ग्रहण किया है॥25॥

Surpassing both brahma and Ram, the name
grants boons even to boon givers.
And so, from Ram's thousand millions exploits
Shiva wisely selected it.

**

नारदजी ने नाम के प्रताप को जाना है। हरि सारे संसार को प्यारे हैं, (हरि को हर प्यारे हैं) और आप (श्री नारदजी) हरि और हर दोनों को प्रिय हैं। नाम के जपने से प्रभु ने कृपा की, जिससे प्रह्लाद, भक्त शिरोमणि हो गए॥2॥

दोहा :

नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु॥26॥

कलियुग में राम का नाम कल्पतरु (मन चाहा पदार्थ देने वाला) और कल्याण का निवास (मुक्ति का घर) है, जिसको स्मरण करने से भाँग सा (निकृष्ट) तुलसीदास तुलसी के समान (पवित्र) हो गया॥26॥

Ram's name is a wish-granting tree
and an abode of blessing in this dark age.
Recalling it, Tulsidas was transformed from mere hemp
into tulsi, purest herb.

**

चौपाई :

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका। भए नाम जपि जीव बिसोका॥
बेद पुरान संत मत एहू। सकल सुकृत फल राम सनेहू॥**1॥**

(केवल कलियुग की ही बात नहीं है,) चारों युगों में, तीनों काल में और तीनों लोकों में नाम को जपकर जीव शोकरहित हुए हैं। वेद, पुराण और संतों का मत यही है कि समस्त पुण्यों का फल श्री रामजी में (या राम नाम में) प्रेम होना है॥1॥

In four ages, three times, and triple worlds,
Beings are freed of sorrow by repeating the name.
Thus Veda, puranas, and saints assert–
the fruit of all good works is love for Ram.

**

नाम कामतरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जग जाला॥
राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता॥3॥

ऐसे कराल (कलियुग के) काल में तो नाम ही कल्पवृक्ष है, जो स्मरण करते ही संसार के सब जंजालों को नाश कर देने वाला है। कलियुग में यह राम नाम मनोवांछित फल देने वाला है, परलोक का परम हितैषी और इस लोक का माता-पिता है (अर्थात परलोक में भगवान का परमधाम देता है और इस लोक में माता-पिता के समान सब प्रकार से पालन और रक्षण करता है।)॥3॥

The name is the wishing tree of this awful time,
its mere remembrance rips the world's snares.
In the dark age, Ram's name grants every wish,
giving salvation in the next world, parental succour in this.
**

नहिं कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू॥
कालनेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू॥4॥

कलियुग में न कर्म है, न भक्ति है और न ज्ञान ही है, राम नाम ही एक आधार है। कपट की खान कलियुग रूपी कालनेमि के (मारने के) लिए राम नाम ही बुद्धिमान और समर्थ श्री हनुमान्‌जी हैं॥4॥

The Kali has no good deeds, devotion, or discernment,
and the name of Ram is our sole support,
Like Kalnemi, Kali is a mass of duplicity,
but the name is quick-witted and able Hanuman.
**

निरगुन सगुन

(शिव का गिरि सुता पार्वती को सगुन निर्गुन ब्रह्म को समझाना)

चौपाई :

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा॥
अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई॥1॥

सगुण और निर्गुण में कुछ भी भेद नहीं है- मुनि, पुराण, पण्डित और वेद सभी ऐसा कहते हैं। जो निर्गुण, अरूप (निराकार), अलख (अव्यक्त) और अजन्मा है, वही भक्तों के प्रेमवश सगुण हो जाता है॥1॥

There is no difference in God, with or without attributes–
so sages, puranas, scholars, and Veda all declare.
That One, without attributes and form, invisible and unborn,
acquires qualities by the power of devotees' love.

**

जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें। जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसें॥
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा। तेहि किमि कहिअ बिमोह प्रसंगा॥2॥

जो निर्गुण है वही सगुण कैसे है? जैसे जल और ओले में भेद नहीं। (दोनों जल ही हैं, ऐसे ही निर्गुण और सगुण एक ही हैं।) जिसका नाम भ्रम रूपी अंधकार के मिटाने के लिए सूर्य है, उसके लिए मोह का प्रसंग भी कैसे कहा जा सकता है?॥2॥

How can one without qualities also have them?
It is like the non-difference of water and ice.
He whose name is a sun to the darkness of delusion,
how he can he be linked to ignorance.

**

राम सच्चिदानंद दिनेसा। नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा॥
सहज प्रकासरूप भगवाना। नहिं तहँ पुनि बिग्यान बिहाना॥3॥

रामचन्द्रजी सच्चिदानन्दस्वरूप सूर्य हैं। वहाँ मोह रूपी रात्रि का लवलेश भी नहीं है। वे स्वभाव से ही प्रकाश रूप और (षडैश्वर्ययुक्त) भगवान है, वहाँ तो विज्ञान रूपी प्रातःकाल भी नहीं होता (अज्ञान रूपी रात्रि हो तब तो विज्ञान रूपी प्रातःकाल हो, भगवान तो नित्य ज्ञान स्वरूप हैं।)॥3॥

Ram is the sun of being, consciousness, and bliss,
in whom there is no trace of delusion's night.
He is innate effulgence, supreme Lord,
in whom knowledge knowledge need never dawn.

**

हरष बिषाद ग्यान अग्याना। जीव धर्म अहमिति अभिमाना॥
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना। परमानंद परेस पुराना॥4॥

हर्ष, शोक, ज्ञान, अज्ञान, अहंता और अभिमान- ये सब जीव के धर्म हैं। श्री रामचन्द्रजी तो व्यापक ब्रह्म, परमानन्दस्वरूप, परात्पर प्रभु और पुराण पुरुष हैं। इस बात को सारा जगत जानता है॥4॥

Happiness, misery, knowledge, ignorance,
egoism, and pride are the lot of souls.
But the world knows Ram as all- pervading God,
ultimate bliss, almighty Lord, ancient one.

**

दोहा :

पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि प्रगट परावर नाथ।
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिवँ नायउ माथ॥116॥

(पुराण) पुरुष प्रसिद्ध हैं, प्रकाश के भंडार हैं, सब रूपों में प्रकट हैं, जीव, माया और जगत सबके स्वामी हैं, वे ही रघुकुल मणि श्री रामचन्द्रजी मेरे स्वामी हैं- ऐसा कहकर शिवजी ने उनको मस्तक नवाया॥116॥

The celebrated primordial person, source of light,
the manifest, supreme Lord–
that jewel of the Raghus is my master."
Saying this, Shiva bowed his head.

**

चौपाई :

निज भ्रम नहिं समुझहिं अग्यानी। प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी॥
जथा गगन घन पटल निहारी। झाँपेउ भानु कहहिं कुबिचारी॥1॥

अज्ञानी मनुष्य अपने भ्रम को तो समझते नहीं और वे मूर्ख प्रभु श्री रामचन्द्रजी पर उसका आरोप करते हैं, जैसे आकाश में बादलों का परदा देखकर कुविचारी (अज्ञानी) लोग कहते हैं कि बादलों ने सूर्य को ढँक लिया॥1॥

"Ignorant, yet unaware of his error,
a dullard projects illusion on the Lord,
just as a fool will see the sky covered in clouds
and say the sun is hiding itself.

**

चितव जो लोचन अंगुलि लाएँ। प्रगट जुगल ससि तेहि के भाएँ॥
उमा राम बिषइक अस मोहा। नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा॥2॥

जो मनुष्य आँख में अँगुली लगाकर देखता है, उसके लिए तो दो चन्द्रमा प्रकट (प्रत्यक्ष) हैं। हे पार्वती! श्री रामचन्द्रजी के विषय में इस प्रकार मोह की कल्पना करना वैसा ही है, जैसा आकाश में अंधकार, धुएँ और धूल का सोहना (दिखना)। (आकाश जैसे निर्मल और निर्लेप है, उसको कोई मलिन या स्पर्श नहीं कर सकता, इसी प्रकार भगवान श्री रामचन्द्रजी नित्य निर्मल और निर्लेप हैं।) ॥2॥

or one who pokes a finger in his eyes
will suppose two moons have appeared.
Associating such delusion with Ram, Uma,
is like attributing darkness, smoke, or dust to the sky.
**

बिषय करन सुर जीव समेता। सकल एक तें एक सचेता॥
सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवधपति सोई॥3॥

विषय, इन्द्रियाँ, इन्द्रियों के देवता और जीवात्मा- ये सब एक की सहायता से एक चेतन होते हैं। (अर्थात विषयों का प्रकाश इन्द्रियों से, इन्द्रियों का इन्द्रियों के देवताओं से और इन्द्रिय देवताओं का चेतन जीवात्मा से प्रकाश होता है।) इन सबका जो परम प्रकाशक है (अर्थात जिससे इन सबका प्रकाश होता है), वही अनादि ब्रह्म अयोध्या नरेश श्री रामचन्द्रजी हैं॥3॥

Sense objects, the senses, their deities, and sous
are successively and dependently conscious,
but the supreme illuminator of them all
is Ram, the eternal, that very king of Avadh.

**

जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीस ग्यान गुन धामू॥
जासु सत्यता तें जड़ माया। भास सत्य इव मोह सहाया॥4॥

यह जगत प्रकाश्य है और श्री रामचन्द्रजी इसके प्रकाशक हैं। वे माया के स्वामी और ज्ञान तथा गुणों के धाम हैं। जिनकी सत्ता से, मोह की सहायता पाकर जड़ माया भी सत्य सी भासित होती है॥4॥

Light-source by whom the world is lit, Ram
is master of maya, abode of wisdom and virtue,
through whose existence dull, inert maya
aided by ignorance, glimmers like reality.

दोहा :

रजत सीप महुँ भास जिमि जथा भानु कर बारि।
जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ भ्रम न सकइ कोउ टारि॥117॥

जैसे सीप में चाँदी की और सूर्य की किरणों में पानी की (बिना हुए भी) प्रतीति होती है। यद्यपि यह प्रतीति तीनों कालों में झूठ है, तथापि इस भ्रम को कोई हटा नहीं सकता॥117॥

Just as silver shimmers in an oyster shell,
and mirage- water in the sun's rays,
and, though forever false, such illusions
cannot be dispelled by anyone–

**

चौपाई :

एहि बिधि जग हरि आश्रित रहई। जदपि असत्य देत दुख अहई॥
जौं सपनें सिर काटै कोई। बिनु जागें न दूरि दुख होई॥1॥

इसी तरह यह संसार भगवान के आश्रित रहता है। यद्यपि यह असत्य है, तो भी दुःख तो देता ही है, जिस तरह स्वप्न में कोई सिर काट ले तो बिना जागे वह दुःख दूर नहीं होता॥1॥

so the universe depends on Lord Hari,
and, though false, causes suffering.
If someone beheads himself in a dream,
his anguish will not end unless he wakes up.

**

जासु कृपाँ अस भ्रम मिटि जाई। गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई॥
आदि अंत कोउ जासु न पावा। मति अनुमानि निगम अस गावा॥2॥

हे पार्वती! जिनकी कृपा से इस प्रकार का भ्रम मिट जाता है, वही कृपालु श्री रघुनाथजी हैं। जिनका आदि और अंत किसी ने नहीं (जान) पाया। वेदों ने अपनी बुद्धि से अनुमान करके इस प्रकार (नीचे लिखे अनुसार) गाया है-॥2॥

The one whose grace eliminates such error,
Girija, is that merciful Raghu king.
No one fathom his beginning or end;
using inference, scripture speaks of him thus:

**

बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ बिधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी॥3॥

वह (ब्रह्म) बिना ही पैर के चलता है, बिना ही कान के सुनता है, बिना ही हाथ के नाना प्रकार के काम करता है, बिना मुँह (जिव्हा) के ही सारे (छहों) रसों का आनंद लेता है और बिना ही वाणी के बहुत योग्य वक्ता है॥3॥

Without feet he walks, and hear without ears,
without hands he performs all kind of acts,
without mouth savours all tastes,
and voiceless he speaks with great eloquence,

**

तन बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहइ घ्रान बिनु बास असेषा॥
असि सब भाँति अलौकिक करनी। महिमा जासु जाइ नहिं बरनी॥4॥

वह बिना ही शरीर (त्वचा) के स्पर्श करता है, बिना ही आँखों के देखता है और बिना ही नाक के सब गंधों को ग्रहण करता है (सूँघता है)। उस ब्रह्म की करनी सभी प्रकार से ऐसी अलौकिक है कि जिसकी महिमा कही नहीं जा सकती॥4॥

bodiless he touches, eyeless sees,

and without a nose perceives all scents.

His acts are so utterly transcendent

And his glory can never be described.

**

दोहा :

जेहि इमि गावहिं बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान॥118॥

जिसका वेद और पंडित इस प्रकार वर्णन करते हैं और मुनि जिसका ध्यान धरते हैं, वही दशरथनंदन, भक्तों के हितकारी, अयोध्या के स्वामी भगवान श्री रामचन्द्रजी हैं॥118॥

He of whom the Veda and the learned thus speak,
and on whom sages meditate,
is that son of Dashrath, benefactor of the faithful,
Kosala's king, and supreme Lord.

**

चौपाई :

बिबसहुँ जासु नाम नर कहहीं। जनम अनेक रचित अघ दहहीं॥
सादर सुमिरन जे नर करहीं। भव बारिधि गोपद इव तरहीं॥2॥

विवश होकर (बिना इच्छा के) भी जिनका नाम लेने से मनुष्यों के अनेक जन्मों में किए हुए पाप जल जाते हैं। फिर जो मनुष्य आदरपूर्वक उनका स्मरण करते हैं, वे तो संसार रूपी (दुस्तर) समुद्र को गाय के खुर से बने हुए गड्ढे के समान (अर्थात बिना किसी परिश्रम के) पार कर जाते हैं॥2॥

His name uttered in duress,
removes sins of countless lifetimes,
and reverently recalled, carries one over
the vast sea of rebirth like a cow's hoof-print.

**

राम सो परमातमा भवानी। तहँ भ्रम अति अबिहित तव बानी॥
अस संसय आनत उर माहीं। ग्यान बिराग सकल गुन जाहीं॥3॥

हे पार्वती! वही परमात्मा श्री रामचन्द्रजी हैं। उनमें भ्रम (देखने में आता) है, तुम्हारा ऐसा कहना अत्यन्त ही अनुचित है। इस प्रकार का संदेह मन में लाते ही मनुष्य के ज्ञान, वैराग्य आदि सारे सद्गुण नष्ट हो जाते हैं॥3॥

Ram is that supreme self, Bhavani ,

and your calling him deluded was most improper.

The moment such doubt enters the mind,

wisdom, detachment, and all merits flee.

**

जब जब होई धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥3॥
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी॥
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥4॥

जब-जब धर्म का ह्रास होता है और नीच अभिमानी राक्षस बढ़ जाते हैं॥3॥ और वे ऐसा अन्याय करते हैं कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता तथा ब्राह्मण, गो, देवता और पृथ्वी कष्ट पाते हैं, तब-तब वे कृपानिधान प्रभु भाँति-भाँति के (दिव्य) शरीर धारण कर सज्जनों की पीड़ा हरते हैं॥4॥

Whenever there is decline of dharma,
and vile, arrogant demons multiply
to commit indescribable atrocities,
and Brahmans, cows, gods, and earth suffer,
then the Lord, assuming diverse forms,

mercilessly relieves the pain of the righteous.

**

चौपाई :

दोहा :

असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग बिस्तारहिं बिसद जस राम जन्म कर हेतु॥121॥

वे असुरों को मारकर देवताओं को स्थापित करते हैं, अपने (श्वास रूप) वेदों की मर्यादा की रक्षा करते हैं और जगत में अपना निर्मल यश फैलाते हैं। श्री रामचन्द्रजी के अवतार का यह कारण है॥121॥

To slay demons and reestablish gods, to guard the dam
of the sacred word he himself revealed,
and to spread his spotless fame in the world–
such is the purpose of Ram's birth.

**

अयोध्या कांड

बाल्मिकी गीता

बनवास काल में राम लक्ष्मण, सीता के साथ महर्षि बाल्मिकी के आश्रम में पहुँचते हैं और पूछते हैं कि चित्रकूट में वे कहाँ अपना आश्रम बनायें एवं रहें। बाल्मिकी का उपदेश अपने आप में एक गीता है। पहले अंश में राम, सीता की स्तुति करते हैं ब्रह्म और माया होने की सत्यता बताते हुई। फिर वे वैसे व्यक्तियों के भक्ति और स्वभाविक गुण की चर्चा करते हैं जिनके हृदयों में उनका का बास हो।

(दोहा 123 के बाद)

देखत बन सर सैल सुहाए।बालमिकी आश्रम प्रभु आए॥
राम दीख मुनि बासु सुहावन। सुंदर गिरि काननु जलु पावन॥3॥

सुंदर वन, तालाब और पर्वत देखते हुए प्रभु श्री रामचन्द्रजी वाल्मीकिजी के आश्रम में आए। श्री रामचन्द्रजी ने देखा कि मुनि का निवास स्थान बहुत सुंदर है, जहाँ सुंदर पर्वत, वन और पवित्र जल है॥3॥

Seeing lovely forest, lakes, and mountains,
the Lord came to Valmiki' hermitage.
Ram beheld the sage's delightful abode
with its beautiful hills, woodlands, pure water,

राम

देखि पाय मुनिराय तुम्हारे।भए सुकृत सब सुफल हमारे॥
अब जहँ राउर आयस होई। मुनि उदबेगु न पावै कोई॥1॥

हे मुनिराज! आपके चरणों का दर्शन करने से आज हमारे सब पुण्य सफल हो गए (हमें सारे पुण्यों का फल मिल गया)। अब जहाँ आपकी आज्ञा हो और जहाँ कोई भी मुनि उद्वेग को प्राप्त न हो-॥1॥

Seeing your feet, king of sages,

is the fruition of all our good deeds.
Now command us to go to some place
where no ascetics will be dis turbed.

तहँ रचि रुचिर परन तृन साला। बासु करौं कछु काल कृपाला॥3॥

और वहाँ सुंदर पत्तों और घास की कुटी बनाकर, हे दयालु! कुछ समय निवास करूँ॥3॥
and building a shelter of leaves and grass,
may live there for a while, merciful one.

बाल्मिकी

श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी-
जो सृजति जगु पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की॥5॥

हे राम! आप वेद की मर्यादा के रक्षक जगदीश्वर हैं और जानकीजी (आपकी स्वरूप भूता) माया हैं, जो कृपा के भंडार आपका रुख पाकर जगत का सृजन, पालन और संहार करती हैं।

Guardian of Veda's strictures, you are Lord of creation,
Ram, Janaki is your illusory power,
who brings forth, nurtures and destroys
the cosmos at your whim, abode of mercy!

**

दोहा

राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर।
अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह॥126॥

हे राम! आपका स्वरूप वाणी के अगोचर, बुद्धि से परे, अव्यक्त, अकथनीय और अपार है। वेद निरंतर उसका 'नेति-नेति' कहकर वर्णन करते हैं॥126॥

Ram, your true being transcends speech
and intelligence-imperceptible,unutterable,
and endless-of which the Veda constantly declares,
'No, he neither this nor that!'

चौपाई-

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे। बिधि हरि संभु नचावनिहारे॥
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा। औरु तुम्हहि को जाननिहारा॥1॥

हे राम! जगत दृश्य है, आप उसके देखने वाले हैं। आप ब्रह्मा, विष्णु और शंकर को भी नचाने वाले हैं। जब वे भी आपके मर्म को नहीं जानते, तब और कौन आपको जानने वाला है?॥1॥

The world is spectacle and you it's viewer,
who sets Brahma, Hari, and Shiva to dance.
Even they do not know your secret,
so who else could ever know you?
**

सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई॥
तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन। जानहिं भगत भगत उर चंदन॥2॥

वही आपको जानता है, जिसे आप जना देते हैं और जानते ही वह आपका ही स्वरूप बन जाता है। हे रघुनंदन! हे भक्तों के हृदय को शीतल करने वाले चंदन! आपकी ही कृपा से भक्त आपको जान पाते हैं॥2॥
Only one to whom you give knowledge knows you.

and knowing you at once becomes you.
By your grace alone, joy of the Raghus,

चिदानंदमय देह तुम्हारी। बिगत बिकार जान अधिकारी॥
नर तनु धरेहु संत सुर काजा। कहहु करहु जस प्राकृत राजा॥3॥

आपकी देह चिदानन्दमय है (यह प्रकृतिजन्य पंच महाभूतों की बनी हुई कर्म बंधनयुक्त, त्रिदेह विशिष्ट मायिक नहीं है) और (उत्पत्ति-नाश, वृद्धि-क्षय आदि) सब विकारों से रहित है, इस रहस्य को अधिकारी पुरुष ही जानते हैं। आपने देवता और संतों के कार्य के लिए (दिव्य) नर शरीर धारण किया है और प्राकृत (प्रकृति के तत्वों से निर्मित देह वाले, साधारण) राजाओं की तरह से कहते और करते हैं॥3॥
Your body, suffused with consciousness and bliss,
is faultless, as only initiates know, yet,
taking human form for the sake of sages and gods,
you speak and act like a worldly king.

राम देखि सुनि चरित तुम्हारे। जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे॥
तुम्ह जो कहहु करहु सबु साँचा। जस काछिअ तस चाहिअ नाचा॥4॥

हे राम! आपके चरित्रों को देख और सुनकर मूर्ख लोग तो मोह को प्राप्त होते हैं और ज्ञानीजन सुखी होते हैं। आप जो कुछ कहते, करते हैं, वह सब सत्य (उचित) ही है, क्योंकि जैसा स्वाँग भरे वैसा ही नाचना भी तो चाहिए (इस समय आप मनुष्य रूप में हैं, अतः मनुष्योचित व्यवहार करना ठीक ही है।)॥4॥
Seeing and hearing your deeds, Ram,
the ignorant are deluded but the wise rejoice.
All that you say and do is true,
for as is the costume, so must be the dance!

दोहा- पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ॥127॥

आपने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ रहूँ? परन्तु मैं यह पूछते सकुचाता हूँ कि जहाँ आप न हों, वह स्थान बता दीजिए। तब मैं आपके रहने के लिए स्थान दिखाऊँ॥127॥

You ask, 'Where should I reside?'
But hesitatingly, I ask you this:
Tell me a place where you are not,
that I may point out to you."

सुनहु राम अब कहउँ निकेता। जहाँ बसहु सिय लखन समेता॥
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना॥2॥

हे राम! सुनिए, अब मैं वे स्थान बताता हूँ, जहाँ आप, सीताजी और लक्ष्मणजी समेत निवास कीजिए। जिनके कान समुद्र की भाँति आपकी सुंदर कथा रूपी अनेक सुंदर नदियों से-॥2॥

"Listen, Ram, as I now describe a place,
where you may settle down with Sita and Lakshman.
Those whose ears are like seas,
which countless lovely rivers of your story

भरहिं निरंतर होहिं न पूरे। तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गुह रूरे॥
लोचन चातक जिन्ह करि राखे। रहहिं दरस जलधर अभिलाषे॥3॥

निरंतर भरते रहते हैं, परन्तु कभी पूरे (तृप्त) नहीं होते, उनके हृदय आपके लिए सुंदर घर हैं और जिन्होंने अपने नेत्रों को चातक बना रखा है, जो आपके दर्शन रूपी मेघ के लिए सदा लालायित रहते हैं,॥3॥

constantly fill, though never, ever fully–

their hearts are a fitting home for you.

Those who have made their eyes like chataks,

and live thirsting for the sight of your cloud,

**

निदरहिं सरित सिंधु सर भारी। रूप बिंदु जल होहिं सुखारी॥
तिन्ह कें हृदय सदन सुखदायक। बसहु बंधु सिय सह रघुनायक॥4॥

तथा जो भारी-भारी नदियों, समुद्रों और झीलों का निरादर करते हैं और आपके सौंदर्य (रूपी मेघ) की एक बूँद जल से सुखी हो जाते हैं (अर्थात आपके दिव्य सच्चिदानन्दमय स्वरूप के किसी एक अंग की जरा सी भी झाँकी के सामने स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों जगत के अर्थात पृथ्वी, स्वर्ग और ब्रह्मलोक तक के सौंदर्य का तिरस्कार करते हैं), हे रघुनाथजी! उन लोगों के हृदय रूपी सुखदायी भवनों में आप भाई लक्ष्मणजी और सीताजी सहित निवास कीजिए॥4॥

scorning mighty rivers, seas, and lakes
to rejoice in a single drop of your beauty–
dwell in the delightful chambers of their hearts,
Raghu king, along with your brother and Sita.

**

दोहा :

जसु तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु।
मुकताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ तासु॥128॥

आपके यश रूपी निर्मल मानसरोवर में जिसकी जीभ हंसिनी बनी हुई आपके गुण समूह रूपी मोतियों को चुगती रहती है, हे राम! आप उसके हृदय में बसिए॥128॥

Those whose tongues are hamsa geese
on the clear Manas Lake of your fame,
seeking out the pearls of your countless virtues–
reside in their hearts, Ram!
**

काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया॥

जिनके न तो काम, क्रोध, मद, अभिमान और मोह हैं, न लोभ है, न क्षोभ है, न राग है, न द्वेष है और न कपट, दम्भ और माया ही है- हे रघुराज! आप उनके हृदय में निवास कीजिए॥1॥

Those without lust, anger, arrogance, pride, delusion,
greed, excitement, passion, or hatred,
with no duplicity, hypocrisy, or artifice–
reside in their hearts, Ragu-King
**
सब के प्रिय सब के हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी॥

जो सबके प्रिय और सबका हित करने वाले हैं, जिन्हें दुःख और सुख तथा प्रशंसा (बड़ाई) और गाली (निंदा) समान है, जो विचारकर सत्य और प्रिय वचन बोलते हैं तथा जो जागते-सोते आपकी ही शरण हैं,॥2॥

Those who are dear to all, benefactors of all,
for who joy and grief, praise and abuse are equal,
who speaks truth gently and on due reflection,
relying on you always, waking and sleeping,
**

जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव बिष तें बिष भारी॥3॥
हे रामजी! आप उनके मन में बसिए। जो पराई स्त्री को जन्म देने वाली माता के समान जानते हैं और पराया धन जिन्हें विष से भी भारी विष है,॥3॥

Ram–dwell in their hearts.
Those who consider another's wife their mother,
another's wealth more toxic than venom,
**

जे हरषहिं पर संपति देखी। दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी॥
जिन्हहि राम तुम्ह प्रान पिआरे। तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे॥4॥

जो दूसरे की सम्पत्ति देखकर हर्षित होते हैं और दूसरे की विपत्ति देखकर विशेष रूप से दुःखी होते हैं और हे रामजी! जिन्हें आप प्राणों के समान प्यारे हैं, उनके मन आपके रहने योग्य शुभ भवन हैं॥4॥

who rejoice in the prosperity of others,

and feel anguish at their misfortune,
who hold you, Ram, dearer than life-breath-
their hearts are an auspicious home for you.
**

दोहा :

स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात।
मन मंदिर तिन्ह कें बसहु सीय सहित दोउ भ्रात॥130॥

हे तात! जिनके स्वामी, सखा, पिता, माता और गुरु सब कुछ आप ही हैं, उनके मन रूपी मंदिर में सीता सहित आप दोनों भाई निवास कीजिए॥130॥

Those for whom you are everything–
master, friend, father, mother, teacher–
take up your residence, you two brothers
and Sita, in the temple of their hearts.
**

चौपाई-

अवगुन तजि सब के गुन गहहीं। बिप्र धेनु हित संकट सहहीं॥
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका।घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका ॥1॥

जो अवगुणों को छोड़कर सबके गुणों को ग्रहण करते हैं, ब्राह्मण और गो के लिए संकट सहते हैं, नीति-निपुणता में जिनकी जगत में मर्यादा है, उनका सुंदर मन आपका घर है॥1॥

Those who ignore other's faults, embrace their virtues,

endure pain for the sake of Brahmans and cows,
and make their marks in the world by moral eminence-
their minds make a fitting mansion for you.
**

गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा। जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा॥
राम भगत प्रिय लागहिं जेही। तेहि उर बसहु सहित बैदेही॥2॥

जो गुणों को आपका और दोषों को अपना समझता है, जिसे सब प्रकार से आपका ही भरोसा है और राम भक्त जिसे प्यारे लगते हैं, उसके हृदय में आप सीता सहित निवास कीजिए॥2॥

Those who know your goodness and their defects,
who trust you entirely,
and who cherish other Ram devotees –
dwell with Vaidehi, in their hearts.
**

जाति पाँति धनु धरमु बड़ाई। प्रिय परिवार सदन सुखदाई॥
सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई। तेहि के हृदयँ रहहु रघुराई॥3॥

जाति, पाँति, धन, धर्म, बड़ाई, प्यारा परिवार और सुख देने वाला घर, सबको छोड़कर जो केवल आपको ही हृदय में धारण किए रहता है, हे रघुनाथजी! आप उसके हृदय में रहिए॥3॥

Caste and clan, wealth, religion, status,
dear family, and comfortable homes–
those who leave all this to leave holding you most dear,

live in their hearts, Raghu king!

**

सरगु नरकु अपबरगु समाना। जहँ तहँ देख धरें धनु बाना॥
करम बचन मन राउर चेरा। राम करहु तेहि कें उर डेरा॥4

स्वर्ग, नरक और मोक्ष जिसकी दृष्टि में समान हैं, क्योंकि वह जहाँ-तहाँ (सब जगह) केवल धनुष-बाण धारण किए आपको ही देखता है और जो कर्म से, वचन से और मन से आपका दास है, हे रामजी! आप उसके हृदय में डेरा कीजिए॥4॥

Those for whom heaven, hell, and final final release are equal,
who see you everywhere, bearing arrows and bow,
who are your servants in deed, word, and thought–
make your encampment, Ram, in their hearts.

**

दोहा :

जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु॥131॥

जिसको कभी कुछ भी नहीं चाहिए और जिसका आपसे स्वाभाविक प्रेम है, आप उसके मन में निरंतर निवास कीजिए, वह आपका अपना घर है॥131॥

One who never desires anything
and whose love for you is most natural–
in such a one's heart dwell eternally,
for it is your own home"

**

(अयोध्या कांड के १२५ से १३१ दोहों के बीच से)

अरण्यकांड से

नारी धर्म

जब राम, सीता एवं लक्ष्मण के साथ ऋषि अत्रि के आश्रम में पहुँचते हैं, वहाँ उनका स्वागत करते हुए ऋषि की प्रसिद्ध विदुषी पत्नी अनुसूया सीता को दिव्य आभूषण एवं बस्त्र पहिनाती है और फिर पतिव्रत धर्म का उपदेश देती हैं।

**

मातु पिता भ्राता हितकारी। मितप्रद सब सुनु राजकुमारी॥
अमित दानि भर्ता बयदेही। अधम सो नारि जो सेव न तेही॥3॥

हे राजकुमारी! सुनिए- माता, पिता, भाई सभी हित करने वाले हैं, परन्तु ये सब एक सीमा तक ही (सुख) देने वाले हैं, परन्तु हे जानकी! पति तो (मोक्ष रूप) असीम (सुख) देने वाला है। वह स्त्री अधम है, जो ऐसे पति की सेवा नहीं करती॥3॥

“Mother, father, and brother are benefactors.
but–listen, princess–these all give within limits.
He who gives limitlessly is a husband, Vaidehi,
and a woman who does not serve him is contemptible.

O princess! Listen - mother, father, brother are all benefactors, but all of them give (happiness) only to a limited extent, but O Janaki! The husband is the giver of limitless pleasure (in the form of salvation). That woman is unrighteous, who does not serve such a husband॥3॥

**

धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपद काल परिखिअहिं चारी॥
बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना। अंध बधिर क्रोधी अति दीना॥4॥

ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना। नारि पाव जमपुर दुख नाना॥
एकइ धर्म एक ब्रत नेमा। कायँ बचन मन पति पद प्रेमा॥5॥

धैर्य, धर्म, मित्र और स्त्री- इन चारों की विपत्ति के समय ही परीक्षा होती है। वृद्ध, रोगी, मूर्ख, निर्धन, अंधा, बहरा, क्रोधी और अत्यन्त ही दीन-ऐसे भी पति का अपमान करने से स्त्री यमपुर में भाँति-भाँति के दुःख पाती है। शरीर, वचन और मन से पति के चरणों में प्रेम करना स्त्री के लिए, बस यह एक ही धर्म है, एक ही व्रत है और एक ही नियम है॥4-5॥

Patience and righteousness, a friend, and a wife–

in times of distress, these four are tested,

He may be aged, sickly, stupid, or impoverished,

blind, deaf, prone to anger, or utterly wretched–4

but if she shows disrespect to even such a husband,

a woman suffers countless torments in Yama's realm.

A woman has but one duty, vow, and regimen:

to love with body, mind, and speech her husband feet.5

**

जग पतिब्रता चारि बिधि अहहीं। बेद पुरान संत सब कहहीं॥
उत्तम के अस बस मन माहीं। सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं॥6॥

जगत में चार प्रकार की पतिव्रताएँ हैं। वेद, पुराण और संत सब ऐसा कहते हैं कि उत्तम श्रेणी की पतिव्रता के मन में ऐसा भाव बसा रहता है कि जगत में (मेरे पति को छोड़कर) दूसरा पुरुष स्वप्न में भी नहीं है॥6॥

**

There are four kinds of faithful wives in this world,
as the Vedas, puranas, and holy ones all affirm.
In the heart of the highest kind abides the conviction
that, even in dreams, no other man exists on earth. 6

There are four types of faithful wives in this world: so declare Vedas, puraanas and all the saints. A woman of the best type is convinced in her hearts that she cannot even dream in this world of a man other than her lord.

मध्यम परपति देखइ कैसें। भ्राता पिता पुत्र निज जैसें॥
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई। सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई॥7॥

मध्यम श्रेणी की पतिव्रता पराए पति को कैसे देखती है, जैसे वह अपना सगा भाई, पिता या पुत्र हो (अर्थात समान अवस्था वाले को वह भाई के रूप में देखती है, बड़े को पिता के रूप में और छोटे को पुत्र के रूप में देखती है।) जो धर्म को विचारकर और अपने कुल की मर्यादा समझकर बची रहती है, वह निकृष्ट (निम्न श्रेणी की) स्त्री है, ऐसा वेद कहते हैं॥7॥

Those of middle rank look on another's husband

as if he were their own brother, father, or son.

Those who stay chaste thinking of duty and family honor

as low, third-rate women–so the sacred word declares–7

**

The middle class of the husband-devoted women see at the other's husband as his real brother, father or son (i.e., she sees the other's husbands as a brother, the elder ones as the father and the younger ones as the son). The one who remains devoted to the husband because of the requirements of the religion and for maintaining the dignity of her family, she is a low class of wives, as per the Vedas.

बिनु अवसर भय तें रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई॥
पति बंचक परपति रति करई। रौरव नरक कल्प सत परई॥8॥

और जो स्त्री मौका न मिलने से या भयवश पतिव्रता बनी रहती है, जगत में उसे अधम स्त्री जानना। पति को धोखा देने वाली जो स्त्री पराए पति से रति करती है, वह तो सौ कल्प तक रौरव नरक में पड़ी रहती है॥8॥

and those who do so for lack of opportunity, or out of fear,

know to be the lowest of women in the world.

One who cheats her lord to make love to another

falls into the most dreadful hell for a hundred aeons.8

And the woman who remains virtuous due to lack of opportunity or out of fear, know her as the lowest woman in the world. The woman who deceives her husband, who commits love to others' husband, she remains in the most torturous hell for a hundred lives..

छन सुख लागि जनम सत कोटी। दुख न समुझ तेहि सम को खोटी॥
बिनु श्रम नारि परम गति लहई। पतिब्रत धर्म छाड़ि छल गहई॥9॥

क्षणभर के सुख के लिए जो सौ करोड़ (असंख्य) जन्मों के दुःख को नहीं समझती, उसके समान दुष्टा कौन होगी। जो स्त्री छल छोड़कर पतिव्रत धर्म को ग्रहण करती है, वह बिना ही परिश्रम परम गति को प्राप्त करती है॥9॥

For a momentary pleasure, a billion lifetimes
of pain–who is so base that she cannot grasp this?
A woman effortlessly attains the supreme state
if she clings to the dharma of fidelity, giving up deceit.9

Who does not understand the sorrow of a hundred crore (innumerable) births for a moment's happiness, who will be as wicked as him. The

woman who abandons deceit and accepts the virtuous religion, she attains the supreme speed without hard work.

पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई। बिधवा होइ पाइ तरुनाई॥10॥

किन्तु जो पति के प्रतिकूल चलती है, वह जहाँ भी जाकर जन्म लेती है, वहीं जवानी पाकर (भरी जवानी में) विधवा हो जाती है॥10॥
But if she defies her husband, wherever she takes birth
she becomes a widow while still in her youth.10

The woman who sincerely takes a vow of fidelity to her husband easily attains the highest state; while she who is disloyal to her lord is widowed as soon as she attains her youth whenever she may be reborn.

राम का लक्ष्मण को ज्ञान दान

लक्ष्मण का अनुरोध

ईस्वर जीव भेद प्रभु सकल कहौ समुझाइ।
जातें होइ चरन रति सोक मोह भ्रम जाइ॥14॥

हे प्रभो! ईश्वर और जीव का भेद भी सब समझाकर कहिए, जिससे आपके चरणों में मेरी प्रीति हो और शोक, मोह तथा भ्रम नष्ट हो जाएँ॥14॥
and of the divide between God and the soul.
Explain all that to me, lord,
whereby intense love for your feet is gained
and sorrow, delusion, and error banished.

राम का उत्तर

चौपाई :

मैं अरु मोर तोर तैं माया। जेहिं बस कीन्हे जीव निकाया॥1ख॥

(श्री रामजी ने कहा- तुम मन, चित्त और बुद्धि लगाकर सुनो!) मैं और मेरा, तू और तेरा- यही माया है, जिसने समस्त जीवों को वश में कर रखा है।1ख

'I' and 'mine', 'you' and 'your'–these are illusion,
which has brought all beings under its sway.

गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई॥
तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ। बिद्या अपर अबिद्या दोऊ॥2॥

इंद्रियों के विषयों को और जहाँ तक मन जाता है, हे भाई! उन सबको माया जानना। उसके भी एक विद्या और दूसरी अविद्या, इन दोनों भेदों को तुम सुनो-॥2

The senses and their objects, as far as the mind ranges–

know all that to be maya, brother.

and of its two varieties, bear the distinction:

one is knowledge and the other ignorance.

एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा। जा बस जीव परा भवकूपा॥
एक रचइ जग गुन बस जाकें। प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताकें॥3॥

एक (अविद्या) दुष्ट (दोषयुक्त) है और अत्यंत दुःखरूप है, जिसके वश होकर जीव संसार रूपी कुएँ में पड़ा हुआ है और एक (विद्या) जिसके वश में गुण है और जो जगत् की रचना करती है, वह प्रभु से ही प्रेरित होती है, उसके अपना बल कुछ भी नही है॥3॥

One is the evil embodiment of utter grief,

in whose grip souls fall into rebirth's abyss.
The other, which controls attributes, creates the world,
inspired by the Lord —-not by any power of its own.

ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं। देख ब्रह्म समान सब माहीं॥
कहिअ तात सो परम बिरागी। तृन सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी॥4॥

ज्ञान वह है, जहाँ (जिसमें) मान आदि एक भी (दोष) नहीं है और जो सबसे समान रूप से ब्रह्म को देखता है। हे तात! उसी को परम वैराग्यवान् कहना चाहिए, जो सारी सिद्धियों को और तीनों गुणों को तिनके के समान त्याग चुका हो॥4॥
(जिसमें मान, दम्भ, हिंसा, क्षमाराहित्य, टेढ़ापन, आचार्य सेवा का अभाव, अपवित्रता, अस्थिरता, मन का निगृहीत न होना, इंद्रियों के विषय में आसक्ति, अहंकार, जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधिमय जगत् में सुख-बुद्धि, स्त्री-पुत्र-घर आदि में आसक्ति तथा ममता, इष्ट और अनिष्ट की प्राप्ति में हर्ष-शोक, भक्ति का अभाव, एकान्त में मन न लगना, विषयी मनुष्यों के संग में प्रेम- ये अठारह न हों और नित्य अध्यात्म (आत्मा) में स्थिति तथा तत्त्व ज्ञान के अर्थ (तत्त्वज्ञान के द्वारा जानने योग्य) परमात्मा का नित्य दर्शन हो, वही ज्ञान कहलाता है। (गीता अध्याय 13/ 7 से 11 पर आधारित)
Knowledge arises where there is no trace of self-pride
and one sees *brahma* equally in all things.
One is called supremely detached, dear brother,
who spurns, like chaff, occult powers and the three qualities.

दोहा :

माया ईस न आपु कहुँ जान कहिअ सो जीव।
बंध मोच्छ प्रद सर्बपर माया प्रेरक सीव॥15॥

जो माया को, ईश्वर को और अपने स्वरूप को नहीं जानता, उसे जीव कहना चाहिए। जो (कर्मानुसार) बंधन और मोक्ष देने वाला, सबसे परे और माया का प्रेरक है, वह ईश्वर है॥5॥

The one who does not know maya, God,
or itself, is, called the soul,
and the one who gives both bondage and release,
the transcendent one who incites maya, is God.

चौपाई :

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना। ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना॥
जातें बेगि द्रवउँ मैं भाई। सो मम भगति भगत सुखदाई॥1॥

धर्म (के आचरण) से वैराग्य और योग से ज्ञान होता है तथा ज्ञान मोक्ष का देने वाला है- ऐसा वेदों ने वर्णन किया है। और हे भाई! जिससे मैं शीघ्र ही प्रसन्न होता हूँ, वह मेरी भक्ति है जो भक्तों को सुख देने वाली है॥1॥

From dharma arises detachment, from yoga, wisdom,
and wisdom grants liberation–so the Veda explains.
But that to which I quickly respond with favor, brother,
is devotion to me, which gives joy to my devotees.1

सो सुतंत्र अवलंब न आना। तेहि आधीन ग्यान बिग्याना॥
भगति तात अनुपम सुखमूला। मिलइ जो संत होइँ अनुकूला॥2॥

वह भक्ति स्वतंत्र है, उसको (ज्ञान-विज्ञान आदि किसी) दूसरे साधन का सहारा (अपेक्षा) नहीं है। ज्ञान और विज्ञान तो उसके अधीन हैं। हे तात! भक्ति अनुपम एवं सुख की मूल है और वह तभी मिलती है, जब संत अनुकूल (प्रसन्न) होते हैं॥2॥

It is self-sufficient and depends on nothing else–
Indeed, knowledge and wisdom. Depend on it.
Devotion, dear brother, is the matchless root of bliss
obtained when the holy are favourable to one.2

भगति कि साधन कहउँ बखानी। सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी॥
प्रथमहिं बिप्र चरन अति प्रीती। निज निज कर्म निरत श्रुति रीती॥3॥

अब मैं भक्ति के साधन विस्तार से कहता हूँ- यह सुगम मार्ग है, जिससे जीव मुझको सहज ही पा जाते हैं। पहले तो ब्राह्मणों के चरणों में अत्यंत प्रीति हो और वेद की रीति के अनुसार अपने-अपने (वर्णाश्रम के) कर्मों में लगा रहे॥3॥

I will expound the means of cultivating devotion–
easy path by which beings may attain me.
First, one should adore the feet of Brahman seers
and be intent on one's own work, as scripture prescribes,

एहि कर फल पुनि बिषय बिरागा। तब मम धर्म उपज अनुरागा॥
श्रवनादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं। मम लीला रति अति मन माहीं॥4॥

इसका फल, फिर विषयों से वैराग्य होगा। तब (वैराग्य होने पर) मेरे धर्म (भागवत धर्म) में प्रेम उत्पन्न होगा। तब श्रवण आदि नौ प्रकार की भक्तियाँ दृढ़ होंगी और मन में मेरी लीलाओं के प्रति अत्यंत प्रेम होगा॥4

The fruit of this is detachment from sensual desires
and then, the birth of love for my own dharma.
'Listening' and other forms of ninefold devotion grow firm,
and fervent love for my playful acts pervades the heart.4

संत चरन पंकज अति प्रेमा। मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमा॥
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा। सब मोहि कहँ जानै दृढ़ सेवा॥5॥

जिसका संतों के चरणकमलों में अत्यंत प्रेम हो, मन, वचन और कर्म से भजन का दृढ़ नियम हो और जो मुझको ही गुरु, पिता, माता, भाई, पति और देवता सब कुछ जाने और सेवा में दृढ़ हो,॥5॥

One who adores the stainless feet of saintly ones,
resolutely worships me in thought, word, and deed,
and gives to guru, parents,, brother, master, and gods
devoted service, understanding them all to be me, 5

मम गुन गावत पुलक सरीरा। गदगद गिरा नयन बह नीरा॥
काम आदि मद दंभ न जाकें। तात निरंतर बस मैं ताकें॥6॥

मेरा गुण गाते समय जिसका शरीर पुलकित हो जाए, वाणी गदगद हो जाए और नेत्रों से (प्रेमाश्रुओं का) जल बहने लगे और काम, मद और दम्भ आदि जिसमें न हों, हे भाई! मैं सदा उसके वश में रहता हूँ॥6॥

whose body thrills when singing my virtues,
whose voice breaks and whose eyes shed teas,
and who is without lust, pride, hypocrisy and other vices—-
to such a one, desr brother, I forever submit! 6

दोहा :

बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम।
तिन्ह के हृदय कमल महुँ करउँ सदा बिश्राम॥16॥

जिनको कर्म, वचन और मन से मेरी ही गति है और जो निष्काम भाव से मेरा भजन करते हैं, उनके हृदय कमल में मैं सदा विश्राम किया करता हूँ॥16॥

One devoted to me in word, deed, and thought,
who sings my praise without desire for reward–
within the heart- lotus of such a one
I constantly rest contented.16

नवधा भक्ति

निषाद जाति स्त्री सबरी की भक्ति से प्रसन्न राम उसका आतिथ्य स्वीकार करते हैं और फिर उसे नवधा भक्ति को समझाते है और फिर उसे परम पद प्राप्त होता है। इस अंश में उसकी कुटिया में पहुँचने से ले उसके योग अग्नि से परमस्थान जाने की कहानी है।

सबरी देखि राम गृहँ आए। मुनि के बचन समुझि जियँ भाए॥3॥

शबरीजी ने श्री रामचंद्रजी को घर में आए देखा, तब मुनि मतंगजी के वचनों को याद करके उनका मन प्रसन्न हो गया॥3॥

सरसिज लोचन बाहु बिसाला। जटा मुकुट सिर उर बनमाला॥
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई। सबरी परी चरन लपटाई॥4॥
सादर जल लै चरन पखारे। पुनि सुंदर आसन बैठारे॥5॥

कमल सदृश नेत्र और विशाल भुजाओं वाले, सिर पर जटाओं का मुकुट और हृदय पर वनमाला धारण किए हुए सुंदर, साँवले और गोरे दोनों भाइयों के चरणों में शबरीजी लिपट पड़ीं॥4॥

बार-बार चरण-कमलों में सिर नवा रही हैं। फिर उन्होंने जल लेकर आदरपूर्वक दोनों भाइयों के चरण धोए और फिर उन्हें सुंदर आसनों पर बैठाया॥5॥

दोहा :
कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि॥34॥

उन्होंने अत्यंत रसीले और स्वादिष्ट कन्द, मूल और फल लाकर श्री रामजी को दिए। प्रभु ने बार-बार प्रशंसा करके उन्हें प्रेम सहित खाया॥34॥

Then, bringing roots and tubers
and the juiciest fruits, she gave them to Ram,
and the Lord lovingly ate them,
praising again and again.

शबरी कहतीं है-

चौपाई :

केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़मति भारी॥1॥

फिर वे हाथ जोड़कर आगे खड़ी हो गईं। प्रभु को देखकर उनका प्रेम अत्यंत बढ़ गया। (उन्होंने कहा-) मैं किस प्रकार आपकी स्तुति करूँ? मैं नीच जाति की और अत्यंत मूढ़ बुद्धि हूँ॥1॥

gazing at the Lord with ever-growing love.

“How May I voice your praise,

being of of vile birth, very foolish,1

अधम ते अधम अधम अति नारी। तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी॥

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानउँ एक भगति कर नाता॥2॥

राम को शबरी कहती है “जो अधम से भी अधम हैं, स्त्रियाँ उनमें भी अत्यंत अधम हैं, और उनमें भी हे पापनाशन! मैं मंदबुद्धि हूँ।”

the lowest of the low, and lower still–a woman–

and among them, too, dull-witted, oh destroyer of sin?

The Raghu lord said, “Listen to me, good woman:

I esteem but one relationship–devotion.2

Sabri tells Ram after seeing Him, “A woman is the lowest of those who rank as the lowest of the low. Of the women I am the most dull headed.”

श्री रघुनाथजी ने कहा- हे भामिनि! मेरी बात सुन! मैं तो केवल एक भक्ति ही का संबंध मानता हूँ॥2॥

Answered the Lord of Raghus: “ Listen, O good lady, to my words. I recognise no other kinship except that of Devotion.

जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई॥
भगति हीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा॥3॥

जाति, पाँति, कुल, धर्म, बड़ाई, धन, बल, कुटुम्ब, गुण और चतुरता- इन सबके होने पर भी भक्ति से रहित मनुष्य कैसा लगता है, जैसे जलहीन बादल (शोभाहीन) दिखाई पड़ता है॥3॥

Caste status and kinship, piety, renown,
wealth, power, lineage, virtues, and cleverness–
a person with all these, yet without devotion.
seems as arid as a cloud without rain water.3

Despite caste, kinship, lineage, piety, reputation, wealth, physical strength, numerical largeness of the family, accomplishments and ability, a man lacking in Devotion is of no more worth than a cloud without water.

नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं॥
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा॥4॥

मैं तुझसे अब अपनी नवधा भक्ति कहता हूँ। तू सावधान होकर सुन और मन में धारण कर। **पहली भक्ति** है संतों का सत्संग। **दूसरी भक्ति** है मेरे कथा प्रसंग में प्रेम॥4॥

I will tell you devotion's ninefold practice,
so listen attentively and set it in your heart.
The first is keeping the company of the holy,
the second is love for the events of my story.

Now I tell you **the nine forms of Devotions**, please listen attentively and cherish them in your mind. **The first in order** is fellowship with saints and **the second** is marked by fondness for My life stories.

दोहा :

गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान॥35॥

तीसरी भक्ति है अभिमानरहित होकर गुरु के चरण कमलों की सेवा और **चौथी भक्ति** यह है कि कपट छोड़कर मेरे गुण समूहों का गान करें॥35॥

Selfless service at a guru's holy feet
is the third way of devotion,
and the fourth is to abandon hypocrisy
and sing the litany of my praise. 35

Humble service of the lotus feet of one's preceptor is **the third form of Devotion**, while **the fourth type of Devotion** consists of in singing My praises of my various aspects of my qualities with a guileless purpose.

चौपाई :

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकासा॥
छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा॥1॥

मेरे (राम) मंत्र का जाप और मुझमें दृढ़ विश्वास- यह पाँचवीं भक्ति है, जो वेदों में प्रसिद्ध है। छठी भक्ति है इंद्रियों का निग्रह, शील (अच्छा स्वभाव या चरित्र), बहुत कार्यों से वैराग्य और निरंतर संत पुरुषों के धर्म (आचरण) में लगे रहना॥1॥

Firm faith in repeating my mantra

Is the fifth practice, revealed in the Veda.

The sixth: sense-control and detachment in all tasks,

with constant adherence to the dharma of the good. 1

Muttering of my Name with unwavering faith constitutes **the fifth of devotion** revealed in the Vedas. The **sixth variety** consists in practice of self-control and virtue, desisting from manifold activities and pursuing the course of conduct prescribed for saints.

सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक करि लेखा॥
आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा॥2॥

सातवीं भक्ति है जगत् भर को समभाव से मुझमें ओतप्रोत (राममय) देखना और संतों को मुझसे भी अधिक करके मानना। **आठवीं भक्ति** है जो कुछ मिल जाए, उसी में संतोष करना और स्वप्न में भी पराए दोषों को न देखना॥2॥

The seventh is to see to see all creation imbued with me

and to hold the holy above even myself.

The eighth is to be content with one's lot

And to not even dream of seeing others' faults.2

He who practices **the seventh type** sees the world full of Me without distinction and reckons saints as even greater than Myself. He cultivates **the eighth type of Devotion** remains contented with whatever he gets and never thinks of detecting others' fault.

नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना॥
नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥3॥

नवीं भक्ति है सरलता और सबके साथ कपटरहित बर्ताव करना, हृदय में मेरा भरोसारखना और किसी भी अवस्था में हर्ष और दैन्य (विषाद) का न होना। इन नवों में सेजिनके एक भी होती है, वह स्त्री-पुरुष, जड़-चेतन कोई भी हो-॥

The ninth is simplicity and honesty towards all,

with heartfelt trust in me, regardless of joy or woe.

Practising even one of these nine,

any-being – female or male, animate or inert–4

The ninth form of Devotion demands that one should be guileless and straight in one's dealings with everybody, and should in his heart cherish implicit faith in Me without either exultation or depression. Whosoever possesses anyone of these nine forms of Devotions, be he a man or woman or any being- sentient or insentient -

**

सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें॥
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई॥4

हे भामिनि! मुझे वही अत्यंत प्रिय है। फिर तुझ में तो सभी प्रकार की भक्ति दृढ़ है। अतएव जो गति योगियों को भी दुर्लभ है, वही आज तेरे लिए सुलभ हो गई है॥4॥

is exceedingly dear to me, good women,

and in you all forms of devotion are firm-rooted.

And so, the blessed state that eludes even yogis

has today become easy for you to reach. 4

O, lady, is the most dear to Me. As for yourself, you are blessed with unflinching devotion to all these types. The prize which is hardly won by the yogis is within your easy reach today.

मम दरसन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज सरूपा॥5a॥

मेरे दर्शन का परम अनुपम फल यह है कि जीव अपने सहज स्वरूप को प्राप्त हो जाता है।

For the matchless, supreme fruit of seeing me.5a

The most incomparable fruit of seeing Me is that the soul attains its natural state.

छंद :

कहि कथा सकल बिलोकि हरि मुख हृदय पद पंकज धरे।

तजि जोग पावक देह परि पद लीन भइ जहँ नहिं फिरे॥

सब कथा कहकर भगवान् के मुख के दर्शन कर, उनके चरणकमलों को धारण कर लिया और योगाग्नि से देह को त्याग कर (जलाकर) वह उस दुर्लभ हरिपद में लीन हो गई, जहाँ से लौटना नहीं होता।

After telling the whole story, she gazed on the Lord's countenance and imprinted the image of His lotus feet on her heart, and casting her body in the fire of yoga, she entered Sri Hari's state where from there is no return. " O men, abandon your varied activities, sins and diverse creeds, which all give birth to sorrow and with genuine faith , be devoted to the feet of Sri Ram," says Tulsidas.

नारद के अनुरोध, प्रश्न, संत-लक्षण और सत्संग महिमा

नारद का जनहित अनुरोध

जद्यपि प्रभु के नाम अनेका। श्रुति कह अधिक एक तें एका॥
राम सकल नामन्ह ते अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका॥4॥
यद्यपि प्रभु के अनेकों नाम हैं और वेद कहते हैं कि वे सब एक से एक बढ़कर हैं, तो भी हे नाथ! **रामनाम सब नामों से बढ़कर हो और पाप रूपी पक्षियों के समूह के लिए यह वधिक के समान हो**॥4॥

दोहा :

राका रजनी भगति तव राम नाम सोइ सोम।

अपर नाम उडगन बिमल बसहुँ भगत उर ब्योम॥42 क॥

आपकी भक्ति पूर्णिमा की रात्रि है, उसमें 'राम' नाम यही पूर्ण चंद्रमा होकर और अन्य सब नाम तारागण होकर भक्तों के हृदय रूपी निर्मल आकाश में निवास करें॥42 (क)॥

भगवान राम ने कहा- तथास्तु

नारद का दूसरा प्रश्न

तब बिबाह मैं चाहउँ कीन्हा। प्रभु केहि कारन करै न दीन्हा॥

मैं विवाह करना चाहता था। हे प्रभु! आपने मुझे किस कारण विवाह नहीं करने दिया?

राम का उत्तर

सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा। **भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा॥2॥**

(प्रभु बोले-) हे मुनि! सुनो, मैं तुम्हें हर्ष के साथ कहता हूँ कि जो समस्त आशा-भरोसा छोड़कर केवल मुझको ही भजते हैं,॥2॥

करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी। जिमि बालक राखइ महतारी॥

गह सिसु बच्छ अनल अहि धाई। तहँ राखइ जननी अरगाई॥3॥

मैं सदा उनकी वैसे ही रखवाली करता हूँ, जैसे माता बालक की रक्षा करती है। छोटा बच्चा जब दौड़कर आग और साँप को पकड़ने जाता है, तो वहाँ माता उसे (अपने हाथों) अलग करके बचा लेती है॥3॥

प्रौढ़ भएँ तेहि सुत पर माता। प्रीति करइ नहिं पाछिलि बाता॥

मोरें प्रौढ़ तनय सम ग्यानी। बालक सुत सम दास अमानी॥4॥

सयाना हो जाने पर उस पुत्र पर माता प्रेम तो करती है, परन्तु पिछली बात नहीं रहती (अर्थात् मातृ परायण शिशु की तरह फिर उसको बचाने की चिंता नहीं करती, क्योंकि वह माता पर निर्भर न कर अपनी रक्षा आप करने लगता है)। ज्ञानी मेरे प्रौढ़ (सयाने) पुत्र के समान है और (तुम्हारे जैसा) अपने बल का मान न करने वाला सेवक मेरे शिशु पुत्र के समान है॥4॥

जनहि मोर बल निज बल ताही। दुहु कहँ काम क्रोध रिपु आही॥

यह बिचारि पंडित मोहि भजहीं। पाएहुँ ग्यान भगति नहिं तजहीं॥5॥

मेरे सेवक को केवल मेरा ही बल रहता है और उसे (ज्ञानी को) अपना बल होता है। पर काम-क्रोध रूपी शत्रु तो दोनों के लिए हैं।(भक्त के शत्रुओं को मारने की जिम्मेवारी मुझ पर रहती है, क्योंकि वह मेरे परायण होकर मेरा ही बल मानता है, परन्तु अपने बल को मानने वाले ज्ञानी के

शत्रुओं का नाश करने की जिम्मेवारी मुझ पर नहीं है।) ऐसा विचार कर पंडितजन (बुद्धिमान लोग) मुझको ही भजते हैं। वे ज्ञान प्राप्त होने पर भी भक्ति को नहीं छोड़ते॥5॥

दोहा :

काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि।

तिन्ह महँ अति दारुन दुखद मायारूपी नारि॥43॥

काम, क्रोध, लोभ और मद आदि मोह (अज्ञान) की प्रबल सेना है। इनमें मायारूपिणी (माया की साक्षात् मूर्ति) स्त्री तो अत्यंत दारुण दुःख देने वाली है॥43॥

चौपाई :

सुनु मुनि कह पुरान श्रुति संता। मोह बिपिन कहुँ नारि बसंता॥

जप तप नेम जलाश्रय झारी। होइ ग्रीषम सोषइ सब नारी॥1

हे मुनि! सुनो, पुराण, वेद और संत कहते हैं कि मोह रूपी वन (को विकसित करने) के लिए स्त्री वसंत ऋतु के समान है। जप, तप, नियम रूपी संपूर्ण जल के स्थानों को स्त्री ग्रीष्म रूप होकर सर्वथा सोख लेती है॥1॥

काम क्रोध मद मत्सर भेका। इन्हहि हरषप्रद बरषा एका॥

दुर्बासना कुमुद समुदाई। तिन्ह कहँ सरद सदा सुखदाई॥2॥

काम, क्रोध, मद और मत्सर (डाह) आदि मेंढक हैं। इनको वर्षा ऋतु होकर हर्ष प्रदान करने वाली एकमात्र यही (स्त्री) है। बुरी वासनाएँ कुमुदों के समूह हैं। उनको सदैव सुख देने वाली यह शरद् ऋतु है॥2॥

धर्म सकल सरसीरुह बृंदा। होइ हिम तिन्हहि दहइ सुख मंदा॥

पुनि ममता जवास बहुताई। पलुहइ नारि सिसिर रितु पाई॥3॥

समस्त धर्म कमलों के झुंड हैं। यह नीच (विषयजन्य) सुख देने वाली स्त्री हिमऋतु होकर उन्हें जला डालती है। फिर ममतारूपी जवास का समूह (वन) स्त्री रूपी शिशिर ऋतु को पाकर हरा-भरा हो जाता है॥3॥

पाप उलूक निकर सुखकारी। नारि निबिड़ रजनी अँधियारी॥

बुधि बल सील सत्य सब मीना। बनसी सम त्रिय कहहिं प्रबीना॥4॥

पाप रूपी उल्लुओं के समूह के लिए यह स्त्री सुख देने वाली घोर अंधकारमयी रात्रि है। बुद्धि, बल, शील और सत्य- ये सब मछलियाँ हैं और उन (को फँसाकर नष्ट करने) के लिए स्त्री बंसी के समान है, चतुर पुरुष ऐसा कहते हैं॥4॥

दोहा :

अवगुन मूल सूलप्रद प्रमदा सब दुख खानि।
ताते कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जियँ जानि॥44॥

युवती स्त्री अवगुणों की मूल, पीड़ा देने वाली और सब दुःखों की खान है, इसलिए हे मुनि! मैंने जी में ऐसा जानकर तुमको विवाह करने से रोका था॥44॥

पर मौक़े का फ़ायदा उठाने के लिये, **इसके बाद नारद राम के मुख से संतों के लक्षण जानने का आग्रह करते हैं:**

नारद मुनि का मत

जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी। ग्यान रंक नर मंद अभागी॥
पुनि सादर बोले मुनि नारद। सुनहु राम बिग्यान बिसारद॥2॥

जो मनुष्य भ्रम को त्यागकर ऐसे प्रभु को नहीं भजते, वे ज्ञान के कंगाल, दुर्बुद्धि और अभागे हैं। फिर नारद मुनि आदर सहित बोले- हे विज्ञान-विशारद श्री रामजी! सुनिए-॥2॥
Those who fail to worship such a lord, relinquishing fallacy,
are paupers in wisdom and luckless dullards."

सन्तों के लक्षण

संतन्ह के लच्छन रघुबीरा। कहहु नाथ भव भंजन भीरा॥

हे रघुवीर! हे भव-भय (जन्म-मरण के भय) का नाश करने वाले मेरे नाथ! अब कृपा कर संतों के लक्षण कहिए!
Tell me the distinguishing signs of saintly ones....."

राम उत्तर में कहते हैं-

सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहऊँ। जिन्ह ते मैं उन्ह कें बस रहऊँ॥3॥

हे मुनि! सुनो, मैं संतों के गुणों को कहता हूँ, जिनके कारण मैं उनके वश में रहता हूँ॥3॥

Ram said, “Indeed, sage, I will tell you the virtues
by which the holy hold me firmly in their power.

षट बिकार जित अनघ अकामा। अचल अकिंचन सुचि सुखधामा॥
अमित बोध अनीह मितभोगी। सत्यसार कबि कोबिद जोगी॥4॥

वे संत (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर- इन) छह विकारों (दोषों) को जीते हुए, पापरहित, कामनारहित, निश्चल (स्थिरबुद्धि), अकिंचन (सर्वत्यागी), बाहर-भीतर से पवित्र, सुख के धाम, असीम ज्ञानवान्, इच्छारहित, मिताहारी, सत्यनिष्ठ, कवि, विद्वान, योगी,॥4॥

Victorious over the six sins, faultless, desireless,
unwavering, austere, pure, and grounded in joy,
endlessly wise, without wants, eating but little,
poets, scholars, and yogis devoted to truth

They are masters of the six passions (lust, anger, greed, infatuation, pride and jealousy), sinless, disinterested, firm, possessing nothing, pure(both within and without), full of bliss, of boundless wisdom, desire less, moderate in diet, truthful, inspired, learned and united with God,

सावधान मानद मदहीना। धीर धर्म गति परम प्रबीना॥5॥

सावधान, दूसरों को मान देने वाले, अभिमानरहित, धैर्यवान, धर्म के ज्ञान और आचरण में अत्यंत निपुण,॥5॥

are vigilant, respectful of others, free of pride,
steadfast, supremely skilled in the way of dharma,

Circumspect, bestowing honours to others, free from pride, strong-minded, and highly conversant with course of Dharma (righteousness)

दोहा :

गुनागार संसार दुख रहित बिगत संदेह।
तजि मम चरन सरोज प्रिय तिन्ह कहुँ देह न गेह॥45॥

गुणों के घर, संसार के दुःखों से रहित और संदेहों से सर्वथा छूटे हुए होते हैं। मेरे चरण कमलों को छोड़कर उनको न देह ही प्रिय होती है, न घर ही॥45॥
abode of merit, without worldly sorrow,
and freed from doubt.
Apart from my holy feet, they cherish
neither their bodies nor their homes.

They are abode of virtue, above sorrows of the world and free from doubt. Nothing besides My lotus feet is dear to them, not even their body nor their home.

चौपाई :

निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं। पर गुन सुनत अधिक हरषाहीं॥
सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती। सरल सुभाउ सबहि सन प्रीति॥1॥

कानों से अपने गुण सुनने में सकुचाते हैं, दूसरों के गुण सुनने से विशेष हर्षित होते हैं। सम और शीतल हैं, न्याय का कभी त्याग नहीं करते। सरल स्वभाव होते हैं और सभी से प्रेम रखते हैं॥1॥

Embarrassed to hear of their own virtues,

they greatly rejoice in hearing those of others.

Impartial and calm, never straying from prudence,

they are good natured, and affectionate to all.

They blush to hear themselves praised but feel much delighted to hear others' praises. Even-minded and placid, they never abandon the right course. Guileless by nature and loving,

जप तप ब्रत दम संजम नेमा। गुरु गोबिंद बिप्र पद प्रेमा॥
श्रद्धा छमा मयत्री दाया। मुदिता मम पद प्रीति अमाया॥2॥

वे जप, तप, व्रत, दम, संयम और नियम में रत रहते हैं और गुरु, गोविंद तथा ब्राह्मणों के चरणों में प्रेम रखते हैं। उनमें श्रद्धा, क्षमा, मैत्री, दया, मुदिता (प्रसन्नता) और मेरे चरणों में निष्कपट प्रेम होता है॥2॥

Practising mantra repetition, austerity, restraint, and abstinence,
they love the feet of gurus, Govinda," and holy seers.
Showing faith, forgiveness, friendship, mercy,
and delight, they guilelessly adore my feet 2

-they are given over to prayer, austerity, control of senses, self-denial and religious observances and undertake sacred vows. They are devoted to the feet of Guru, Lord Govinda (Vishnu) and Brahmans. They are full of piety, forgiving, friendly to all, compassionate, cheerful under all circumstances and sincerely devoted to my feet,

बिरति बिबेक बिनय बिग्याना। बोध जथारथ बेद पुराना॥
दंभ मान मद करहिं न काऊ। भूलि न देहिं कुमारग पाऊ॥3॥

तथा वैराग्य, विवेक, विनय, विज्ञान (परमात्मा के तत्व का ज्ञान) और वेद-पुराण का यथार्थ ज्ञान रहता है। वे दम्भ, अभिमान और मद कभी नहीं करते और भूलकर भी कुमार्ग पर पैर नहीं रखते॥3॥

with detachment, discernment, humility, wisdom,
and understanding in accord with Veda and *purana*.
Never indulging in hypocrisy, self-pride, or arrogance,
they do not dream of setting foot on a wrong path.3

They are further characterised by dispassion, discretion, modesty, knowledgeable of truth relating to the God as well as by a correct knowledge of Vedas and Puranas. They take recourse to hypocrisy, pride or arrogance nor set their foot on the evil path even by mistake.

गावहिं सुनहिं सदा मम लीला। हेतु रहित परहित रत सीला॥
मुनि सुनु साधुन्ह के गुन जेते। कहि न सकहिं सादर श्रुति तेते॥4॥

यद्यपि प्रभु के अनेकों नाम हैं और वेद कहते हैं कि वे सब एक से एक बढ़कर हैं, तो भी हे नाथ! रामनाम सब नामों से बढ़कर हो और पाप रूपी पक्षियों के समूह के लिए यह वधिक के समान हो॥4॥

but ever sing and hear of my playful acts,
and are unselfishly devoted to others' welfare.
Sage, the virtues of holy ones are too numerous
for even Sharda and the Veda to extol.

They are ever engaged in singing or hearing My stories and are intent on doing good to others without any consideration. In short, O good sage, the qualities are so numerous that they cannot be exhausted even by Sarda(The Goddess of speech) nor by the Vedas.

नारद का निर्णय

दीप सिखा सम जुबति तन मन जनि होसि पतंग।
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग॥46 ख॥

युवती स्त्रियों का शरीर दीपक की लौ के समान है, हे मन! तू उसका पतिंगा न बन। काम और मद को छोड़कर श्री रामचंद्रजी का भजन कर और सदा सत्संग कर॥46 (ख)

A young girl's body is like the flame of a lamp.

Oh mind! Do not become a hapless moth,

but worship Ram, abandoning lust and pride,

and always keep the company of the holy. 46b

The body of young women is like the flame of a lighting lamp, O mind! Don't be one like the small insect and get burnt in it. Instead, dropping off totally all your desires and pride, worship Shri Ramchandraji and always do remain in the fellowship saints. 46 (b)

किष्किंधा कांड

मित्र के लक्षण

राम सुग्रीव से मिलने के बाद उससे उसके बड़े भाई बालि का ग़लतफ़हमी के कारण किये अत्याचार के कारण महल से भागने एवं किष्किन्धा पर्वत पर निर्वासित जीवन बिताने की कथा सुनते हैं। वे उसे मित्र बना लेते हैं और बालि को उसकी गलती का दंड देने के तैयार हो जाते है। उसी समय वे सुग्रीव को एक सच्चे मित्र का लक्षण बताते हैं। पर सुग्रीव को राम की शक्ति पर शंका होती है, क्योंकि बालि महा प्रकर्मी था दुनियाँ का उस समय का सबसे बड़ा योद्धा जिसने रावण को परास्त किया था।

राम ने सुग्रीव की शंका का समाधान के लिये कहा-

दोहा :

सुनु सुग्रीव मारिहउँ बालिहि एकहिं बान।
ब्रह्म रुद्र सरनागत गएँ न उबरिहिं प्रान॥6॥

(राम ने कहा-) हे सुग्रीव! सुनो, मैं एक ही बाण से बालि को मार डालूँगा। ब्रह्मा और रुद्र की शरण में जाने पर भी उसके प्राण न बचेंगे॥6॥

(Ram said), 'Listen, Sugriva, I will kill
Baali with a single arrow,
Even if he takes refuge with Brahma or Rudra,
His life will not be saved.

चौपाई :

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी॥
निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुख रज मेरु समाना॥1॥

जो लोग मित्र के दुःख से दुःखी नहीं होते, उन्हें देखने से ही बड़ा पाप लगता है। अपने पर्वत के समान दुःख को धूल के समान और मित्र के धूल के समान दुःख को सुमेरु (बड़े भारी पर्वत) के समान जाने॥1॥

Those who are not distressed at a friend's sorrow,

Merely to look upon them incurs sin.

The mountain of one's own troubles should appear as trifling as a speck of dust,

While a friend's sorrows, though small small as a speck of dust, should appear as great as Meru.

जिन्ह कें असि मति सहज न आई। ते सठ कत हठि करत मिताई॥
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा। गुन प्रगटै अवगुनन्हि दुरावा॥2॥

जिन्हें स्वभाव से ही ऐसी बुद्धि प्राप्त नहीं है, वे मूर्ख हठ करके क्यों किसी से मित्रता करते हैं? मित्र का धर्म है कि वह मित्र को बुरे मार्ग से रोककर अच्छे मार्ग पर चलावे। उसके गुण प्रकट करे और अवगुणों को छिपावे॥2॥

Those who do not inherently understand this,

Why do such fools insist upon friendship?

To stop from treading the wrong path, and help to walk the path of virtue,

To make manifest good qualities and conceal the flaws,

देत लेत मन संक न धरई। बल अनुमान सदा हित करई॥
बिपति काल कर सतगुन नेहा। श्रुति कह संत मित्र गुन एहा॥3॥

देने-लेने में मन में शंका न रखे। अपने बल के अनुसार सदा हित ही करता रहे। विपत्ति के समय तो सदा सौगुना स्नेह करे। वेद कहते हैं कि संत (श्रेष्ठ) मित्र के गुण (लक्षण) ये हैं॥3॥

To give and take without doubt or suspicion in one's mind,

To always help with all one's power,

And, times of misfortune, to be a hundred times more loving–

These, declare the Vedas, are the qualities of a good friend.

आगें कह मृदु बचन बनाई। पाछें अनहित मन कुटिलाई॥
जाकर चित अहि गति सम भाई। अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई॥4॥

जो सामने तो बना-बनाकर कोमल वचन कहता है और पीठ-पीछे बुराई करता है तथा मन में कुटिलता रखता है- हे भाई! (इस तरह) जिसका मन साँप की चाल के समान टेढ़ा है, ऐसे कुमित्र को तो त्यागने में ही भलाई है॥4॥

He who falsely speaks sweet words to one's face,

But, deceitful and duplicitous, harms one behind one's back,

He whose heart is crooked as a snake's movement, brother–-

It is best to leave such an evil friend.

सेवक सठ नृप कृपन कुनारी। कपटी मित्र सूल सम चारी॥
सखा सोच त्यागहु बल मोरें। सब बिधि घटब काज मैं तोरें॥5॥

मूर्ख सेवक, कंजूस राजा, कुलटा स्त्री और कपटी मित्र- ये चारों शूल के समान पीड़ा देने वाले हैं। हे सखा! मेरे बल पर अब तुम चिंता छोड़ दो। मैं सब प्रकार से तुम्हारे काम आऊँगा (तुम्हारी सहायता करूँगा)॥5॥

A foolish servant, a miserly king, a bad wife,

And a deceitful friend–as painful as thorns are these four.

Dear friend, on the strength of my support, give up sorrow,

For I will serve your cause in every way.'

******

लंका कांड

राम का युद्ध विजय सूत्र

हर व्यक्ति का जीवन एक महान युद्ध है और इस युद्ध में सफलता के लिये हमारे चरित्र और व्यवहार में कुछ स्वभाविक गुण होने चाहिये.भगवद् गीता पूरी इसी विषय पर विस्तार से विवेचन है. पर तुलसीदास के रामचरितमानस में भी एक ऐसा ही विवेचन है. विभीषण के प्रश्न के उत्तर में पुरोषोत्तम राम की वाणी में, बहुत संक्षिप्त पर बहुत पूर्ण। राम का यह विजय सूत्र विभीषण की उस रावण से विजय पर शंका करने का उत्तर है।

विभीषण की शंका

रावनु रथी विरथ रघुबीरा। देखि बिभीषन भयउ अधीरा॥

“नाथ न रथ न नहीं तन पद त्राना, केहि प्रकार जीतब बलवाना।”

हे नाथ! आपके न रथ है, न तन की रक्षा करने वाला कवच है और न जूते ही हैं। वह बलवान् वीर रावण किस प्रकार जीता जाएगा?

Ravan had a chariot and Raghu hero did not;
observing this, Vibhishan grew anxious,
“Master, with no chariot, shield, or even footwear,
how will you triumph over that mighty hero?”

Vibhishana spelt out his doubt, “My Lord, You have neither chariot nor any protective shields either for Your body (armour) or for Your feet (shoes). How , then can You expect to conquer this mighty mighty hero (Ravana)?

राम का उत्तर

“सुनहु सखा”, कह कृपानिधाना।**जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना॥**”

कृपानिधान श्री रामजी ने कहा- हे सखे! सुनो, जिससे जय होती है, वह रथ दूसरा ही है॥

The ocean of mercy replied, “Listen, friend:
the chariot of victory is of a different sort.

*

Shri Ram favouring all said, “Listen, friend! The chariot which leads one to victory is quite another.

**

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। **सत्य सील** दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल बिबेक दम परहित घोरे। **छमा कृपा समता** रजु जोरे॥३॥

शौर्य और धैर्य उस रथ के पहिए हैं। सत्य और शील (सदाचार) उसकी मजबूत ध्वजा और पताका हैं। बल, विवेक, दम (इंद्रियों का वश में होना) और परोपकार- ये चार उसके घोड़े हैं, जो क्षमा, दया और समता रूपी डोरी से रथ में जोड़े हुए हैं॥3॥

Valour and fortitude are that vehicle’s wheel,
truth and virtuous conduct, it’s upright standards.
It’s horses–strength, discernment, restraint, and altruism—
are harnessed by forgiveness, mercy, and equanimity,

Valour and fortitude are the wheels of that chariot, while truthfulness and good conduct are its enduring banner and standard. Even so, strength, discretion, self control and benevolence are its four horses that has been joined to the chariot with the cords of forgiveness, compassion, and evenness of mind.

*****

ईस भजनु सारथी सुजाना। **बिरति** चर्म **संतोष** कृपाना॥
दान परसु **बुधि** सक्ति प्रचंडा।**बर बिग्यान** कठिन कोदंडा॥४॥

ईश्वर का भजन ही (उस रथ को चलाने वाला) चतुर सारथी है। वैराग्य ढाल है और संतोष तलवार है। दान फरसा है, बुद्धि प्रचण्ड शक्ति है, श्रेष्ठ विज्ञान कठिन धनुष है॥४॥

and devotion to God is their skilled driver.

Detachment is its hero's shield, contentment his sword
charity his battle ax, knowledge his kin spear,
and true wisdom is his mighty bow.

Adoration of God is the expert charioteer, dispassion the shield and contentment, the sword. Again, charity, is the axe; reason, the fierce lance; and the highest wisdom, the relentless bow.

*

अमल अचल मन त्रोन समाना। **समजमनियम** सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा। एहि सम बिजय उपाय न दूजा॥५॥

निर्मल (पापरहित) और अचल (स्थिर) मन तरकस के समान है। शम (मन का वश में होना), (अहिंसादि) यम और (शौचादि) नियम- ये बहुत से बाण हैं। ब्राह्मणों और गुरु का पूजन अभेद्य कवच है।५।। इसके समान विजय का दूसरा उपाय नहीं है।

A firm and flawless heart is his quiver;
self-control, penance, and discipline his many arrows;
reverence for Brahmans and guru his impenetratable armor.
No other means of victory can compare to this,

A pure and steady mind is like a quiver; while quietude and the various forms of abstinence (Yamas) and religious observance(Niyamas) are a sheath of arrows. Homage to the Brahamans and to one's preceptor is impenetrable coat of mail; There is no other equipment for victory as efficacious as this.

सखा धर्ममय अस रथ जाके।
जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें॥६॥

friend; one who has such a dharma-chariot
can nowhere be defeated by any foe. 6

महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर।
जाकें अस रथ होइ दृढ सुनहु सखा मतिधीर॥८०क॥

Even that awful enemy–invincible samsara–
can be bested by the hero
who possesses this infallible chariot.
Know this, my friend of firm wisdom.80a

*****

उत्तर कांड

रामराज्य

तुलसीदास जी ने राम के आदर्श राज्य व्यवस्था का वर्णन किया है। महात्मा गांधी भारत में स्वतंत्रता के बाद वैसे ही **'रामराज्य'** को लाने का सपना देखा था और कहा भी था।

चौपाई :

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥1॥

'रामराज्य' में दैहिक, दैविक और भौतिक ताप किसी को नहीं व्यापते। सब मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं और वेदों में बताई हुई नीति (मर्यादा) में तत्पर रहकर अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं॥1॥

चारिउ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं॥
राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी॥2॥

धर्म अपने चारों चरणों (सत्य, शौच, दया और दान) से जगत् में परिपूर्ण हो रहा है, स्वप्न में भी कहीं पाप नहीं है। पुरुष और स्त्री सभी रामभक्ति के परायण हैं और सभी परम गति (मोक्ष) के अधिकारी हैं॥2॥

अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना॥3॥

छोटी अवस्था में मृत्यु नहीं होती, न किसी को कोई पीड़ा होती है। सभी के शरीर सुंदर और निरोग हैं। न कोई दरिद्र है, न दुःखी है और न दीन ही है। न कोई मूर्ख है और न शुभ लक्षणों से हीन ही है॥3॥

सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी॥
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट सयानी॥4॥

सभी दम्भरहित हैं, धर्मपरायण हैं और पुण्यात्मा हैं। पुरुष और स्त्री सभी चतुर और गुणवान् हैं। सभी गुणों का आदर करने वाले और पण्डित हैं तथा सभी ज्ञानी हैं। सभी कृतज्ञ (दूसरे के किए हुए उपकार को मानने वाले) हैं, कपट-चतुराई (धूर्तता) किसी में नहीं है॥4॥

दोहा :

राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं।
काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं॥21॥

(काकभुशुण्डिजी कहते हैं-) हे पक्षीराज गुरुड़जी! सुनिए। श्री राम के राज्य में जड़, चेतन सारे जगत् में काल, कर्म स्वभाव और गुणों से उत्पन्न हुए दुःख किसी को भी नहीं होते (अर्थात् इनके बंधन में कोई नहीं है)॥21॥

चौपाई :

भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला॥
भुअन अनेक रोम प्रति जासू। यह प्रभुता कछु बहुत न तासू॥1॥

अयोध्या में श्री रघुनाथजी सात समुद्रों की मेखला (करधनी) वाली पृथ्वी के एक मात्र राजा हैं। जिनके एक-एक रोम में अनेकों ब्रह्मांड हैं, उनके लिए सात द्वीपों की यह प्रभुता कुछ अधिक नहीं है॥1॥

सब उदार सब पर उपकारी। बिप्र चरन सेवक नर नारी॥
एकनारि ब्रत रत सब झारी। ते मन बच क्रम पति हितकारी॥4॥

सभी नर-नारी उदार हैं, सभी परोपकारी हैं और ब्राह्मणों के चरणों के सेवक हैं। सभी पुरुष मात्र एक पत्नीव्रती हैं। इसी प्रकार स्त्रियाँ भी मन, वचन और कर्म से पति का हित करने वाली हैं॥4॥

दोहा :

दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।
जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र कें राज॥22॥

श्री रामचंद्रजी के राज्य में दण्ड केवल संन्यासियों के हाथों में है और भेद नाचने वालों के नृत्य समाज में है और 'जीतो' शब्द केवल मन के जीतने के लिए ही सुनाई पड़ता है (राजनीति में शत्रुओं को जीतने तथा चोर-डाकुओं आदि को दमन करने के लिए साम, दान, दण्ड और भेद- ये चार उपाय किए जाते हैं। रामराज्य में कोई शत्रु है ही नहीं, इसलिए 'जीतो' शब्द केवल मन के

जीतने के लिए कहा जाता है। कोई अपराध करता ही नहीं, इसलिए दण्ड किसी को नहीं होता, दण्ड शब्द केवल संन्यासियों के हाथ में रहने वाले दण्ड के लिए ही रह गया है तथा सभी अनुकूल होने के कारण भेदनीति की आवश्यकता ही नहीं रह गई। भेद, शब्द केवल सुर-ताल के भेद के लिए ही कामों में आता है।)॥22॥

चौपाई :

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन। रहहिं एक सँग गज पंचानन॥
खग मृग सहज बयरु बिसराई। सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई॥1॥
वनों में वृक्ष सदा फूलते और फलते हैं। हाथी और सिंह (वैर भूलकर) एक साथ रहते हैं। पक्षी और पशु सभी ने स्वाभाविक वैर भुलाकर आपस में प्रेम बढ़ा लिया है॥1॥

कूजहिं खग मृग नाना बृंदा। अभय चरहिं बन करहिं अनंदा॥
सीतल सुरभि पवन बह मंदा। गुंजत अलि लै चलि मकरंदा॥2॥

पक्षी कूजते (मीठी बोली बोलते) हैं, भाँति-भाँति के पशुओं के समूह वन में निर्भय विचरते और आनंद करते हैं। शीतल, मन्द, सुगंधित पवन चलता रहता है। भौंरे पुष्पों का रस लेकर चलते हुए गुंजार करते जाते हैं॥2॥

लता बिटप मागें मधु चवहीं। मनभावतो धेनु पय स्रवहीं॥
ससि संपन्न सदा रह धरनी। त्रेताँ भइ कृतजुग कै करनी॥3॥

बेलें और वृक्ष माँगने से ही मधु (मकरन्द) टपका देते हैं। गायें मनचाहा दूध देती हैं। धरती सदा खेती से भरी रहती है। त्रेता में सत्ययुग की करनी (स्थिति) हो गई॥3॥

प्रगटीं गिरिन्ह बिबिधि मनि खानी। जगदातमा भूप जग जानी॥
सरिता सकल बहहिं बर बारी। सीतल अमल स्वाद सुखकारी॥4॥

समस्त जगत् के आत्मा भगवान् को जगत् का राजा जानकर पर्वतों ने अनेक प्रकार की मणियों की खानें प्रकट कर दीं। सब नदियाँ श्रेष्ठ, शीतल, निर्मल और सुखप्रद स्वादिष्ट जल बहाने लगीं॥।4॥

सरसिज संकुल सकल तड़ागा। अति प्रसन्न दस दिसा बिभागा॥5॥

सब तालाब कमलों से परिपूर्ण हैं। दसों दिशाओं के विभाग (अर्थात् सभी प्रदेश) अत्यंत प्रसन्न हैं॥5॥

दोहा :

बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहि काज।
मागें बारिद देहिं जल रामचंद्र कें राज॥23॥

श्री रामचंद्रजी के राज्य में चंद्रमा अपनी (अमृतमयी) किरणों से पृथ्वी को पूर्ण कर देते हैं। सूर्य उतना ही तपते हैं, जितने की आवश्यकता होती है और मेघ माँगने से यानि जब जहाँ जितना चाहिए उतना ही, जल देते हैं॥23॥

पति अनुकूल सदा रह सीता। सोभा खानि सुसील बिनीता॥
जानति कृपासिंधु प्रभुताई॥ सेवति चरन कमल मन लाई॥2॥

शोभा की खान, सुशील और विनम्र सीताजी सदा पति के अनुकूल रहती हैं। वे कृपासागर श्री रामजी की प्रभुता (महिमा) को जानती हैं और मन लगाकर उनके चरणकमलों की सेवा करती हैं॥2॥

जद्यपि गृहँ सेवक सेवकिनी। बिपुल सदा सेवा बिधि गुनी॥
निज कर गृह परिचरजा करई। रामचंद्र आयसु अनुसरई॥3॥

यद्यपि घर में बहुत से (अपार) दास और दासियाँ हैं और वे सभी सेवा की विधि में कुशल हैं, तथापि (स्वामी की सेवा का महत्व जानने वाली) श्री सीताजी घर की सब सेवा अपने ही हाथों से करती हैं और श्री रामचंद्रजी की आज्ञा का अनुसरण करती हैं॥3॥

जेहि बिधि कृपासिंधु सुख मानइ। सोइ कर श्री सेवा बिधि जानइ॥
कौसल्यादि सासु गृह माहीं। सेवइ सबन्हि मान मद नाहीं॥4॥

कृपासागर श्री रामचंद्रजी जिस प्रकार से सुख मानते हैं, श्री जी वही करती हैं, क्योंकि वे सेवा की विधि को जानने वाली हैं। घर में कौसल्या आदि सभी सासुओं की सीताजी सेवा करती हैं, उन्हें किसी बात का अभिमान और मद नहीं है॥4॥

चौपाई :

सेवहिं सानकूल सब भाई। राम चरन रति अति अधिकाई॥
प्रभु मुख कमल बिलोकत रहहीं। कबहुँ कृपाल हमहि कछु कहहीं॥1॥

सब भाई अनुकूल रहकर उनकी सेवा करते हैं। श्री रामजी के चरणों में उनकी अत्यंत अधिक प्रीति है। वे सदा प्रभु का मुखारविन्द ही देखते रहते हैं कि कृपालु श्री रामजी कभी हमें कुछ सेवा करने को कहें॥1॥

राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती। नाना भाँति सिखावहिं नीती॥
हरषित रहहिं नगर के लोगा। करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा॥2॥

श्री रामचंद्रजी भी भाइयों पर प्रेम करते हैं और उन्हें नाना प्रकार की नीतियाँ सिखलाते हैं। नगर के लोग हर्षित रहते हैं और सब प्रकार के देवताओं को भी कठिनता से प्राप्त होने योग्य, भोग भोगते हैं॥2॥

दुइ सुत सुंदर सीताँ जाए। लव कुस बेद पुरानन्ह गाए॥3॥

सीताजी के लव और कुश ये दो पुत्र उत्पन्न हुए, जिनका वेद-पुराणों ने वर्णन किया है॥3॥

दोउ बिजई बिनई गुन मंदिर। हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर॥
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे। भए रूप गुन सील घनेरे॥4॥

वे दोनों ही विजयी, विख्यात योद्धा, नम्र और गुणों के धाम हैं और अत्यंत सुंदर हैं, मानो श्री हरि के प्रतिबिम्ब ही हों। दो-दो पुत्र सभी भाइयों के हुए, जो बड़े ही सुंदर, गुणवान् और सुशील थे॥4॥

भरत के अनुरोध पर राम संत असन्त वर्णन

एक बार जब चारों भाई भक्त हनुमान के साथ थे, भरत ने श्री राम से संत असंत के आचरणों को अलग अपने शब्दों में बताने का आग्रह किया।

भरत कहते हैं-

चौपाई :

करउँ कृपानिधि एक ढिठाई। मैं सेवक तुम्ह जन सुखदाई॥
संतन्ह कै महिमा रघुराई। बहु बिधि बेद पुरानन्ह गाई॥1॥

हे कृपानिधान! मैं आप से एक धृष्टता करता हूँ। मैं सेवक हूँ और आप सेवक को सुख देने वाले हैं, इससे मेरी धृतष्ठता को क्षमा कीजिए और मेरे प्रश्न का उत्तर देकर सुख दीजिए)। हे रघुनाथजी वेद-पुराणों ने संतों की महिमा बहुत प्रकार से गाई है॥1॥

Abode of mercy, I dare presume to ask you a question,

For I am your servant and you are the benefactor of your devotees.

The Vedas and Puranas have sung in many ways

The greatness of the saints, Raghurai.

श्रीमुख तुम्ह पुनि कीन्हि बड़ाई। तिन्ह पर प्रभुहि प्रीति अधिकाई॥
सुना चहउँ प्रभु तिन्ह कर लच्छन। कृपासिंधु गुन ग्यान बिचच्छन॥2॥

आपने भी अपने श्रीमुख से उनकी बड़ाई की है और उन पर प्रभु (आप) का प्रेम भी बहुत है। हे प्रभो! मैं उनके लक्षण सुनना चाहता हूँ। आप कृपा के समुद्र हैं और गुण तथा ज्ञान में अत्यंत निपुण हैं॥2॥

You, too, have praised them with your gracious mouth,

And hold great affection for them, Lord.

I would like to know, my master, of their special qualities.

O ocean of mercy, you are clear-sighted and recognise virtue and wisdom.

संत असंत भेद बिलगाई। प्रनतपाल मोहि कहहु बुझाई॥

हे शरणागत का पालन करने वाले! संत और असंत के भेद अलग-अलग करके मुझको समझाकर कहिए।

So, protector of the suppliant, explain to me

The attributes that separate the good from the evil.

राम पहले संत के आचरण करते हैं-

संतन्ह के लच्छन सुनु भ्राता। अगनित श्रुति पुरान बिख्याता॥3॥

हे भाई! संतों के लक्षण (गुण) असंख्य हैं, जो वेद और पुराणों में प्रसिद्ध हैं॥3॥

(SriRam said,) Listen, brother, to the attributes of the saints,
Innumerable and celebrated in the Vedas and Puranas.

संत असंतन्हि कै असि करनी। जिमि कुठार चंदन आचरनी॥
काटइ परसु मलय सुनु भाई। निज गुन देइ सुगंध बसाई॥4॥

संत और असंतों की करनी ऐसी है जैसे कुल्हाड़ी और चंदन का आचरण होता है। हे भाई! सुनो, कुल्हाड़ी चंदन को काटती है (क्योंकि उसका स्वभाव या काम ही वृक्षों को काटना है), किंतु चंदन अपने स्वभाववश अपना गुण देकर उसे (काटने वाली कुल्हाड़ी को) सुगंध से सुवासित कर देता है॥4॥

The doings of the saints and the wicked
Are like the behaviour of the axe and the sandalwood tree,
For, brother, the axe cuts down the sandalwood tree,
But the tree imparts it's own virtue to the axe by infusing it with fragrance.

दोहा :

ताते सुर सीसन्ह चढ़त जग बल्लभ श्रीखंड।
अनल दाहि पीटत घनहिं परसु बदन यह दंड॥37॥

इसी गुण के कारण चंदन देवताओं के सिरों पर चढ़ता है और जगत् का प्रिय हो रहा है और कुल्हाड़ी के मुख को यह दंड मिलता है कि उसको आग में जलाकर फिर घन से पीटते हैं॥37॥

That is why sandalwood marks the foreheads of the gods,
And is beloved of the world,
While the axe, for its punishment,
Is heated in fire and beaten into shape.37

चौपाई :

बिषय अलंपट सील गुनाकर। पर दुख दुख सुख सुख देखे पर॥
सम अभूतरिपु बिमद बिरागी। लोभामरष हरष भय त्यागी॥1॥

संत विषयों में लंपट (लिप्त) नहीं होते, शील और सद्गुणों की खान होते हैं, उन्हें पराया दुःख देखकर दुःख और सुख देखकर सुख होता है। वे (सबमें, सर्वत्र, सब समय) समता रखते हैं, उनके मन कोई उनका शत्रु नहीं है। वे मद से रहित और वैराग्यवान् होते हैं तथा लोभ, क्रोध, हर्ष और भय का त्याग किए हुए रहते हैं॥1॥

Indifferent to worldly pleasures, good- natured and virtuous,
Sorrowful in the sorrow of others, joyful to see their joy,
Equable, without enemies, free of pride and desire,
Having relinquished greed, anger, joy and fear,

कोमलचित दीनन्ह पर दाया। मन बच क्रम मम भगति अमाया॥
सबहि मानप्रद आपु अमानी। भरत प्रान सम मम ते प्रानी॥2॥

उनका चित्त बड़ा कोमल होता है। वे दीनों पर दया करते हैं तथा मन, वचन और कर्म से मेरी निष्कपट (विशुद्ध) भक्ति करते हैं। सबको सम्मान देते हैं, पर स्वयं मानरहित होते हैं। हे भरत! वे प्राणी (संतजन) मेरे प्राणों के समान हैं॥2॥
Tender-hearted, compassionate to the afflicted,
Sincerely devoted to Me in thought , word and deed,
Paying honour to others, but taking none for themselves–
Bharat, such beings are as dear to me as life.

बिगत काम मम नाम परायन। सांति बिरति बिनती मुदितायन॥
सीतलता सरलता मयत्री। द्विज पद प्रीति धर्म जनयत्री॥3॥

उनको कोई कामना नहीं होती। वे मेरे नाम के परायण होते है। शांति, वैराग्य, विनय और प्रसन्नता के घर होते हैं। उनमें शीलता, सरलता, सबके प्रति मित्र भाव और ब्राह्मण के चरणों में प्रीति होती है, जो धर्मों को उत्पन्न करने वाली है॥3॥
Free of all desires, and wholly devoted to My name,
They are happy abodes of tranquility, restraint and humility.
Gentleness, simplicity, goodwill, towards all,
Devotion to Brahmans, the source of all dharma–-

ए सब लच्छन बसहिं जासु उर। जानेहु तात संत संतत फुर॥
सम दम नियम नीति नहिं डोलहिं। परुष बचन कबहूँ नहिं बोलहिं॥4॥

हे तात! ये सब लक्षण जिसके हृदय में बसते हों, उसको सदा सच्चा संत जानना। जो शम (मन के निग्रह), दम (इंद्रियों के निग्रह), नियम और नीति से कभी विचलित नहीं होते और मुख से कभी कठोर वचन नहीं बोलते,॥4॥
He is whose hearts all these qualities abide,
Always know him for a true saint, dear brother.
Their calm, self-restraint, piety and moral principles and waver,
And never do they speak harsh or unkind words.

दोहा :

निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पद कंज।
ते सज्जन मम प्रानप्रिय गुन मंदिर सुख पुंज॥38॥

जिन्हें निंदा और स्तुति (बड़ाई) दोनों समान हैं और मेरे चरणकमलों में जिनकी ममता है, वे गुणों के धाम और सुख की राशि संतजन मुझे प्राणों के समान प्रिय हैं॥38॥
They who regard criticism and praise alike,
And are attached only to My lotus feet–
Such good men, in whom reside virtue and bliss,
Are as dear to Me as life. 38

राम का असन्तों के आचरण वर्णन

चौपाई :

सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ। भूलेहुँ संगति करिअ न काऊ॥
तिन्ह कर संग सदा दुखदाई। जिमि कपिलहि घालइ हरहाई॥1॥

अब असंतों दुष्टों का स्वभाव सुनो, कभी भूलकर भी उनकी संगति नहीं करनी चाहिए। उनका संग सदा दुःख देने वाला होता है। जैसे हरहाई (बुरी जाति की) गाय कपिला (सीधी और दुधार) गाय को अपने संग से नष्ट कर डालती है॥1॥
Listen now to the attributes of the wicked,
With whom no one should associate even by mistake.
Association with the always bring suffering,
Like a troublesome cow that ruins a Kapila cow with her company.

खलन्ह हृदयँ अति ताप बिसेषी। जरहिं सदा पर संपति देखी॥
जहँ कहुँ निंदा सुनहिं पराई। हरषहिं मनहुँ परी निधि पाई॥2॥

बदुष्टों के हृदय में बहुत अधिक संताप रहता है। वे पराई संपत्ति (सुख) देखकर सदा जलते रहते हैं। वे जहाँ कहीं दूसरे की निंदा सुन पाते हैं, वहाँ ऐसे हर्षित होते हैं मानो रास्ते में पड़ी निधि (खजाना) पा ली हो॥2॥

The heart of the wicked is filled with terrible agony,
For it is ever consumed with envy at the sight of another's prosperity
Wherever they hear another reviled,
They are as delighted as though they have found a treasure lying in the road.

काम क्रोध मद लोभ परायन। निर्दय कपटी कुटिल मलायन॥
बयरु अकारन सब काहू सों। जो कर हित अनहित ताहू सों॥3॥

वे काम, क्रोध, मद और लोभ के परायण तथा निर्दयी, कपटी, कुटिल और पापों के घर होते हैं। वे बिना ही कारण सब किसी से वैर किया करते हैं। जो भलाई करता है उसके साथ बुराई भी करते हैं॥3॥

Completely possessed by lust, anger, pride, and greed,
They are cruel, deceitful, crooked and impure.
They bear ill-will towards all without reason,
And hurt even those who are good to them.

झूठइ लेना झूठइ देना। झूठइ भोजन झूठ चबेना।
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा। खाइ महा अहि हृदय कठोरा॥4॥

उनका झूठा ही लेना और झूठा ही देना होता है। झूठा ही भोजन होता है और झूठा ही चबेना होता है। (अर्थात् वे लेने-देने के व्यवहार में झूठ का आश्रय लेकर दूसरों का हक मार लेते हैं अथवा झूठी डींग हाँका करते हैं कि हमने लाखों रुपए ले लिए, करोड़ों का दान कर दिया। इसी प्रकार खाते हैं चने की रोटी और कहते हैं कि आज खूब माल खाकर आए। अथवा चबेना चबाकर रह जाते हैं और कहते हैं हमें बढ़िया भोजन से वैराग्य है, इत्यादि। मतलब यह कि वे सभी बातों में झूठ ही बोला करते हैं।) जैसे मोर साँपों को भी

खा जाता है। वैसे ही वे भी ऊपर से मीठे वचन बोलते हैं। (परंतु हृदय के बड़े ही निर्दयी होते हैं)॥4॥

They are false in their giving, false in their taking,
False in every matter, great or small.
They speak sweet words but have hard hearts,
Like the peacock that eats venomenous snakes.

दोहा :

पर द्रोही पर दार रत पर धन पर अपबाद।
ते नर पाँवर पापमय देह धरें मनुजाद॥39॥

वे दूसरों से द्रोह करते हैं और पराई स्त्री, पराए धन तथा पराई निंदा में आसक्त रहते हैं। वे पामर और पापमय मनुष्य नर शरीर धारण किए हुए राक्षस ही हैं॥39॥

They are hostile to their neighbours , covet the wives

And wealth of others and speak ill of everyone.

Such vile and sinful men

Are man-eating demons incarnate.39

,

चौपाई :

लोभइ ओढ़न लोभइ डासन। सिस्नोदर पर जमपुर त्रास न॥
काहू की जौं सुनहिं बड़ाई। स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई॥1॥

लोभ ही उनका ओढ़ना और लोभ ही बिछौना होता है (अर्थात् लोभ ही से वे सदा घिरे हुए रहते हैं)। वे पशुओं के समान आहार और मैथुन के ही परायण होते हैं, उन्हें यमपुर का

भय नहीं लगता। यदि किसी की बड़ाई सुन पाते हैं, तो वे ऐसी (दुःखभरी) साँस लेते हैं मानों उन्हें जूड़ी आ गई हो॥1॥
Greed is the sum total of their existence,
They are lecherous and gluttonous, but have no fear of hell.
If they anyone being praised,
They sigh as though they have caught a fever,

जब काहू कै देखहिं बिपती। सुखी भए मानहुँ जग नृपती॥
स्वारथ रत परिवार बिरोधी। लंपट काम लोभ अति क्रोधी॥2॥

और जब किसी की विपत्ति देखते हैं, तब ऐसे सुखी होते हैं मानो जगत्‌भर के राजा हो गए हों। वे स्वार्थपरायण, परिवार वालों के विरोधी, काम और लोभ के कारण लंपट और अत्यंत क्रोधी होते हैं॥2॥
And when see someone in trouble,
They are as happy as though they have been made kings of the world.
Steeped in self- interest, against their own families,
They are dissolute, avaricious and bad tempered.

मातु पिता गुर बिप्र न मानहिं। आपु गए अरु घालहिं आनहिं॥
करहिं मोह बस द्रोह परावा। संत संग हरि कथा न भावा॥3॥

वे माता, पिता, गुरु और ब्राह्मण किसी को नहीं मानते। आप तो नष्ट हुए ही रहते हैं, (साथ ही अपने संग से) दूसरों को भी नष्ट करते हैं। मोहवश दूसरों से द्रोह करते हैं। उन्हें न संतों का संग अच्छा लगता है, न भगवान्‌ की कथा ही सुहाती है॥3॥
They respect neither their mother nor father, and have no regard
for their guru or Brahmans.
Themselves ruined, they ruin others too.
Deluded and foolish, they are hostile to others,
And take no pleasure of the company of the good or in discourses
about Hari

अवगुन सिंधु मंदमति कामी। बेद बिदूषक परधन स्वामी॥
बिप्र द्रोह पर द्रोह बिसेषा। दंभ कपट जियँ धरें सुबेषा॥4॥

वे अवगुणों के समुद्र, मन्दबुद्धि, कामी (रागयुक्त), वेदों के निंदक और जबर्दस्ती पराए धन के स्वामी बन जाते हैं। वे दूसरों से द्रोह तो करते ही हैं, परंतु ब्राह्मण द्रोह विशेषता से करते हैं। उनके हृदय में दम्भ और कपट भरा रहता है, परंतु वे ऊपर से सुंदर वेष धारण किए रहते हैं॥4॥

Ocean of vice, dull-witted, degenerate,
They mock the Vedas, lay claim to wealth of others;
And are especially hostile to Brahmans.
They pretend to be good, but hold trickery and deceit in their hearts

---

(Such vile and wicked men …….will appear in hordes in the Kaliyug)

राजा रामजी का प्रजा को उपदेश

दुर्भाग्य से भारत के हिन्दू राजाओं ने कभी भी राम के चरित्र को अपना आदर्श नहीं माना और यही उनके समय के साथ कमजोर होने का कारण हुआ। वे कभी एक पत्नी ब्रत नहीं रहे, न दो बच्चों तक अपने को सीमित रखा। यहाँ उन्होंने विदेशियों का अनुकरण किया। और अन्तरमहल की आपसी द्वेष और प्रतिद्वन्दिता के कारण वे कमजोर होते गये। साथ ही प्रजा या प्रजा के ज्ञानी व्यक्तिओं से संवाद की कोई ज़रूरत ही नहीं समझी। न किसी राजनीति और राज्य के लिये आवश्यक विधाओं में पकड़ रखनेवाले के प्रतिष्ठित विद्वानों का मंत्रीमंडल बनाया। उनके सिपाहसालारों में एक दूसरे से केवल ही होड़ हुई दूसरों को नीचा दिखाने की। न मित्र राजाओं का संगठन बनाने की कोशिश हुई विदेशी आक्रान्ताओं का सामना करने की। बल्कि अपने ही लोगों ने व्यक्तिगत स्वार्थ के उनके साथ हो गये। चन्द्रगुप्त और अशोक के बाद कोई अखंड भारत का

शासक ही नहीं हुआ। प्रजा के सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन में पतन होता गया क्योंकि पठन पाठन का काम केवल एक जाति आधारित वर्ग को सौंप दिया गया, जो समय के साथ ज्ञानवर्धक का महत्व छोड़ कर्मकांड को बढ़ावा देने और अपनी आय बढ़ाने में लगता गया। पूरा सामाज बंटता गया और अल्पज्ञानी या अज्ञानी आमलोगों को बेवकूफ बना अपना उल्लू सीधा करते रहे और सम्पन्न होते रहे। आम समाज में धार्मिक आचार संहिता पर ज़ोर नहीं दिया गया और अनुशासित जीवन की प्राथमिकता भी सफलता की सीढ़ी की तरह नहीं बताया जिसका देश के प्राचीन ज्ञानी ऋषियों ने अर्जन किया था और आमलोगों को बताया था जो उपनिषदों और भगवद्गीता या अन्य ग्रंथों में मिलता है। नई पीढ़ी के राम के चरित्र पर ढालने का प्रयत्न नहीं किया गया और आजतक उसी गिरावट का सिलसिला चलता जा रहा है। तुलसीदास ने राम के प्रजा के संवाद और बाद में कागभुसुंडी द्वारा कलिकाल के वर्णन बताया है।

एक बार श्री रघुनाथजी के बुलाए हुए गुरु वशिष्ठजी, ब्राह्मण और अन्य सब नगर निवासी सभा में आए। जब गुरु, मुनि, ब्राह्मण तथा अन्य सब सज्जन यथायोग्य बैठ गए, तब भक्तों के जन्म-मरण को मिटाने वाले श्री रामजी वचन बोले-॥1॥

सुनहु सकल पुरजन मम बानी। कहउँ न कछु ममता उर आनी॥
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई। सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई॥2॥

-

हे समस्त नगर निवासियों! मेरी बात सुनिए। यह बात मैं हृदय में कुछ ममता लाकर नहीं कहता हूँ। न अनीति की बात कहता हूँ और न इसमें कुछ प्रभुता ही है, इसलिए (संकोच और भय छोड़कर, ध्यान देकर) मेरी बातों को सुन लो और (फिर) यदि तुम्हें अच्छी लगे, तो उसके अनुसार करो!॥2॥

*

‘Listen to my words, people of Ayodhya.
I do not speak out of attachment or any self-interest in my heart,
I do not ask you to do anything wrong, nor do I seek to assert my authority.
Hear what I say, and then do what pleases you.

**

सोइ सेवक प्रियतम मम सोई। मम अनुसासन मानै जोई॥
जौं अनीति कछु भाषौं भाई। तौ मोहि बरजहु भय बिसराई॥3॥

*

वही मेरा सेवक है और वही प्रियतम है, जो मेरी आज्ञा माने। हे भाई! यदि मैं कुछ अनीति की बात कहूँ तो भय भुलाकर (बेखटके) मुझे रोक देना॥3॥

*

He is my servant and most beloved to Me
Who accepts My commands.
If anything wrong or unjust, brothers,
Stop Me without fear.

**

बड़ें भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा॥
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा। पाइ न जेहिं परलोक सँवारा॥4॥

*

बड़े भाग्य से यह मनुष्य शरीर मिला है। सब ग्रंथों ने यही कहा है कि यह शरीर देवताओं को भी दुर्लभ है (कठिनता से मिलता है)। यह साधन का धाम और मोक्ष का दरवाजा है। इसे पाकर भी जिसने परलोक न बना लिया,॥4॥

*

It is by great good fortune that you been born with a human body,
Which, as all the scriptures declare, is is difficult even for gods to attain.
It provides the means to spiritual endeavours and the doorway to salvation.
He who receives this body and still cannot prepare for the next world by good deeds

**

चौपाई :

एहि तन कर फल बिषय न भाई। स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई॥
नर तनु पाइ बिषयँ मन देहीं। पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं॥1॥

*

हे भाई! इस शरीर के प्राप्त होने का फल विषयभोग नहीं है (इस जगत् के भोगों की तो बात ही क्या) स्वर्ग का भोग भी बहुत थोड़ा है और अंत में दुःख देने वाला है। अतः जो लोग मनुष्य शरीर पाकर विषयों में मन लगा देते हैं, वे मूर्ख अमृत को बदलकर विष ले लेते हैं॥1॥

*

The reward of this body, brothers, is not the enjoyment of worldly pleasure,

For even the pleasures of heaven are brief and lead to suffering.

Those who, upon receiving a human body, become intent on sensual enjoyment,

Are fools who exchange Amrit for poison.

**

ताहि कबहुँ भल कहइ न कोई। गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई॥
आकर चारि लच्छ चौरासी। जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी॥2॥

*

जो पारसमणि को खोकर बदले में घुँघची ले लेता है, उसको कभी कोई भला (बुद्धिमान) नहीं कहता। यह अविनाशी जीव (अण्डज, स्वेदज, जरायुज और उद्भिज्ज) चार खानों और चौरासी लाख योनियों में चक्कर लगाता रहता है॥2॥

*

No one can ever speak well of him
Who throws away the philosopher's stone and picks up a worthless gunj seed instead.
The immortal soul wanders forever
Between the four modes of birth and the eighty-four lakh forms of living beings.

**

फिरत सदा माया कर प्रेरा। काल कर्म सुभाव गुन घेरा॥
कबहुँक करि करुना नर देही। देत ईस बिनु हेतु सनेही॥3॥

*

माया की प्रेरणा से काल, कर्म, स्वभाव और गुण से घिरा हुआ (इनके वश में हुआ) यह सदा भटकता रहता है। बिना ही कारण स्नेह करने वाले ईश्वर कभी विरले ही दया करके इसे मनुष्य का शरीर देते हैं॥3॥

*

Impelled by Maya, and imprisoned
By time, fate, individual disposition and the three gunas, it drifts eternally.
At some time or another, the Supreme God, who loves without self-interest,
Takes pity on it and grants it a human body.

**

नर तनु भव बारिधि कहुँ बेरो। सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो॥
करनधार सदगुर दृढ़ नावा। दुर्लभ साज सुलभ करि पावा॥4॥

*

यह मनुष्य का शरीर भवसागर (से तारने) के लिए बेड़ा (जहाज) है। मेरी कृपा ही अनुकूल वायु है। सद्‌गुरु इस मजबूत जहाज के कर्णधार (खेने वाले) हैं। इस प्रकार दुर्लभ (कठिनता से मिलने वाले) साधन सुलभ होकर (भगवत्कृपा से सहज ही) उसे प्राप्त हो गए हैं,॥4॥

*

This human body is a boat to cross the ocean of existence.
Even My grace is the favourable wind to speed it on its way,
And a true guru the helmsman of this sturdy boat.
In this way, means that are otherwise difficult to obtain are made easily available to the soul.

**

दोहा :

जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ।
सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाइ॥44॥

*

जो मनुष्य ऐसे साधन पाकर भी भवसागर से न तरे, वह कृतघ्न और मंद बुद्‌धि है और आत्महत्या करने वाले की गति को प्राप्त होता है॥44॥

*

The man who fails to cross the ocean of existence
Even upon receiving such means,
Is dull-witted and ungrateful, scorning what has been done for him,
And achieves self-destruction.

**

चौपाई :

जौं परलोक इहाँ सुख चहहू। सुनि मम बचन हृदयँ दृढ़ गहहू॥
सुलभ सुखद मारग यह भाई। भगति मोरि पुरान श्रुति गाई॥1॥

*

यदि परलोक में और यहाँ दोनों जगह सुख चाहते हो, तो मेरे वचन सुनकर उन्हें हृदय में दृढ़ता से पकड़ रखो। हे भाई! यह मेरी भक्ति का मार्ग सुलभ और सुखदायक है, पुराणों और वेदों ने इसे गाया है॥1॥

*

If you want happiness here and in the next world,
Listen my words and hold them firmly in your heart.
The path of devotion to me, my brothers, is pleasant and easily accessed,
And has been praised by the Vedas and Puranas.

**

ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका। साधन कठिन न मन कहुँ टेका॥
करत कष्ट बहु पावइ कोऊ। भक्ति हीन मोहि प्रिय नहिं सोऊ॥2॥

*

ज्ञान अगम (दुर्गम) है (और) उसकी प्राप्ति में अनेकों विघ्न हैं। उसका साधन कठिन है और उसमें मन के लिए कोई आधार नहीं है। बहुत कष्ट करने पर कोई उसे पा भी लेता है, तो वह भी भक्तिरहित होने से मुझको प्रिय नहीं होता॥2॥

*

True knowledge is difficult to attain, and there are many obstacles in the way.
The means to it are hard, and there is nothing to fix the mind upon.

After much struggle, some do attain it,
But being bereft of Bhakti, they do not win my love.

**

भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी। बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी॥
पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता। सतसंगति संसृति कर अंता॥3॥

*

भक्ति स्वतंत्र है और सब सुखों की खान है, परंतु सत्संग (संतों के संग) के बिना प्राणी इसे नहीं पा सकते और पुण्य समूह के बिना संत नहीं मिलते। सत्संगति ही संसृति (जन्म-मरण के चक्र) का अंत करती है॥3॥

*

Bhakti is independent and the source of all bliss,
But beings cannot attain it without communion with the saints.
Without an accumulation of merit, saints are inaccessible,
And it is only their company that ends the cycle of birth and rebirth.

*

दोहा :

औरउ एक गुपुत मत सबहि कहउँ कर जोरि।
संकर भजन बिना नर भगति न पावइ मोरि॥45॥

*

और भी एक गुप्त मत है, मैं उसे सबसे हाथ जोड़कर कहता हूँ कि शंकरजी के भजन बिना मनुष्य मेरी भक्ति नहीं पाता॥45॥

*

There is one more secret tenet
That I with folded hands impress upon you all–
Without the worship of Shankar,

No man can attain devotion to Me. 45

**

चौपाई :

कहहु भगति पथ कवन प्रयासा। जोग न मख जप तप उपवासा।
सरल सुभाव न मन कुटिलाई। जथा लाभ संतोष सदाई॥1॥

*

कहो तो, भक्ति मार्ग में कौन-सा परिश्रम है? इसमें न योग की आवश्यकता है, न यज्ञ, जप, तप और उपवास की! (यहाँ इतना ही आवश्यक है कि) सरल स्वभाव हो, मन में कुटिलता न हो और जो कुछ मिले उसी में सदा संतोष रखे॥1॥

*

Tell Me, what effort is required to follow the path of devotion?
Neither abstract contemplation is needed, nor fire-sacrifices,
prayer, penance, or fasting,
Only a simple and honest disposition, a heart without crookedness,
And complete contentment with whatever comes your way.

**

मोर दास कहाइ नर आसा। करइ तौ कहहु कहा बिस्वासा॥
बहुत कहउँ का कथा बढ़ाई। एहि आचरन बस्य मैं भाई॥2॥

*

मेरा दास कहलाकर यदि कोई मनुष्यों की आशा करता है, तो तुम्हीं कहो, उसका क्या विश्वास है? (अर्थात् उसकी मुझ पर आस्था बहुत ही निर्बल है।) बहुत बात बढ़ाकर क्या हूँ? हे भाइयों! मैं तो इसी आचरण के वश में हूँ॥2॥

*

If one calls himself my servant, yet looks to other men

for support,

Tell Me, what faith does he have in me?

But why draw out my discourse any further?

This is the behaviour, brothers, by which I am won:

**

बैर न बिग्रह आस न त्रासा। सुखमय ताहि सदा सब आसा॥
अनारंभ अनिकेत अमानी। अनघ अरोष दच्छ बिग्यानी॥3॥

*

न किसी से वैर करे, न लड़ाई-झगड़ा करे, न आशा रखे, न भय ही करे। उसके लिए सभी दिशाएँ सदा सुखमयी हैं। जो कोई भी आरंभ (फल की इच्छा से कर्म) नहीं करता, जिसका कोई अपना घर नहीं है (जिसकी घर में ममता नहीं है), जो मानहीन, पापहीन और क्रोधहीन है, जो (भक्ति करने में) निपुण और विज्ञानवान् है॥3॥

*

To have neither enmity nor strife, neither longings nor fear–
Every direction is full of joy for such a man.
He who undertakes nothing for gain, and is without attachment or pride
Free from anger and sin, who is clever and wise,

**

प्रीति सदा सज्जन संसर्गा। तृन सम बिषय स्वर्ग अपबर्गा॥
भगति पच्छ हठ नहिं सठताई। दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई॥4॥

*

संतजनों के संसर्ग (सत्संग) से जिसे सदा प्रेम है, जिसके मन में सब विषय यहाँ तक कि स्वर्ग और मुक्ति तक (भक्ति के सामने) तृण के समान हैं, जो भक्ति के पक्ष में हठ करता है, पर (दूसरे के मत का खण्डन करने की) मूर्खता नहीं करता तथा जिसने सब कुतर्कों को दूर बहा दिया है ॥4॥

*

Ever devoted to the company of the good,
And regards all pleasures, even those of heaven and ultimate liberation, as worthless as a blade of grass,
Who is staunch in his support of Bhakti, free of wickedness,
And has pushed away all false doctrine,

**

दोहा -

मम गुन ग्राम नाम रत गत ममता मद मोह।
ता कर सुख सोइ जानइ परानंद संदोह॥46॥

*

जो मेरे गुण समूहों के और मेरे नाम के परायण है, एवं ममता, मद और मोह से रहित है, उसका सुख वही जानता है, जो (परमात्मारूप) परमानन्दराशि को प्राप्त है॥46॥

*

Who is devoted to singing my virtues, is intent upon my name
And free of selfishness, arrogance and delusion–
The joy that such a man experiences is known
Only to one who has become one with God, the embodiment of supreme bliss.'

हेतु रहित जग जुग उपकारी। तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी॥
स्वारथ मीत सकल जग माहीं। सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं॥3॥

*

हे असुरों के शत्रु! जगत् में बिना हेतु के (निःस्वार्थ) उपकार करने वाले तो दो ही हैं- एक आप, दूसरे आपके सेवक। जगत् में (शेष) सभी स्वार्थ के मित्र हैं। हे प्रभो! उनमें स्वप्न में भी परमार्थ का भाव नहीं है॥3॥

*

In this world, there are only two disinterested benefactors–
You yourself, and your servants, O slayers of demons.
Everyone else in this world is selfish and self-serving,
And is not interested in the greater good even in dream.'

**

पक्षीराज गरूण - कागभुसुंडी प्रसंग

तुलसीदास रामचरितमानस की रामकथा मुख्यत: शिव-उमा संवाद रूप में है। फिर उत्तरकांड के आख़िरी भाग में शिव उमा को पहले बशिष्ठ के राम से मिलने का ज़िक्र करते हैं- वे अपने रामको अपने जन्म की कथा बताते हैं और उनके ब्रह्म रूप को समझ विनती करते हैं।उस प्रसंग में तकालीन ब्राह्मणों के औपरिहित्य के काम के बारें में कहते हैं- 'उपरोहित्य कर्म अति मंदा। बेद पुरान सुमृति कर निंदा॥' जब वे चले जाते हैं।

फिर राम भाइयों सहित नगर के बाहर जा अयोध्या के लोगों के लिये हाथी घोड़े आदि मंगाते हैं और उनसे उन्हें अपनी इच्छानुसार लेलेने का अनुरोध करते हैं। इसके बाद महर्षि नारद आ राम के ब्रह्म रूप होने के कारण उनकी प्रशंसा एवं प्रार्थना करते है कि उनकी कृपा उनपर हरदम बनी रहे। फिर चले जाते हैं।

शिव फिर उमा को यह बताते हैं कि जो सम्पूर्ण राम कथा उन्होंने सुनाई, वे उसे राम भक्त कागभुसुडीं से सुनी थी। जब राम-रावण युद्ध में जब राम नागपास में बंध जाते हैं और नारद के कहने पर गरूड़ जी जाकर राम को नागों के बंधन से मुक्त कर देते हैं। पर वे मोहग्रस्त हो जाते हैं ब्रह्म राम के बारे में। पक्षीराज की शंका को मिटाने के जब शिवजी गरूड़ को कागभुसुंडी के पास जा उनसे अपना मोहभंग करवाने को कहते हैं। उमा शिव जी से कागभुसुंडी और गरूड़ के मिलने और उनकी कथा जानने का आग्रह किया। वहाँ से रामचरितमानस का कागभुसुंडी और गरूड़ सम्बाद प्रारम्भ होता है।

तुलसीदास का रामकथा में इन दोनों पक्षियों को ही चुनना महत्वपूर्ण है: विष्णु की सवारी गरूण पक्षियों के राजा हैं और पक्षियों में कागभुसुंडी सबसे नीच समझे जाते हैं। कथा क्रम में कागभुसुडी गरूड़ को वहीं सम्मान देते हैं जो उचित माना जायेगा। और गरूड़ काग-भुसुंडी को भी उनके परमात्मत्त्व के ज्ञानी का सम्मान देते हैं। ऐसा करने में एक शिक्षा भी ही है समाज के जाति नाम से बँटे प्राणियों के लिये- उच्च वर्ण के लोगों को नीच समझे जाने वाले लोगों को घृणा की दृष्टि नहीं देखना चाहिये, वल्कि उनकी उपलब्धियों पर ध्यान और उनमें भी ब्रह्म वैसे ही हैं जैसे उनमें। उसके कुछ अंश नीचे हैं।

कलियुग का वर्णन उनके समय के अवस्था का है और समाज में वही अवस्था आज भी है, अत: आगे दिया गया है।

गरूणजी एवं कागभुसुंडी की कहानी

गरूण एवं काकभुशुण्डि नामक एक कौवे की कहानी तुलसीदास रामचरितमानस के उत्तरकांड में एक अनुठे रूप में वर्णित है। गरूण पक्षीराज है जिसकी सवारी भगवान विष्णु करते हैं। संत तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड में लिखा है कि काकभुशुण्डि परमज्ञानी रामभक्त हैं। जब रावण के अमित पराक्रमी पुत्र मेघनाथ ने राम-रावण युद्ध में राम को नागपाश से बाँध दिया। देवर्षि नारद के कहने पर गरूड़ (जो कि सर्पभक्षी थे) युद्धस्थल में बँधे राम के पास जा समस्त नागों को खाकर उन्हें मुक्त करा दिया। पर (ब्रह्म) राम के इस तरह नागपाश में बँध जाने पर राम के परमब्रह्मत्व पर गरुड़ को सन्देह हो गया। गरुड़ का सन्देह दूर करने के लिये देवर्षि नारद उन्हें ब्रह्मा जी के पास भेजा, पर सृष्टि रचयिता ब्रह्मा ने उन्हे भगवान शंकर के पास जाकर राम के बारे में अपने शंका का समाधान करने की सलाह दी, क्योंकि शिव से ज़्यादा राम को कोई नहीं जानता और वही गरूण के शंका समाधान भी कर सकते थे। गरूड को भगवान शंकर मिले रास्ते जब शंकर जल्दी में कुबेर के

पास जा रहे थे, पार्वती को कैलास में ही छोड़। उन्होंने गरुड़ को उनका सन्देह मिटाने के लिये काकभुशुण्डि जी का वासस्थान बता उनके के पास भेज दिया राम के ब्रह्म रूप की जानकारी के लिये। भगवान शिव सती से विरह काल में पृथ्वी पर कागभुसुंडी से मिले थे और खुद उनसे हंस के वेष में उनके आश्रम में जा राम कथा सुनी थी। संसार की दृष्टि में निम्नतम (काकभुसुंडी) काग अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति सगुन ब्रह्म राम के ज्ञान से मंडित थे। उन्हीं के पास शिव ने गरूड को उनके संदेह का निराकरण कराने के लिये भेजा।
कागभुसुंडी-गरूण संवाद में काकभुशुण्डि जी अपने सभी पूर्व जन्मों की कहानी के साथ राम के चरित्र की पवित्र कथा सुना कर उनके सन्देह को दूर करते।
>कागभुसुडीं अपने प्रथम जन्म में अयोध्या पुरी में एक शूद्र के घर में पैदा हुए थे जब उस कल्प में कलियुग का समय चल रहा था। उस जन्म में वे भगवान शिव के भक्त थे किन्तु अभिमानपूर्वक अन्य देवताओं की निन्दा करते थे। एक बार अयोध्या में अकाल पड़ जाने पर वे उज्जैन चले गये। वहाँ वे एक दयालु ब्राह्मण की सेवा करते हुये उन्हीं के साथ रहने लगे। वे ब्राह्मण भगवान शंकर के बहुत बड़े भक्त थे किन्तु भगवान विष्णु की निन्दा कभी नहीं करते थे। उन्होंने उस शूद्र को शिव जी का मन्त्र दिया। मन्त्र पाकर उसका अभिमान और भी बढ़ गया। वह अन्य द्विजों से ईर्ष्या और भगवान विष्णु से द्रोह करने लगा। उसके इस व्यवहार से वे ब्राह्मण गुरू अत्यन्त दुःखी होकर उसे श्री राम की भक्ति का उपदेश दिया करते थे। एक बार उस शूद्र ने भगवान शंकर के मन्दिर में अपने गुरु का अपमान कर दिया। इस पर भगवान शंकर ने उसे शाप दे दिया: 'तूने गुरु का निरादर किया है इसलिये तू सर्प की अधम योनि में चला जा और सर्प योनि के बाद तुझे 1000 बार अनेक योनियों में जन्म लेना पड़े।' ज्ञानी दयालु गुरु ने शिव जी की स्तुति करके अपने शिष्य के लिये क्षमा प्रार्थना की। भगवान शंकर ने गुरू के अनुनयभरी विनय से प्रसन्न हुए और आकाशवाणी हुई, "हे ब्राह्मण! मेरा शाप व्यर्थ नहीं जायेगा। इसको 1000 बार जन्म अवश्य ही लेना पड़ेगा किन्तु जन्मने और मरने में जो दुःसह दुःख होता है वह इसे नहीं होगा और हर जन्म में इसका ज्ञान बना रहेगा और इसे अपने प्रत्येक जन्म का स्मरण बना रहेगा। जगत् में इसे कुछ भी दुर्लभ न होगा और इसकी सर्वत्र अबाध गति होगी। मेरी कृपा से इसे भगवान श्री राम के चरणों के प्रति भक्ति भी प्राप्त होगी।
इसके पश्चात् उस शूद्र ने विन्ध्याचल में सर्प योनि प्राप्त कर पैदा हुआ। वह जो भी शरीर धारण करता था उसे बिना कष्ट के सुखपूर्वक त्याग देता था। प्रत्येक जन्म की याद उसे बनी रहती थी। श्री रामचन्द्र जी के प्रति भक्ति भी उसमें उत्पन्न हो गई। अन्तिम शरीर उसने ब्राह्मण का पाया और ज्ञानप्राप्ति के लिये वह लोमश ऋषि के पास गया। पर ऋषि उसे जो ज्ञान देते थे, वह उनसे अनेक प्रकार के तर्क-कुतर्क करता रहता था। उसके इस व्यवहार से कुपित होकर आख़िर एक दिन लोमश ऋषि ने उसे चाण्डाल पक्षी (कौआ) हो जाने का शाप दे

दिया । वह तत्काल कौआ बनकर उड़ गया। शाप देने के पश्चात् लोमश ऋषि को अपने इस शाप पर पश्चाताप हुआ और उन्होंने उस कौए को वापस बुला कर राममन्त्र दिया तथा इच्छा मृत्यु का वरदान भी दिया। कौए का शरीर पाने के बाद ही राममन्त्र मिलने के कारण उस शरीर से उन्हें प्रेम हो गया। वे कौए के रूप में ही रहने लगे तथा काकभुशुण्डि के नाम से विख्यात हुये।

.....

माया का प्रभाव का विवरण

पहले काकभुसुण्डी ने सभी एकत्रित पक्षियों के साथ उन्हें राम कथा सुनाई ।
राम कथा की समाप्ति के बाद कागभुसुंडी ब्रह्म और उनकी ही माया के प्रभाव की बात कहते हैं-

मोह न अंध कीन्ह केहि केही। को जग काम नचाव नजेही॥
तृस्नाँ केहि न कीन्ह बौराहा। केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा॥4॥

उनमें से भी किस-किस को मोह ने अंधा (विवेकशून्य) नहीं किया? जगत् में ऐसा कौन है जिसे काम ने न नचाया हो? तृष्णा ने किसको मतवाला नहीं बनाया? क्रोध ने किसका हृदय नहीं जलाया?॥4॥

दोहा :

ग्यानी तापस सूर कबि कोबिद गुन आगार।
केहि कै लोभ बिडंबना कीन्हि न एहिं संसार॥ 70 क॥

इस संसार में ऐसा कौन ज्ञानी, तपस्वी, शूरवीर, कवि, विद्वान और गुणों का धाम है, जिसकी लोभ ने विडंबना (मिट्टी पलीद) न की हो॥ 70 (क)॥

श्री मद बक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि।
मृगलोचनि के नैन सर को अस लाग न जाहि॥ 70 ख॥

लक्ष्मी के मद ने किसको टेढ़ा और प्रभुता ने किसको बहरा नहीं कर दिया? ऐसा कौन है जिसे मृगनयनी (युवती स्त्री) के नेत्र बाण न लगे हों॥ 70 (ख)॥

चौपाई :

गुन कृत सन्यपात नहिं केही। कोउ न मान मद तजेउ निबेही॥
जोबन ज्वर केहि नहिं बलकावा। ममता केहि कर जस न नसावा॥1॥

(रज, तम आदि) गुणों का किया हुआ सन्निपात किसे नहीं हुआ? ऐसा कोई नहीं है जिसे मान और मद ने अछूता छोड़ा हो। यौवन के ज्वर ने किसे आपे से बाहर नहीं किया? ममता ने किस के यश का नाश नहीं किया?॥1॥

मच्छर काहि कलंक न लावा। काहि न सोक समीर डोलावा॥
चिंता साँपिनि को नहिं खाया। को जग जाहि न ब्यापी माया॥2॥

-मत्सर (डाह) ने किसको कलंक नहीं लगाया? शोक रूपी पवन ने किसे नहीं हिला दिया? चिंता रूपी साँपिन ने किसे नहीं खा लिया? जगत में ऐसा कौन है, जिसे माया न व्यापी हो?॥2॥

कीट मनोरथ दारु सरीरा। जेहि न लाग घुन को अस धीरा॥
सुत बित लोक ईषना तीनी। केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी॥3॥

मनोरथ क्रीड़ा है, शरीर लकड़ी है। ऐसा धैर्यवान् कौन है, जिसके शरीर में यह कीड़ा न लगा हो? पुत्र की, धन की और लोक प्रतिष्ठा की, इन तीन प्रबल इच्छाओं ने किसकी बुद्धि को मलिन नहीं कर दिया (बिगाड़ नहीं दिया)?॥3॥

यह सब माया कर परिवारा। प्रबल अमिति को बरनै पारा॥
सुत बित लोक ईषना तीनी। केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी॥3॥

मनोरथ क्रीड़ा है, शरीर लकड़ी है। ऐसा धैर्यवान् कौन है, जिसके शरीर में यह कीड़ा न लगा हो? पुत्र की, धन की और लोक प्रतिष्ठा की, इन तीन प्रबल इच्छाओं ने किसकी बुद्धि को मलिन नहीं कर दिया (बिगाड़ नहीं दिया)?॥3॥

दोहा :

ब्यापि रहेउ संसार महुँ माया कटक प्रचंड।
सेनापति कामादि भट दंभ कपट पाषंड॥ 71 क॥

माया की प्रचंड सेना संसार भर में छाई हुई है। कामादि (काम, क्रोध और लोभ) उसके सेनापति हैं और दम्भ, कपट और पाखंड योद्धा हैं॥ 71 (क)॥

सो दासी रघुबीर कै समुझें मिथ्या सोपि।
छूट न राम कृपा बिनु नाथ कहउँ पद रोपि॥ 71 ख॥
वह माया श्री रघुवीर की दासी है। यद्यपि समझ लेने पर वह मिथ्या ही है, किंतु वह श्री रामजी की कृपा के बिना छूटती नहीं। हे नाथ! यह मैं प्रतिज्ञा करके कहता हूँ॥ 71 (ख)॥

चौपाई :
जो माया सब जगहि नचावा। जासु चरित लखि काहुँ न पावा॥
सोइ प्रभु भ्रू बिलास खगराजा। नाच नटी इव सहित समाजा॥1॥
-जो माया सारे जगत् को नचाती है और जिसका चरित्र (करनी) किसी ने नहीं लख पाया, हे खगराज गरुड़जी! वही माया प्रभु श्री रामचंद्रजी की भृकुटी के इशारे पर अपने समाज (परिवार) सहित नटी की तरह नाचती है॥1॥
सोइ सच्चिदानंद घन रामा। अज बिग्यान रूप बल धामा॥
ब्यापक ब्याप्य अखंड अनंता। अकिल अमोघसक्ति भगवंता॥2॥
-श्री रामजी वही सच्चिदानंदघन हैं जो अजन्मे, विज्ञानस्वरूप, रूप और बल के धाम, सर्वव्यापक एवं व्याप्य (सर्वरूप), अखंड, अनंत, संपूर्ण, अमोघशक्ति (जिसकी शक्ति कभी व्यर्थ नहीं होती) और छह ऐश्वर्यों से युक्त भगवान् हैं॥2॥
अगुन अदभ्र गिरा गोतीता। सबदरसी अनवद्य अजीता॥
निर्मम निराकार निरमोहा। नित्य निरंजन सुख संदोहा॥3॥
वे निर्गुण (माया के गुणों से रहित), महान्, वाणी और इंद्रियों से परे, सब कुछ देखने वाले, निर्दोष, अजेय, ममतारहित, निराकार (मायिक आकार से रहित), मोहरहित, नित्य, मायारहित, सुख की राशि,॥3॥
प्रकृति पार प्रभु सब उर बासी। ब्रह्म निरीह बिरज अबिनासी॥
इहाँ मोह कर कारन नाहीं। रबि सन्मुख तम कबहुँ कि जाहीं॥4॥

प्रकृति से परे, प्रभु (सर्वसमर्थ), सदा सबके हृदय में बसने वाले, इच्छारहित विकाररहित, अविनाशी ब्रह्म हैं। यहाँ (श्री राम में) मोह का कारण ही नहीं है। क्या अंधकार का समूह कभी सूर्य के सामने जा सकता है?॥4॥

दोहा :

भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप।
किए चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप॥ 72 क॥

भावार्थ:-भगवान् प्रभु श्री रामचंद्रजी ने भक्तों के लिए राजा का शरीर धराण किया और साधारण मनुष्यों के से अनेकों परम पावन चरित्र किए॥ 72 (क)॥

जथा अनेक बेष धरि नृत्य करइ नट कोइ।
सोइ सोइ भाव देखावइ आपुन होइ न सोइ॥ 72 ख॥

जैसे कोई नट (खेल करने वाला) अनेक वेष धारण करके नृत्य करता है और वही-वही (जैसा वेष होता है, उसी के अनुकूल) भाव दिखलाता है, पर स्वयं वह उनमें से कोई हो नहीं जाता,॥ 72 (ख)॥

चौपाई :

असि रघुपति लीला उरगारी। दनुज बिमोहनि जन सुखकारी॥
जे मति मलिन बिषय बस कामी। प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी॥1॥

हे गरुड़जी! ऐसी ही श्री रघुनाथजी की यह लीला है, जो राक्षसों को विशेष मोहित करने वाली और भक्तों को सुख देने वाली है। हे स्वामी! जो मनुष्य मलिन बुद्धि, विषयों के वश और कामी हैं, वे ही प्रभु पर इस प्रकार मोह का आरोप करते हैं॥1॥

नयन दोष जा कहँ जब होई। पीत बरन ससि कहुँ कह सोई॥
जब जेहि दिसि भ्रम होई खगेसा। सो कह पच्छिम उयउ दिनेसा॥2॥

जब जिसको (कवँल आदि) नेत्र दोष होता है, तब वह चंद्रमा को पीले रंग का कहता है। हे पक्षीराज! जब जिसे दिशाभ्रम होता है, तब वह कहता है कि सूर्य पश्चिम में उदय हुआ है॥2॥

नौकारूढ़ चलत जग देखा। अचल मोह बस आपुहि लेखा॥
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी। कहहिं परस्पर मिथ्याबादी॥3॥
नौका पर चढ़ा हुआ मनुष्य जगत को चलता हुआ देखता है और मोहवश अपने को अचल समझता है। बालक घूमते (चक्राकार दौड़ते) हैं, घर आदि नहीं घूमते। पर वे आपस में एक-दूसरे को झूठा कहते हैं॥3॥

हरि बिषइक अस मोह बिहंगा। सपनेहुँ नहिं अग्यान प्रसंगा॥
माया बस मतिमंद अभागी। हृदयँ जमनिका बहुबिधि लागी॥4॥
गरुड़जी! श्री हरि के विषय में मोह की कल्पना भी ऐसी ही है, भगवान् में तो स्वप्न में भी अज्ञान का प्रसंग (अवसर) नहीं है, किंतु जो माया के वश, मंदबुद्धि और भाग्यहीन हैं और जिनके हृदय पर अनेकों प्रकार के परदे पड़े हैं॥4॥

ते सठ हठ बस संसय करहीं। निज अग्यान राम पर धरहीं॥5॥
भावार्थ:-वे मूर्ख हठ के वश होकर संदेह करते हैं और अपना अज्ञान श्री रामजी पर आरोपित करते हैं॥5॥

दोहा :
काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुखरूप।
ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़ परे तम कूप॥ 73 क॥
जो काम, क्रोध, मद और लोभ में रत हैं और दुःख रूप घर में आसक्त हैं, वे श्री रघुनाथजी को कैसे जान सकते हैं? वे मूर्ख तो अंधकार रूपी कुएँ में पड़े हुए हैं॥ 73 (क)॥
निर्गुन रूप सुलभ अति सगुन जान नहिं कोई।
सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होई॥ 73 ख॥
भावार्थ:-निर्गुण रूप अत्यंत सुलभ (सहज ही समझ में आ जाने वाला) है, परंतु (गुणातीत दिव्य) सगुण रूप को कोई नहीं जानता, इसलिए उन सगुण भगवान् के

अनेक प्रकार के सुगम और अगम चरित्रों को सुनकर मुनियों के भी मन को भ्रम हो जाता है॥ 73 (ख)॥

*

कागभुसुंडी जी फिर पक्षीराज गरुड़जी को अपने खुद के मोह की सब कथा सुनाते हैं-

सुनहु राम कर सहज सुभाऊ। जन अभिमान न राखहिं काऊ॥
संसृत मूल सूलप्रद नाना। सकल सोक दायक अभिमाना॥3॥
श्री रामचंद्रजी का सहज स्वभाव सुनिए। वे भक्त में अभिमान कभी नहीं रहने देते, क्योंकि अभिमान जन्म-मरण रूप संसार का मूल है और अनेक प्रकार के क्लेशों तथा समस्त शोकों का देने वाला है॥3॥
ताते करहिं कृपानिधि दूरी। सेवक पर ममता अति भूरी॥
जिमि सिसु तन ब्रन होई गोसाईं। मातु चिराव कठिन की नाईं॥4॥
-इसीलिए कृपानिधि उसे दूर कर देते हैं, क्योंकि सेवक पर उनकी बहुत ही अधिक ममता है। हे गोसाईं! जैसे बच्चे के शरीर में फोड़ा हो जाता है, तो माता उसे कठोर हदय की भाँति चिरा डालती है॥4॥
दोहा :
जदपि प्रथम दुख पावइ रोवइ बाल अधीर।
ब्याधि नास हित जननी गनति न सो सिसु पीर॥ 74 क॥
यद्यपि बच्चा पहले (फोड़ा चिराते समय) दुःख पाता है और अधीर होकर रोता है, तो भी रोग के नाश के लिए माता बच्चे की उस पीड़ा को कुछ भी नहीं गिनती (उसकी परवाह नहीं करती और फोड़े को चिरवा ही डालती है)॥ 74 (क)॥
तिमि रघुपति निज दास कर हरहिं मान हित लागि।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहि कस न भजहु भ्रम त्यागि॥ 74 ख॥
उसी प्रकार श्री रघुनाथजी अपने दास का अभिमान उसके हित के लिए हर लेते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि ऐसे प्रभु को भ्रम त्यागकर क्यों नहीं भजते॥ 74 (ख)॥

चौपाई :

राम कृपा आपनि जड़ताई। कहउँ खगेस सुनहु मन लाई॥

जब जब राम मनुज तनु धरहीं। भक्त हेतु लीला बहु करहीं॥1॥

-हे गरुड़जी! श्री रामजी की कृपा और अपनी जड़ता (मूर्खता) की बात कहता हूँ, मन लगाकर सुनिए। जब-जब श्री रामचंद्रजी मनुष्य शरीर धारण करते हैं और भक्तों के लिए बहुत सी लीलाएँ करते हैं॥1॥

तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ। बालचरित बिलोकि हरषाऊँ॥

जन्म महोत्सव देखउँ जाई। बरष पाँच तहँ रहउँ लोभाई॥2॥

तब-तब मैं अयोध्यापुरी जाता हूँ और उनकी बाल लीला देखकर हर्षित होता हूँ। वहाँ जाकर मैं जन्म महोत्सव देखता हूँ और (भगवान् की शिशु लीला में) लुभाकर पाँच वर्ष तक वहीं रहता हूँ। बालक रूप श्री रामचंद्रजी मेरे इष्टदेव हैं। छोटे से कौए का शरीर धरकर और भगवान् के साथ-साथ फिरकर मैं उनके भाँति-भाँति के बाल चरित्रों को देखा करता हूँ।

**https://www.shriramcharitmanas.in/p/uttar-kand_7.html

एक बार श्री रघुवीर ने बहुत ही विस्मयकारी लीला की, जिसे याद कर काकभुशुण्डिजी का शरीर (प्रेमानन्दवश) पुलकित हो गया।

किलकारी मारते हुए जब वे मुझे पकड़ने दौड़ते और मैं भाग चलता। मेरे निकट आने पर प्रभु हँसते थे और मेरे भाग जाने पर रोते हैं और जब मैं उनका चरण स्पर्श करने के लिए पास जाता हूँ, तब वे पीछे फिर-फिरकर मेरी ओर देखते हुए भाग जाते हैं। साधारण बच्चों जैसी लीला देखकर मुझे मोह (शंका) हुआ कि सच्चिदानंदघन प्रभु यह कौन (महत्त्व का) चरित्र (लीला) कर रहे हैं? हे पक्षीराज! मन में इतनी (शंका) लाते ही श्री रघुनाथजी के द्वारा प्रेरित माया मुझ पर छा गई। एक सीतापति श्री रामजी ही अखंड मानवस्वरूप हैं और जड़-चेतन सभी जीव माया के वश हैं॥2॥

(जौं सब कें रह ग्यान एकरस। ईस्वर जीवहि भेद कहहु कस॥
माया बस्य जीव अभिमानी। ईस बस्य माया गुन खानी॥3॥
-यदि जीवों को एकरस (अखंड) ज्ञान रहे, तो कहिए, फिर ईश्वर और जीव में भेद ही कैसा? अभिमानी जीव माया के वश है और वह (सत्त्व, रज, तम इन) तीनों गुणों की खान माया ईश्वर के वश में है॥3॥
* परबस जीव स्वबस भगवंता। जीव अनेक एक श्रीकंता॥
मुधा भेद जद्यपि कृत माया। बिनु हरि जाइ न कोटि उपाया॥4॥
-जीव परतंत्र है, भगवान् स्वतंत्र हैं, जीव अनेक हैं, श्री पति भगवान् एक हैं। यद्यपि माया का किया हुआ यह भेद असत् है तथापि वह भगवान् के भजन बिना करोड़ों उपाय करने पर भी नहीं जा सकता॥4॥
दोहा :
*रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निर्बान।
ग्यानवंत अपि सो नर पसु बिनु पूँछ बिषान॥ 78 क॥
श्री रामचंद्रजी के भजन बिना जो मोक्ष पद चाहता है, वह मनुष्य ज्ञानवान् होने पर भी बिना पूँछ और सींग का पशु है॥ 78 (क)॥

राकापति षोड़स उअहिं तारागन समुदाइ।
सकल गिरिन्ह दव लाइअ बिनु रबि राति न जाइ॥ 78 ख॥
सभी तारागणों के साथ सोलह कलाओं से पूर्ण चंद्रमा उदय हो और जितने पर्वत हैं उन सब में दावाग्नि लगा दी जाए, तो भी सूर्य के उदय हुए बिना रात्रि नहीं जा सकती॥ 78 (ख)॥
चौपाई :
ऐसेहिं हरि बिनु भजन खगेसा। मिटइ न जीवन्ह केर कलेसा॥
हरि सेवकहि न ब्याप अबिद्या। प्रभु प्रेरित ब्यापइ तेहि बिद्या॥1॥

-हे पक्षीराज! इसी प्रकार श्री हरि के भजन बिना जीवों का क्लेश नहीं मिटता। श्री हरि के सेवक को अविद्या नहीं व्यापती। प्रभु की प्रेरणा से उसे विद्या व्यापती है॥1॥)

काकभुशुण्डि का अपनी पूर्व जन्म कथा

फिर श्री रामजी ने मुझे जब भ्रम से चकित देखा, तब वे हँसे। वह विशेष चरित्र सुनिए। वे श्याम शरीर और लाल-लाल हथेली और चरणतल वाले बाल रूप श्री रामजी घुटने और हाथों के बल मुझे पकड़ने को दौड़े।तब मैं भाग चला। श्री रामजी ने मुझे पकड़ने के लिए भुजा फैलाई। मैं जैसे-जैसे आकाश में दूर उड़ता, वैसे-वैसे ही वहाँ श्री हरि की भुजा को अपने पास देखता था। मैं ब्रह्मलोक तक गया और जब उड़ते हुए मैंने पीछे की ओर देखा, तो हे तात! श्री रामजी की भुजा में और मुझमें केवल दो ही अंगुल का बीच था। वहाँ भी प्रभु की भुजा को (अपने पीछे) देखकर मैं व्याकुल हो गया।जब मैं भयभीत हो गया, तब मैंने आँखें मूँद लीं। फिर आँखें खोलकर देखते ही अवधपुरी में पहुँच गया। मुझे देखकर श्री रामजी मुस्कुराने लगे। उनके हँसते ही मैं तुरंत उनके मुख में चला गया। *पक्षीराज*! सुनिए, मैंने उनके पेट में बहुत से ब्रह्माण्डों के समूह देखे। वहाँ (उन ब्रह्माण्डों में) अनेकों विचित्र लोक थे, जिनकी रचना एक से एक की बढ़कर थी। करोड़ों ब्रह्माजी और शिवजी, अनगिनत तारागण, सूर्य और चंद्रमा, अनगिनत लोकपाल, यम और काल, अनगिनत विशाल पर्वत और भूमि, सागर असंख्य समुद्र, नदी, तालाब और वन तथा और भी नाना प्रकार की सृष्टि का विस्तार देखा। देवता, मुनि, सिद्ध, नाग, मनुष्य, किन्नर तथा चारों प्रकार के जड़ और चेतन जीव देखे।जो कभी न देखा था, न सुना था और जो मन में भी नहीं समा सकता था (अर्थात जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी), वही सब अद्भुत सृष्टि मैंने देखी। तब उसका किस प्रकार वर्णन किया जाए! मैं एक-एक ब्रह्माण्ड में एक-एक सौ वर्ष तक रहता। इस प्रकार मैं अनेकों ब्रह्माण्ड देखता फिरा। प्रत्येक लोक में भिन्न-भिन्न ब्रह्मा, भिन्न-भिन्न विष्णु, शिव, मनु, दिक्पाल, मनुष्य, गंधर्व, भूत, वैताल, किन्नर, राक्षस, पशु, पक्षी, सर्प, तथा नाना जाति के देवता एवं दैत्यगण थे। सभी जीव वहाँ

दूसरे ही प्रकार के थे। अनेक पृथ्वी, नदी, समुद्र, तालाब, पर्वत तथा सब सृष्टि वहाँ दूसरे ही दूसरी प्रकार की थी।प्रत्येक ब्रह्माण्ड में मैंने अपना रूप देखा तथा अनेकों अनुपम वस्तुएँ देखीं। प्रत्येक भुवन में न्यारी ही अवधपुरी, भिन्न ही सरयूजी और भिन्न प्रकार के ही नर-नारी थे।हे तात! सुनिए, दशरथजी, कौसल्याजी और भरतजी आदि भाई भी भिन्न-भिन्न रूपों के थे। मैं प्रत्येक ब्रह्माण्ड में रामावतार और उनकी अपार बाल लीलाएँ देखता फिरता।

मैंने सभी कुछ भिन्न-भिन्न और अत्यंत विचित्र देखा। मैं अनगिनत ब्रह्माण्डों में फिरा, पर प्रभु श्री रामचंद्रजी को मैंने दूसरी तरह का नहीं देखा। सर्वत्र वही शिशुपन, वही शोभा और वही कृपालु श्री रघुवीर! इस प्रकार मोह रूपी पवन की प्रेरणा से मैं भुवन-भुवन में देखता-फिरता था। अनेक ब्रह्माण्डों में भटकते मुझे मानो एक सौ कल्प बीत गए। फिरता-फिरता मैं अपने आश्रम में आया और कुछ काल वहाँ रहकर बिताया। फिर जब अपने प्रभु का अवधपुरी में जन्म (अवतार) सुन पाया, तब प्रेम से परिपूर्ण होकर मैं हर्षपूर्वक उठ दौड़ा। जाकर मैंने जन्म महोत्सव देखा, जिस प्रकार मैं पहले वर्णन कर चुका हूँ। श्री रामचंद्रजी के पेट में मैंने बहुत से जगत् देखे, जो देखते ही बनते थे, वर्णन नहीं किए जा सकते। वहाँ फिर मैंने सुजान माया के स्वामी कृपालु भगवान् श्री राम को देखा। मैं बार-बार विचार करता था। मेरी बुद्धि मोह रूपी कीचड़ से व्याप्त थी। यह सब मैंने दो ही घड़ी में देखा। मन में विशेष मोह होने से मैं थक गया। मुझे व्याकुल देखकर तब कृपालु श्री रघुवीर हँस दिए। हे धीर बुद्धि गरुड़जी! सुनिए, उनके हँसते ही मैं मुँह से बाहर आ गया। श्री रामचंद्रजी मेरे साथ फिर वही लड़कपन करने लगे। मैं करोड़ों (असंख्य) प्रकार से मन को समझाता था, पर वह शांति नहीं पाता था। यह (बाल) चरित्र देखकर और पेट के अंदर (देखी हुई) उस प्रभुता का स्मरण कर मैं शरीर की सुध भूल गया और हे आर्तजनों के रक्षक! रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए, पुकारता हुआ पृथ्वी पर गिर पड़ा। मुख से बात नहीं निकलती थी! तदनन्तर प्रभु ने मुझे प्रेमविह्वल देखकर अपनी माया की प्रभुता (प्रभाव) को रोक लिया। प्रभु ने अपना करकमल मेरे सिर पर रखा। दीनदयालु ने मेरा संपूर्ण दुःख हर लिया।

कीन्ह राम मोहि बिगत बिमोहा। सेवक सुखद कृपा संदोहा॥
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी। मन महँ होइ हरष अति भारी॥3॥
सेवकों को सुख देने वाले, कृपा के समूह (कृपामय) श्री रामजी ने मुझे मोह से सर्वथा रहित कर दिया। उनकी पहले वाली प्रभुता को विचार-विचारकर (याद कर-करके) मेरे मन में बड़ा भारी हर्ष हुआ॥3॥
भगत बछलता प्रभु कै देखी। उपजी मम उर प्रीति बिसेषी॥
सजल नयन पुलकित कर जोरी। कीन्हिउँ बहु बिधि बिनय बहोरी॥4॥
प्रभु की भक्तवत्सलता देखकर मेरे हृदय में बहुत ही प्रेम उत्पन्न हुआ। फिर मैंने (आनंद से) नेत्रों में जल भरकर, पुलकित होकर और हाथ जोड़कर बहुत प्रकार से विनती की॥4॥
दोहा :
सुनि सप्रेम मम बानी देखि दीन निज दास।
बचन सुखद गंभीर मृदु बोले रमानिवास॥83 क॥
मेरी प्रेमयुक्त वाणी सुनकर और अपने दास को दीन देखकर रमानिवास श्री रामजी सुखदायक, गंभीर और कोमल वचन बोले-॥83 (क)॥
काकभसुंडि मागु बर अति प्रसन्न मोहि जानि।
अनिमादिक सिधि अपर रिधि मोच्छ सकल सुख खानि॥83 ख॥
हे काकभुशुण्डि! तू मुझे अत्यंत प्रसन्न जानकर वर माँग। अणिमा आदि अष्ट सिद्धियाँ, दूसरी ऋद्धियाँ तथा संपूर्ण सुखों की खान मोक्ष,॥83 (ख)॥
चौपाई :
ग्यान बिबेक बिरति बिग्याना। मुनि दुर्लभ गुन जे जग नाना॥
आजु देउँ सब संसय नाहीं। मागु जो तोहि भाव मन माहीं॥1॥
-ज्ञान, विवेक, वैराग्य, विज्ञान, (तत्त्वज्ञान) और वे अनेकों गुण जो जगत् में मुनियों के लिए भी दुर्लभ हैं, ये सब मैं आज तुझे दूँगा, इसमें संदेह नहीं। जो तेरे मन भावे, सो माँग ले॥1॥

सुनि प्रभु बचन अधिक अनुरागेउँ। मन अनुमान करन तब लागेउँ॥
प्रभु कह देन सकल सुख सही। भगति आपनी देन न कही॥2॥
प्रभु के वचन सुनकर मैं बहुत ही प्रेम में भर गया। तब मन में अनुमान करने लगा कि प्रभु ने सब सुखों के देने की बात कही, यह तो सत्य है, पर अपनी भक्ति देने की बात नहीं कही॥2॥
भगति हीन गुन सब सुख ऐसे। लवन बिना बहु बिंजन जैसे॥
भजन हीन सुख कवने काजा। अस बिचारि बोलेउँ खगराजा॥3॥
भक्ति से रहित सब गुण और सब सुख वैसे ही (फीके) हैं जैसे नमक के बिना बहुत प्रकार के भोजन के पदार्थ। भजन से रहित सुख किस काम के? हे पक्षीराज! ऐसा विचार कर मैं बोला-॥3॥
जौं प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू। मो पर करहु कृपा अरु नेहू॥
मन भावत बर मागउँ स्वामी। तुम्ह उदार उर अंतरजामी॥4॥
हे प्रभो! यदि आप प्रसन्न होकर मुझे वर देते हैं और मुझ पर कृपा और स्नेह करते हैं, तो हे स्वामी! मैं अपना मनभाया वर माँगता हूँ। आप उदार हैं और हृदय के भीतर की जानने वाले हैं॥4॥
दोहा :
*अबिरल भगति बिसुद्ध तव श्रुति पुरान जो गाव।
जेहि खोजत जोगीस मुनि प्रभु प्रसाद कोउ पाव॥84 क॥
-आपकी जिस अविरल (प्रगाढ़) एवं विशुद्ध (अनन्य निष्काम) भक्ति को श्रुति और पुराण गाते हैं, जिसे योगीश्वर मुनि खोजते हैं और प्रभु की कृपा से कोई विरला ही जिसे पाता है॥84 (क)॥
भगत कल्पतरू प्रनत हित कृपा सिंधु सुखधाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम॥84 ख॥
हे भक्तों के (मन इच्छित फल देने वाले) कल्पवृक्ष! हे शरणागत के हितकारी! हे कृपासागर! हे सुखधान श्री रामजी! दया करके मुझे अपनी वही भक्ति दीजिए॥84 (ख)॥
चौपाई :

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक। बोले बचन परम सुखदायक॥
सुनु बायस तैं सहज सयाना। काहे न मागसि अस बरदाना॥1॥
'एवमस्तु' (ऐसा ही हो) कहकर रघुवंश के स्वामी परम सुख देने वाले वचन बोले- हे काक! सुन, तू स्वभाव से ही बुद्धिमान् है। ऐसा वरदान कैसे न माँगता?॥1॥

८४ दोहे के बाद आगे

कागभुसुडी द्वारा कलिकाल का वर्णन

तुलसीदास जी का समय अकबर-जहाँगीर का समय कलियुग का ही हिस्सा है। लोकनायक कवि तुलसीदास अपने समय के समाज और व्यक्तियों के गिरी हुई जीवनमूल्य का ही वर्णन है। और आज के लिये उतना ही सच है। कुछ बातें आश्चर्य में डाल देता है।

सो कलिकाल कठिन उरगारी। पाप परायन सब नर नारी॥4॥

*

हे गरुड़जी! वह कलिकाल बड़ा कठिन था। उसमें सभी स्त्री-पुरूष जीवन में पापकर्म करने में लगे थे॥4॥

दोहा :

कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सदग्रंथ।
दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ॥97क॥

कलियुग के पापकर्म की बहुतायत के कारण धर्म प्रभावित हो रहे थे, सनातन धर्म के आधार ग्रंथ अलभ्य होते जा रहे या हो चुके थे। दम्भियों ने अपनी बुद्धि से कल्पना कर-करके बहुत से घर्म के नाम बहुत से पंथ बना उसका अपने तथाकथित प्रवचनों से प्रचार प्रसार कर रहे थे, 97क।

**

भए लोग सब मोहबस लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ग्यान निधि कहउँ कछुक कलिधर्म॥97 ख॥

*

सभी लोग मोह के वश हो गए, शुभ कर्मों को लोभ ने हड़प लिया। हे ज्ञान के भंडार! हे श्री हरि के वाहन! सुनिए, अब मैं कलि के कुछ धर्म कहता हूँ॥97 (ख)॥

*

**

चौपाई :

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी। श्रुति बिरोध रत सब नर नारी।
द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन। कोउ नहिं मान निगम अनुसासन॥1॥

*

कलियुग में न वर्णधर्म रहता है, न चारों आश्रम रहते हैं। सब पुरुष-स्त्री वेद के विरोध में लगे रहते हैं। ब्राह्मण वेदों के बेचने वाले और राजा प्रजा को खा डालने वाले होते हैं। वेद की आज्ञा कोई नहीं मानता॥1॥

*

**

मारग सोइ जा कहुँ जोइ भावा। पंडित सोइ जो गाल बजावा॥
मिथ्यारंभ दंभ रत जोई। ता कहुँ संत कहइ सब कोई॥2॥

*

जिसको जो अच्छा लग जाए, वही मार्ग है। जो डींग मारता है, वही पंडित है। जो मिथ्या आरंभ करता (आडंबर रचता) है और जो दंभ में रत है, उसी को सब कोई संत कहते हैं॥2॥

*

**

सोइ सयान जो परधन हारी। जो कर दंभ सो बड़ आचारी॥
जो कह झूँठ मसखरी जाना। कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना॥3॥

*

जो (जिस किसी प्रकार से) दूसरे का धन हरण कर ले, वही बुद्धिमान है। जो दंभ करता है, वही बड़ा आचारी है। जो झूठ बोलता है और हँसी-दिल्लगी करना जानता है, कलियुग में वही गुणवान कहा जाता है॥3॥

*

**

निराचार जो श्रुति पथ त्यागी। कलिजुग सोइ ग्यानी सो बिरागी॥
जाकें नख अरु जटा बिसाला। सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला॥4॥

*

जो आचारहीन है और वेदमार्ग को छोड़े हुए है, कलियुग में वही ज्ञानी और वही वैराग्यवान् है। जिसके बड़े-बड़े नख और लंबी-लंबी जटाएँ हैं, वही कलियुग में प्रसिद्ध तपस्वी है॥4॥

**

दोहा :

असुभ बेष भूषन धरें भच्छाभच्छ जे खाहिं।
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलिजुग माहिं॥98 क॥

*

जो अमंगल वेष और अमंगल भूषण धारण करते हैं और भक्ष्य-भक्ष्य (खाने योग्य और न खाने योग्य) सब कुछ खा लेते हैं वे ही योगी हैं, वे ही सिद्ध हैं और वे ही मनुष्य कलियुग में पूज्य हैं॥98 (क)॥

**

सोरठा :

जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार तेइ बकता कलिकाल महुँ॥98 ख॥

*

जिनके आचरण दूसरों का अपकार (अहित) करने वाले हैं, उन्हीं का बड़ा गौरव होता है और वे ही सम्मान के योग्य होते हैं। जो मन, वचन और कर्म से लबार (झूठ बकने वाले) हैं, वे ही कलियुग में वक्ता माने जाते हैं॥98 (ख)॥

*

**

चौपाई :

नारि बिबस नर सकल गोसाईं। नाचहिं नट मर्कट की नाईं॥

*

हे गोसाईं! सभी मनुष्य स्त्रियों के विशेष वश में हैं और बाजीगर के बंदर की तरह (उनके नचाए) नाचते हैं।

**

सब नर काम लोभ रत क्रोधी। देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी॥
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी। भजहिं नारि पर पुरुष अभागी॥2॥

*

सभी पुरुष काम और लोभ में तत्पर और क्रोधी होते हैं। देवता, ब्राह्मण, वेद और संतों के विरोधी होते हैं। अभागिनी स्त्रियाँ गुणों के धाम सुंदर पति को छोड़कर पर पुरुष का सेवन करती हैं॥2॥

*

**

सौभागिनीं बिभूषन हीना। बिधवन्ह के सिंगार नबीना॥
गुर सिष बधिर अंध का लेखा। एक न सुनइ एक नहिं देखा॥3॥

*

सुहागिनी स्त्रियाँ तो आभूषणों से रहित होती हैं, पर विधवाओं के नित्य नए श्रृंगार होते हैं। शिष्य और गुरु में बहरे और अंधे का सा हिसाब होता है। एक (शिष्य) गुरु के उपदेश को सुनता नहीं, एक (गुरु) देखता नहीं (उसे ज्ञानदृष्टि) प्राप्त नहीं है)॥3॥

*

**

हरइ सिष्य धन सोक न हरई। सो गुर घोर नरक महुँ परई॥
मातु पिता बालकन्हि बोलावहिं। उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं॥4॥

*

जो गुरु शिष्य का धन हरण करता है, पर शोक नहीं हरण करता, वह घोर नरक में पड़ता है। माता-पिता बालकों को बुलाकर वही धर्म सिखलाते हैं, जिससे पेट भरे॥4॥

*

**

दोहा :

ब्रह्म ग्यान बिनु नारि नर कहहिं न दूसरि बात।
कौड़ी लागि लोभ बस करहिं बिप्र गुर घात॥99 क॥

*

स्त्री-पुरुष ब्रह्मज्ञान के सिवा दूसरी बात नहीं करते, पर वे लोभवश कौड़ियों (बहुत थोड़े लाभ) के लिए ब्राह्मण और गुरु की हत्या कर डालते हैं॥99 (क)॥

*

**

बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु घाटि।
जानइ ब्रह्म सो बिप्रबर आँखि देखावहिं डाटि॥99 ख॥

*

शूद्र ब्राह्मणों से विवाद करते हैं (और कहते हैं) कि हम क्या तुमसे कुछ कम हैं? जो ब्रह्म को जानता है वही श्रेष्ठ ब्राह्मण है। (ऐसा कहकर) वे उन्हें डाँटकर आँखें दिखलाते हैं॥99 (ख)॥

*

**

चौपाई :

पर त्रिय लंपट कपट सयाने। मोह द्रोह ममता लपटाने॥
तेइ अभेदबादी ग्यानी नर। देखा मैं चरित्र कलिजुग कर॥1॥

*

जो पराई स्त्री में आसक्त, कपट करने में चतुर और मोह, द्रोह और ममता में लिपटे हुए हैं, वे ही मनुष्य अभेदवादी (ब्रह्म और जीव को एक बताने वाले) ज्ञानी हैं। मैंने उस कलियुग का यह चरित्र देखा॥1॥

*

**

जे बरनाधम तेलि कुम्हारा। स्वपच किरात कोल कलवारा।
पनारि मुई गृह संपति नासी। मूड़ मुड़ाइ होहिं संन्यासी॥3॥

*

तेली, कुम्हार, चाण्डाल, भील, कोल और कलवार आदि जो वर्ण में नीचे हैं, स्त्री के मरने पर अथवा घर की संपत्ति नष्ट हो जाने पर सिर मुँड़ाकर संन्यासी हो जाते हैं॥3॥

*

**

ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं। उभय लोक निज हाथ नसावहिं॥
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी। निराचार सठ बृषली स्वामी॥4॥

*

वे अपने को ब्राह्मणों से पुजवाते हैं और अपने ही हाथों दोनों लोक नष्ट करते हैं। ब्राह्मण अपढ़, लोभी, कामी, आचारहीन, मूर्ख और नीची जाति की व्यभिचारिणी स्त्रियों के स्वामी होते हैं॥4॥

*

**

**

श्रुति संमत हरि भक्ति पथ संजुत बिरति बिबेक।
तेहिं न चलहिं नर मोह बस कल्पहिं पंथ अनेक॥100 ख॥

*

वेद सम्मत तथा वैराग्य और ज्ञान से युक्त जो हरिभक्ति का मार्ग है, मोहवश मनुष्य उस पर नहीं चलते और अनेकों नए-नए पंथों की कल्पना करते हैं॥100 (ख)॥

*

**

छंद :

बहु दाम सँवारहिं धाम जती। बिषया हरि लीन्हि न रहि बिरती॥
तपसी धनवंत दरिद्र गृही। कलि कौतुक तात न जात कही॥1॥

*

संन्यासी बहुत धन लगाकर घर सजाते हैं। उनमें वैराग्य नहीं रहा, उसे विषयों ने हर लिया। तपस्वी धनवान हो गए और गृहस्थ दरिद्र। हे तात! कलियुग की लीला कुछ कही नहीं जाती॥1॥

*

**

कुलवंति निकारहिं नारि सती। गृह आनहिं चेरि निबेरि गती॥
सुत मानहिं मातु पिता तब लौं। अबलानन दीख नहीं जब लौं॥2॥

*

कुलवती और सती स्त्री को पुरुष घर से निकाल देते हैं और अच्छी चाल को छोड़कर घर में दासी को ला रखते हैं। पुत्र अपने माता-पिता को तभी तक मानते हैं, जब तक स्त्री का मुँह नहीं दिखाई पड़ता॥2॥

*

**

ससुरारि पिआरि लगी जब तें। रिपुरूप कुटुंब भए तब तें॥
नृप पाप परायन धर्म नहीं। करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं॥3॥

*

जब से ससुराल प्यारी लगने लगी, तब से कुटुम्बी शत्रु रूप हो गए। राजा लोग पाप परायण हो गए, उनमें धर्म नहीं रहा। वे प्रजा को नित्य ही (बिना अपराध) दंड देकर उसकी विडंबना (दुर्दशा) किया करते हैं॥3॥

*

**

धनवंत कुलीन मलीन अपी। द्विज चिन्ह जनेउ उघार तपी॥
नहिं मान पुरान न बेदहि जो। हरि सेवक संत सही कलि सो॥4॥

*

धनी लोग मलिन (नीच जाति के) होने पर भी कुलीन माने जाते हैं। द्विज का चिह्न जनेऊ मात्र रह गया और नंगे बदन रहना तपस्वी का। जो वेदों और पुराणों को नहीं मानते, कलियुग में वे ही हरिभक्त और सच्चे संत कहलाते हैं॥4॥

*

**

कबि बृंद उदार दुनी न सुनी। गुन दूषक ब्रात न कोपि गुनी॥
कलि बारहिं बार दुकाल परै। बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै॥5॥

*

कवियों के तो झुंड हो गए, पर दुनिया में उदार (कवियों का आश्रयदाता) सुनाई नहीं पड़ता। गुण में दोष लगाने वाले बहुत हैं, पर गुणी कोई भी नहीं। कलियुग में बार-बार अकाल पड़ते हैं। अन्न के बिना सब लोग दुःखी होकर मरते हैं॥5॥

*

**

दोहा :

सुनु खगेस कलि कपट हठ दंभ द्वेष पाषंड।
मान मोह मारादि मद ब्यापि रहे ब्रह्मंड॥101 क॥

*

हे पक्षीराज गरुड़जी! सुनिए कलियुग में कपट, हठ (दुराग्रह), दम्भ, द्वेष, पाखंड, मान, मोह और काम आदि (अर्थात् काम, क्रोध और लोभ) और मद ब्रह्माण्डभर में व्याप्त हो गए (छा गए)॥101 (क)॥

*

**

छंद :

अबला कच भूषन भूरि छुधा। धनहीन दुखी ममता बहुधा॥
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्म रता। मति थोरि कठोरि न कोमलता॥1॥

*

स्त्रियों के बाल ही भूषण हैं (उनके शरीर पर कोई आभूषण नहीं रह गया) और उनको भूख बहुत लगती है (अर्थात् वे सदा अतृप्त ही रहती हैं)। वे धनहीन और बहुत प्रकार की ममता होने के कारण दुःखी रहती हैं। वे मूर्ख सुख चाहती हैं, पर धर्म में उनका प्रेम नहीं है। बुद्धि थोड़ी है और कठोर है, उनमें कोमलता नहीं है॥1॥

*

**

नर पीड़ित रोग न भोग कहीं। अभिमान बिरोध अकारनहीं॥
लघु जीवन संबदु पंच दसा। कलपांत न नास गुमानु असा॥2॥

*

मनुष्य रोगों से पीड़ित हैं, भोग (सुख) कहीं नहीं है। बिना ही कारण अभिमान और विरोध करते हैं। दस-पाँच वर्ष का थोड़ा सा जीवन है, परंतु घमंड ऐसा है मानो कल्पांत (प्रलय) होने पर भी उनका नाश नहीं होगा॥2॥

*

**

कलिकाल बिहाल किए मनुजा। नहिं मानत क्वौ अनुजा तनुजा॥
नहिं तोष बिचार न सीतलता। सब जाति कुजाति भए मगता॥3॥

*

कलिकाल ने मनुष्य को बेहाल (अस्त-व्यस्त) कर डाला। कोई बहिन-बेटी का भी विचार नहीं करता। (लोगों में) न संतोष है, न विवेक है और न शीतलता है। जाति, कुजाति सभी लोग भीख माँगने वाले हो गए॥3॥

*

**

इरिषा परुषाच्छर लोलुपता। भरि पूरि रही समता बिगता॥
सब लोग बियोग बिसोक हए। बरनाश्रम धर्म अचार गए॥4॥

*

ईर्षा (डाह), कडुवे वचन और लालच भरपूर हो रहे हैं, समता चली गई। सब लोग वियोग और विशेष शोक से मरे पड़े हैं। वर्णाश्रम धर्म के आचरण नष्ट हो गए॥4॥

*

**

दम दान दया नहिं जानपनी। जड़ता परबंचनताति घनी॥
तनु पोषक नारि नरा सगरे। परनिंदक जे जग मो बगरे॥5॥

*

इंद्रियों का दमन, दान, दया और समझदारी किसी में नहीं रही। मूर्खता और दूसरों को ठगना, यह बहुत अधिक बढ़ गया। स्त्री-पुरुष सभी शरीर के ही पालन-पोषण में लगे रहते हैं। जो पराई निंदा करने वाले हैं, जगत् में वे ही फैले हैं॥5॥

*

**

दोहा :

सुनु ब्यालारि काल कलि मल अवगुन आगार।
गुनउ बहुत कलिजुग कर बिनु प्रयास निस्तार॥102 क॥

*

हे सर्पों के शत्रु गरुड़जी! सुनिए, । कलिकाल पाप और अवगुणों का घर है, किंतु कलियुग में एक गुण भी बड़ा है कि उसमें बिना ही परिश्रम भवबंधन से छुटकारा मिल जाता है॥102 (क)॥

**

कृतजुग त्रेताँ द्वापर पूजा मख अरु जोग।
जो गति होइ सो कलि हरि नाम ते पावहिं लोग॥102 ख॥

ज्ञान-भक्ति-निरुपण, ज्ञान-दीपक और भक्ति की महान् महिमा

सगुन राम की भक्ति

कागभुसुण्डि पशु-पक्षी, देवता या मनुष्य का, जो भी शरीर धारण करते, उस-उस शरीर में श्री रामजी का भजन जारी रखते। इस प्रकार वे अत्यन्त सुखी हो गया, परंतु एक ब्यथा उन्हें बनी रहती थी । उन्हें अपने गुरुजी का कोमल, सुशील स्वभाव कभी नहीं भूलता, क्योंकि वैसे कोमल स्वभाव दयालु गुरु का उन्होंने अपमान किया था। वह दुःख उन्हें सदा

बना रहा। उन्होंने अंतिम शरीर सर्वोत्तम ब्राह्मण का पाया, वहाँ भी बालक की तरह अन्य बालकों में मिलकर श्री रघुनाथजी की ही सब लीलाएँ का खेल खेला करते थे।

सयाना होने पर उनके पिता उन्हें पढ़ाने लगे। वे समझते, सुनते और विचारते, पर उन्हें पढ़ना अच्छा नहीं लगता था। उनके मन से सारी वासनाएँ भाग गईं थी। केवल श्री रामजी के चरणों में लव लग गई, **'प्रेम मगन मोहि कछु न सोहाई। हारेउ पिता पढ़ाइ पढ़ाई'।** प्रेम में मग्न रहने के कारण मुझे कुछ भी नहीं सुहाता। पिताजी पढ़ा-पढ़ाकर हार गए। पिता-माता के मरने के बाद वे श्री रामजी का भजन करने के लिए वन में चले गये। जहाँ-जहाँ मुनीश्वरों के आश्रम पाते, उनके मिल उनको सिर नवाते रहे। उनसे मैं श्री रामजी के गुणों की कथाएँ पूछते, वे कहते जिसे हर्षित होकर सुनते। इस प्रकार वे सदा-सर्वदा श्री हरि के गुणानुवाद सुनते फिरते शिवजी की कृपा से वे जहाँ चाहते, वहीं जा सकते थे। उनकी तीनों प्रकार की (पुत्र की, धन की और मान की) गहरी प्रबल वासनाएँ छूट गईं और हृदय में एक यह लालसा अत्यंत बढ़ गई कि जब वे श्री रामजी के चरणकमलों के दर्शन करें, तब ही अपना जन्म सफल हुआ समझे। जिनसे भी वे पूछते, वे ही मुनि कहते- "ईश्वर सर्वभूतमय है। और वह निर्गुण मत उन्हें नहीं सुहाता था। हृदय में सगुण ब्रह्म पर प्रीति बढ़ रही थी ।

"जेहि पूँछउँ सोइ मुनि अस कहई। ईस्वर सर्ब भूतमय अहई॥
निर्गुन मत नहिं मोहि सोहाई। सगुन ब्रह्म रति उर अधिकाई॥8॥"

उनको का मन तो श्री रामजी के चरणों में लग गया और क्षण-क्षण नया-नया प्रेम प्राप्त करते हुए श्री रघुनाथजी का यश गाते फिरते थे। इसी क्रम में काकभुसुण्डी जी को सुमेरु पर्वत के शिखर पर बड़ की छाया में लोमश मुनि बैठे देखे, कृपालु मुनि उनसे आदर से पूछे- हे ब्राह्मण! आप किस कार्य से यहाँ आए हैं। तब कागभुसुण्डी ने लोटस मुनि से बड़ी विनम्रता से सगुण ब्रह्म की आराधना की प्रक्रिया का ज्ञान दीजिये।

लोमस मुनि ने उन्हें श्री रघुनाथजी के गुणों की कुछ कथाएँ आदर सहित कहीं। फिर वे ब्रह्मज्ञान परायण विज्ञानवान् लोमस मुनि भुसुण्डीजी को योग्य अधिकारी समझ अद्वैत अगुन ब्रह्म के बारे में बताने लगे-

---

लागे करन ब्रह्म उपदेसा। अज अद्वैत अगुन हृदयेसा॥
अकल अनीह अनाम अरूपा। अनुभव गम्य अखंड अनूपा॥2॥

ब्रह्म का उपदेश करने लगे कि वह अजन्मा है, अद्वैत है, निर्गुण है और हृदय का स्वामी (अंतर्यामी) है। उसे कोई बुद्धि के द्वारा माप नहीं सकता, वह इच्छारहित, नामरहित, रूपरहित, अनुभव से जानने योग्य, अखण्ड और उपमारहित है॥2॥

He started preaching Brahm that he is unborn, non-dual, nirguna and master of heart (antaryami). No one can measure it by the intellect, it is desire-less, nameless, formless, knowable by experience, unbroken and without simile॥2॥

मन गोतीत अमल अबिनासी। निर्बिकार निरवधि सुख रासी॥
सो तैं ताहि तोहि नहिं भेदा। बारि बीचि इव गावहिं बेदा॥3॥

वह मन और इंद्रियों से परे, निर्मल, विनाशरहित, निर्विकार, सीमारहित और सुख की राशि है। वेद ऐसा गाते हैं कि वही तू है, (तत्वमसि), जल और जल की लहर की भाँति उसमें और तुझमें कोई भेद नहीं है॥3॥

He is pure, without destruction, formless, limitless and the ultimate happiness or bliss, beyond the mind and the senses. The Vedas sing that 'That is You', (Tatvamasi), like a wave of water and water, there is no difference between him and you.

मुनि ने अनेकों प्रकार से कागभुसुण्डी को निर्गुण मत समझाने की कोशिश की, पर सगुन ब्रह्म के प्रति कागभुसुण्डी इतने समर्पित थे कि बार बार केवल सगुण ब्रह्म राम को अपने आँखों से देख सकने की क्षमता पाने का उपदेश दीजिये। उनको देखने के बाद ही वे निर्गुन ब्रह्म का उपदेश सुनेगें। **पर** मुनि उनकी प्रगाढ़ रामभक्ति को समझ नहीं पाये और सगुण मत का खण्डन करते निर्गुण का निरूपण करते रहे। पर कागभुसुसुण्डी भी अपनी बात से नहीं डिगे। फिर लोमस ने काकभुसुण्डी को काग शरीर पा जाने का श्राप दे दिया था। कागभुसुण्डि तुरंत ही कौआ हो गये। और फिर मुनि के चरणों में सिर नवाकर और श्री रामजी का स्मरण कर हर्षित होकर उड़ चले।

काकभुसुण्डी का सगुन-निर्गुन पर बिचार

क्रोध कि द्वैतबुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अग्यान।
मायाबस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस समान॥111 ख॥॥2॥

बिना द्वैतबुद्धि के क्रोध कैसा और बिना अज्ञान के क्या द्वैतबुद्धि हो सकती है? माया के वश रहने वाला परिच्छिन्न जड़ जीव क्या ईश्वर के समान हो सकता है?॥111 (ख)॥
Can there is anger without believing in duality in intelligence and will dual intelligence can be there without ignorance? Can a perpetual inert being under the control of Maya be like God? 111 (b)॥

कबहुँ कि दुःख सब कर हित ताकें। तेहि कि दरिद्र परस मनि जाकें॥
परद्रोही की होहिं निसंका। कामी पुनि कि रहहिं अकलंका॥1॥

सबका हित चाहने से क्या कभी दुःख हो सकता है? जिसके पास पारसमणि है, उसके पास क्या दरिद्रता रह सकती है? दूसरे से द्रोह करने वाले क्या निर्भय हो सकते हैं और कामी क्या कलंकरहित (बेदाग) रह सकते हैं?॥1॥

Can there ever be sorrow for those thinking of the welfare of all? Can one who has Parasmani will have poverty? Can those who rebel against others be fearless and can the sinners remain spotless?॥1॥

काहू सुमति कि खल सँग जामी। सुभ गति पाव कि परत्रिय गामी॥2॥

ब्दुष्टों के संग से क्या किसी के सुबुद्धि उत्पन्न हुई है? परस्त्रीगामी क्या उत्तम गति पा सकता है?॥2॥

Has one's intelligence arisen from the association of the wicked? Can the adulterous achieve the best place in heaven after death?॥2॥

भव कि परहिं परमात्मा बिंदक। सुखी कि होहिं कबहुँ हरिनिंदक॥
राजु कि रहइ नीति बिनु जानें। अघ कि रहहिं हरिचरित बखानें॥3॥

परमात्मा को जानने वाले कहीं जन्म-मरण (के चक्कर) में पड़ सकते हैं? भगवान् की निंदा करने वाले कभी सुखी हो सकते हैं? नीति बिना जाने क्या राज्य रह सकता है? श्री हरि के चरित्र वर्णन करने पर क्या पाप रह सकते हैं?॥3॥

Can those who know God fall into the cycle of birth and death? Can those who criticise God ever be happy? Can a country survive without knowing policy of running government? Can there be any sins left even after describing the character of Shri Hari?॥3॥

अघ कि पिसुनता सम कछु आना। धर्म कि दया सरिस हरिजाना॥5॥

चुगलखोरी के समान क्या कोई दूसरा पाप है? और हे गरुड़जी! दया के समान क्या कोई दूसरा धर्म है?॥5॥

****

उमा जे राम चरन रत बिगत काम मद क्रोध।
निज प्रभुमय देखहिं जगत केहि सन करहिं बिरोध॥112 ख॥

(शिवजी कहते हैं-) हे उमा! जो श्री रामजी के चरणों के प्रेमी हैं और काम, अभिमान तथा क्रोध से रहित हैं, वे जगत् को अपने प्रभु से भरा हुआ देखते हैं, फिर वे किससे वैर करें॥112 (ख)॥
(Shiva says-) O Uma! Those who are lovers of Shri Ramji's feet and are free from lust, pride and anger, they see the world full of their Lord, then with whom should be their enmity?112 (b)॥

दोहा :

सदा राम प्रिय होहु तुम्ह सुभ गुन भवन अमान।
कामरूप इच्छामरन ग्यान बिराग निधान॥113 क॥

तुम सदा श्री रामजी को प्रिय होओ और कल्याण रूप गुणों के धाम, मानरहित, इच्छानुसार रूप धारण करने में समर्थ, इच्छा मृत्यु (जिसकी शरीर छोड़ने की इच्छा करने पर ही मृत्यु हो, बिना इच्छा के मृत्यु न हो) एवं ज्ञान और वैराग्य के भण्डार होओ॥113 (क)॥
You are always dear to Shri Ramji and the abode of virtues like welfare, without dignity, capable of taking the form as desired, Ichha-Mrityu (one who dies only when one wishes to leave the body, does not die without desire) and is the storehouse of knowledge and dispassion. be113(a)॥

भक्ति की महान् महिमा

भगति पच्छ हठ करि रहेउँ दीन्हि महारिषि साप।
मुनि दुर्लभ बर पायउँ देखहु भजन प्रताप॥114 ख॥

*

मैं हठ करके भक्ति पक्ष पर अड़ा रहा, जिससे महर्षि लोमश ने मुझे शाप दिया, परंतु उसका फल यह हुआ कि जो मुनियों को भी दुर्लभ है, वह वरदान मैंने पाया। भजन का प्रताप तो देखिए!॥114 (ख)॥

*

I stubbornly stuck to the devotional side, due to which Maharishi Lomash cursed me, but as a result, I got a boon which is rare even for sages. Look at the glory of the Hari-bhajan (hymn)! 114 (b)॥

**

चौपाई :

जे असि भगति जानि परिहरहीं। केवल ग्यान हेतु श्रम करहीं॥
ते जड़ कामधेनु गृहँ त्यागी। खोजत आकु फिरहिं पय लागी॥1॥

*

जो भक्ति की ऐसी महिमा जानकर भी उसे छोड़ देते हैं और केवल ज्ञान के लिए श्रम (साधन) करते हैं, वे मूर्ख घर पर खड़ी हुई कामधेनु को छोड़कर दूध के लिए मदार के पेड़ को खोजते फिरते हैं॥1॥

*

Those who, knowing such glory of devotion, leave it and do labor (means) only for the sake of knowledge, those fools, leaving Kamadhenu standing at home, wander in search of Madar tree for milk.

**

ज्ञान और भक्ति मार्ग का अंतर

भगतिहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा॥
नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर। सावधान सोउ सुनु बिहंगबर॥7॥

*

भक्ति और ज्ञान में कुछ भी भेद नहीं है। दोनों ही संसार से उत्पन्न क्लेशों को हर लेते हैं। हे नाथ! मुनीश्वर इनमें कुछ अंतर बतलाते हैं। हे पक्षीश्रेष्ठ! उसे सावधान होकर सुनिए॥7॥

*

There is no difference between devotion and knowledge. Both take away the troubles created by the world. Oh Nath! Munishwar explains some differences between them. O best bird! Listen attentively॥7

**

ग्यान बिराग जोग बिग्याना। ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना॥
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती। अबला अबल सहज जड़ जाती॥8॥हे हरि वाहन! सुनिए, ज्ञान, वैराग्य, योग, विज्ञान- ये सब पुरुष हैं। पुरुष का प्रताप सब प्रकार से प्रबल होता है। अबला (माया) स्वाभाविक ही निर्बल और जाति (जन्म) से ही जड़ (मूर्ख) होती है॥8॥

*

Hare the vehicle! Listen, knowledge, dispassion, yoga, science - all these are men. The majesty of man is strong in all respects. Abla (maya) is inherently weak and caste (birth) is root (fool) by nature.8॥

**

दोहा :

पुरुष त्यागि सक नारिहि जो बिरक्त मति धीर।
न तु कामी बिषयाबस बिमुख जो पद रघुबीर॥115 क॥

*

परंतु जो वैराग्यवान् और धीरबुद्धि पुरुष हैं वही स्त्री को त्याग सकते हैं, न कि वे कामी पुरुष, जो विषयों के वश में हैं (उनके गुलाम हैं) और श्री रघुवीर के चरणों से विमुख हैं॥115 (क)॥

*

But only those men who are detached and patient can renounce a woman, and not those virtuous men who are under the control of objects (their slaves) and are estranged from the feet of Shri Raghuveer.115 (a)

**

सोरठा :

सोउ मुनि ग्याननिधान मृगनयनी बिधु मुख निरखि।
बिबस होइ हरिजान नारि बिष्नु माया प्रगट॥115 ख॥

*

वे ज्ञान के भण्डार मुनि भी मृगनयनी (युवती स्त्री) के चंद्रमुख को देखकर विवश (उसके अधीन) हो जाते हैं। हे गरुड़जी! साक्षात् भगवान विष्णु की माया ही स्त्री रूप से प्रकट है॥115 (ख)॥

*

Even those sages, the storehouses of knowledge, are compelled (under her) to see the moon face of Mrignayani (a young woman). Oh, Mr. Garuda! Only the Maya of Lord Vishnu is manifested in the female form. 115 (b)

**

चौपाई :

यहाँ मैं कुछ पक्षपात नहीं रखता। वेद, पुराण और संतों का मत (सिद्धांत) ही कहता हूँ। हे गरुड़जी! यह अनुपम (विलक्षण) रीति है कि एक स्त्री के रूप पर दूसरी स्त्री मोहित नहीं होती॥1॥

*

माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ। नारि बर्ग जानइ सब कोऊ॥
पुनि रघुबीरहि भगति पिआरी। माया खलु नर्तकी बिचारी॥2॥

---

*

आप सुनिए, माया और भक्ति- ये दोनों ही स्त्री वर्ग की हैं, यह सब कोई जानते हैं। फिर श्री रघुवीर को भक्ति प्यारी है। माया बेचारी तो निश्चय ही नाचने वाली (नटिनी मात्र) है॥2॥

*

You listen, Maya and Bhakti - both of them belong to the women's class, everyone knows this. Then Shri Raghuveer loves devotion. Poor Maya is definitely a dancer (only naughty)॥2॥

**

भगतिहि सानुकूल रघुराया। ताते तेहि डरपति अति माया॥
राम भगति निरुपम निरुपाधी। बसइ जासु उर सदा अबाधी॥3॥

*

श्री रघुनाथजी भक्ति के विशेष अनुकूल रहते हैं। इसी से माया उससे अत्यंत डरती रहती है। जिसके हृदय में उपमारहित और उपाधिरहित (विशुद्ध) रामभक्ति सदा बिना किसी बाधा (रोक-टोक) के बसती है,॥3॥

*

Shri Raghunathji remains especially favorable for devotion. Because of this Maya is very afraid of him. In whose heart without any title and without title (pure) Ram Bhakti always resides without any hindrance, 3॥

**

तेहि बिलोकि माया सकुचाई। करि न सकइ कछु निज प्रभुताई॥
अस बिचारि जे मुनि बिग्यानी। जाचहिं भगति सकल सुख खानी॥4॥

*

उसे देखकर माया सकुचा जाती है। उस पर वह अपनी प्रभुता कुछ भी नहीं कर (चला) सकती। ऐसा विचार कर ही जो विज्ञानी मुनि हैं, वे भी सब सुखों की खानि भक्ति की ही याचना करते हैं॥4॥

*

Maya gets shocked seeing him. She cannot do anything (run) her dominion over him. Thinking like this, the scholars who are sages also pray for devotion to all the pleasures.

**

दोहा :

यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानइ कोइ।
जो जानइ रघुपति कृपाँ सपनेहुँ मोह न होइ॥116 क॥

*

श्री रघुनाथजी का यह रहस्य (गुप्त मर्म) जल्दी कोई भी नहीं जान पाता। श्री रघुनाथजी की कृपा से जो इसे जान जाता है, उसे स्वप्न में भी मोह नहीं होता॥116 (क)॥

*

No one can soon know this secret (gupt marma) of Shri Raghunathji. One who knows this by the grace of Shri Raghunathji does not have attachment even in dreams.116 (a)

**

औरउ ग्यान भगति कर भेद सुनहु सुप्रबीन।
जो सुनि होइ राम पद प्रीति सदा अबिछीन॥116 ख

*

हे सुचतुर गरुड़जी! ज्ञान और भक्ति का और भी भेद सुनिए, जिसके सुनने से श्री रामजी के चरणों में सदा अविच्छिन्न (एकतार) प्रेम हो जाता है॥116 (ख)॥

*

O such wise Garuda! Hear even more differences of knowledge and devotion, by listening to which there is always unceasing love at the feet of Shri Ramji.116 (b)

**

चौपाई :

सुनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनइ न जाइ बखानी॥
ईस्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुख रासी॥1॥

*

हे तात! यह अकथनीय कहानी (वार्ता) सुनिए। यह समझते ही बनती है, कही नहीं जा सकती। जीव ईश्वर का अंश है। (अतएव) वह अविनाशी, चेतन, निर्मल और स्वभाव से ही सुख की राशि है॥1॥

*

Hey tat! Hear this inexplicable story (talk). It is created only after understanding it, it cannot be done anywhere. The soul is a part of

God. (Therefore) He is imperishable, conscious, pure and is the sum of happiness by nature.

**

सो मायाबस भयउ गोसाईं। बँध्यो कीर मरकट की नाईं॥
जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई। जदपि मृषा छूटत कठिनई॥2॥

*

हे गोसाईं ! वह माया के वशीभूत होकर तोते और वानर की भाँति अपने आप ही बँध गया। इस प्रकार जड़ और चेतन में ग्रंथि (गाँठ) पड़ गई। यद्यपि वह ग्रंथि मिथ्या ही है, तथापि उसके छूटने में कठिनता है॥2॥

*

O Gosain! He was bound by Maya like a parrot and a monkey. Thus the gland (knot) fell between the root and the conscious. Although that gland is false, yet it is difficult to get rid of it2॥

**

तब ते जीव भयउ संसारी। छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी॥
श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई। छूट न अधिक अधिक अरुझाई॥3॥

---

*

तभी से जीव संसारी (जन्मने-मरने वाला) हो गया। अब न तो गाँठ छूटती है और न वह सुखी होता है। वेदों और पुराणों ने बहुत से उपाय बतलाए हैं, पर वह (ग्रंथि) छूटती नहीं वरन अधिकाधिक उलझती ही जाती है॥3॥

*

Since then the soul has become samsari (born and dies). Now neither the knot is released nor he is happy. Vedas and Puranas have given many remedies, but it (gland) does not leave but keeps getting entangled more and more.

**

जीव हृदयँ तम मोह बिसेषी। ग्रंथि छूट किमि परइ न देखी॥
अस संजोग ईस जब करई। तबहुँ कदाचित सो निरुअरई॥4॥

*
जीव के हृदय में अज्ञान रूपी अंधकार विशेष रूप से छा रहा है, इससे गाँठ देख ही नहीं पड़ती, छूटे तो कैसे? जब कभी ईश्वर ऐसा संयोग (जैसा आगे कहा जाता है) उपस्थित कर देते हैं तब भी कदाचित् ही वह (ग्रंथि) छूट पाती है॥4॥
*
The darkness of ignorance is especially prevailing in the heart of the soul, due to which the knot cannot be seen, how can it be released? Whenever God presents such a coincidence (as it is said later), even then hardly it (gland) gets released.

**

सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जौं हरि कृपाँ हृदयँ बस आई॥
जप तप ब्रत जम नियम अपारा। जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा॥5॥

*
श्री हरि की कृपा से यदि सात्विकी श्रद्धा रूपी सुंदर गो हृदय रूपी घर में आकर बस जाए, असंख्य जप, तप व्रत यम और नियमादि शुभ धर्म और आचार (आचरण), जो श्रुतियों ने कहे हैं,॥5॥
*

If by the grace of Shri Hari, Sattviki comes and settles in a house of beautiful cow heart in the form of reverence, innumerable chanting, austerity, fasting, Yama and Niyamadi, auspicious religion and conduct, which the Shrutis have said, ॥5॥

**

तेइ तृन हरित चरै जब गाई। भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई॥
नोइ निबृत्ति पात्र बिस्वासा। निर्मल मन अहीर निज दासा॥6॥

*

उन्हीं (धर्माचार रूपी) हरे तृणों (घास) को जब वह गो चरे और आस्तिक भाव रूपी छोटे बछड़े को पाकर वह पेन्हावे। निवृत्ति (सांसारिक विषयों से और प्रपंच से हटना) नोई (गो के दुहते समय पिछले पैर बाँधने की रस्सी) है, विश्वास (दूध दुहने का) बरतन है, निर्मल (निष्पाप) मन जो स्वयं अपना दास है। (अपने वश में है), दुहने वाला अहीर है॥6॥

*

When he eats the same (religious) green grass (grass) and after getting a small calf of the believer's spirit, he should penhave. Nivritti (removal from worldly objects and prapancha) is noi (rope to tie the hind legs while milking cow), Vishwas (milk for milking) is the vessel, Nirmal (without sin) mind which is its own slave. (under his control), the milker is Ahir॥6॥

**

परम धर्ममय पय दुहि भाई। अवटै अनल अकाम बनाई॥
तोष मरुत तब छमाँ जुड़ावै। धृति सम जावनु देइ जमावै॥7॥

*

हे भाई, इस प्रकार (धर्माचार में प्रवृत्त सात्विकी श्रद्धा रूपी गो से भाव, निवृत्ति और वश में किए हुए निर्मल मन की सहायता से) परम धर्ममय दूध दुहकर उसे निष्काम भाव

रूपी अग्नि पर भली-भाँति औटावें। फिर क्षमा और संतोष रूपी हवा से उसे ठंडा करें और धैर्य तथा शम (मन का निग्रह) रूपी जामन देकर उसे जमावें॥7॥

*

O brother, in this way (with the help of a pure mind set in the form of devotion, devotion and devotion from the soul of God engaged in righteousness), after milking the supreme righteous milk, make it well-rotted on the fire of Nishkaam Bhava. Then cool it with the air of forgiveness and contentment and give it the sweetness of patience and sham (control of the mind) and freeze it.

**

मुदिताँ मथै बिचार मथानी। दम अधार रजु सत्य सुबानी॥
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता। बिमल बिराग सुभग सुपुनीता॥8॥

*

तब मुदिता (प्रसन्नता) रूपी कमोरी में तत्व विचार रूपी मथानी से दम (इंद्रिय दमन) के आधार पर (दम रूपी खंभे आदि के सहारे) सत्य और सुंदर वाणी रूपी रस्सी लगाकर उसे मथें और मथकर तब उसमें से निर्मल, सुंदर और अत्यंत पवित्र वैराग्य रूपी मक्खन निकाल लें॥8॥

*

Then on the basis of Dum (sense suppression) in the form of Mudita (happiness) in the form of elemental thoughts (with the help of pillars etc.), churn it by putting a rope of truth and beautiful speech, and then churned out of it, pure, beautiful and very pure dispassion. Take out the form butter॥8॥

**

दोहा :

जोग अगिनि करि प्रगट तब कर्म सुभासुभ लाइ।
बुद्धि सिरावै ग्यान घृत ममता मल जरि जाइ॥117 क॥

*
तब योग रूपी अग्नि प्रकट करके उसमें समस्त शुभाशुभ कर्म रूपी ईंधन लगा दें (सब कर्मों को योग रूपी अग्नि में भस्म कर दें)। जब (वैराग्य रूपी मक्खन का) ममता रूपी मल, जल जाए, तब (बचे हुए) ज्ञान रूपी घी को (निश्चयात्मिका) बुद्धि से ठंडा करें॥117 (क)॥
*
Then by manifesting the fire of yoga, put fuel in it in the form of all good and bad deeds (burn all actions in the fire of yoga). When the feces (of butter in the form of dispassion) burns, then (the leftover) ghee of knowledge should be cooled by the intellect. 117 (a)
**

तब बिग्यानरूपिनी बुद्धि बिसद घृत पाइ।
चित्त दिआ भरि धरै दृढ़ समता दिअटि बनाइ॥117 ख॥

---

*
तब विज्ञान रूपिणी बुद्धि उस (ज्ञान रूपी) निर्मल घी को पाकर उससे चित्त रूपी दीए को भरकर, समता की दीवट बनाकर, उस पर उसे दृढ़तापूर्वक (जमाकर) रखें॥117 (ख)॥
*
Then the intellect of science, having found that pure ghee (in the form of knowledge), fill it with a lamp of the form of mind, make a lamp of equanimity, and keep it firmly (deposited) on it. 117 (b)
**

तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास तें काढ़ि।
तूल तुरीय सँवारि पुनि बाती करै सुगाढ़ि॥117 ग॥

*

(जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति) तीनों अवस्थाएँ और (सत्त्व, रज और तम) तीनों गुण रूपी कपास से तुरीयावस्था रूपी रूई को निकालकर और फिर उसे सँवारकर उसकी सुंदर कड़ी बत्ती बनाएँ॥117 (ग)॥

*

(Wake, dream and sleep) the three states and (sattva, raja and taama) three gunas (sattva, raja and tamas) by taking out the cotton of the turiya state and then grooming it to make a beautiful hard light. 117 (c)

**

सोरठा :

एहि बिधि लेसै दीप तेज रासि बिग्यानमय।
जातहिं जासु समीप जरहिं मदादिक सलभ सब॥117 घ॥

*

इस प्रकार तेज की राशि विज्ञानमय दीपक को जलावें, जिसके समीप जाते ही मद आदि सब पतंगे जल जाएँ॥117 (घ)॥

*

In this way, the amount of light should be lit by a scientific lamp, as soon as you go near which all the moths etc. will get burnt. 117 (d)

**

चौपाई :

सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडा। दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा॥
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा। तब भव मूल भेद भ्रम नासा॥1॥

*

'सोऽहमस्मि' (वह ब्रह्म मैं हूँ) यह जो अखंड (तैलधारावत् कभी न टूटने वाली) वृत्ति है, वही (उस ज्ञानदीपक की) परम प्रचंड दीपशिखा (लौ) है। (इस प्रकार) जब आत्मानुभव के सुख का सुंदर प्रकाश फैलता है, तब संसार के मूल भेद रूपी भ्रम का नाश हो जाता है,॥1॥

*

'Sohamasmi' (that Brahman I am) this unbroken (oil that never breaks) instinct, that same (that lamp of knowledge) is the supreme blazing lamp (flame). (Thus) when the beautiful light of the happiness of self-experience spreads, then the illusion of the original distinction of the world is destroyed, 1॥

**

प्रबल अबिद्या कर परिवारा। मोह आदि तब मिटइ अपारा॥
तब सोइ बुद्धि पाइ उँजिआरा। उर गृहँ बैठि ग्रंथि निरुआरा॥2॥

*

और महान् बलवती अविद्या के परिवार मोह आदि का अपार अंधकार मिट जाता है। तब वही (विज्ञानरूपिणी) बुद्धि (आत्मानुभव रूप) प्रकाश को पाकर हृदय रूपी घर में बैठकर उस जड़ चेतन की गाँठ को खोलती है॥2॥

*

And the immense darkness of the family attachment etc. of the great forceful Avidya disappears. Then the same (Vigyan-form) intellect (self-realization form) sits in the house of the heart and opens the knot of that inert consciousness.

**

छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई। तब यह जीव कृतारथ होई॥
छोरत ग्रंथ जानि खगराया। बिघ्न नेक करइ तब माया॥3॥

*

यदि वह (विज्ञान रूपिणी बुद्धि) उस गाँठ को खोलने पावे, तब यह जीव कृतार्थ हो, परंतु हे पक्षीराज गरुड़जी! गाँठ खोलते हुए जानकर माया फिर अनेकों विघ्न करती है॥3॥

*

If he (intellect of science) is able to untie that knot, then this creature will be grateful, but O bird king Garudji! Knowing that while opening the knot, Maya then creates many obstacles.

**

रिद्धि-सिद्धि प्रेरइ बहु भाई। बुद्धिहि लोभ दिखावहिं आई॥
कल बल छल करि जाहिं समीपा। अंचल बात बुझावहिं दीपा॥4॥

*

हे भाई! वह बहुत सी ऋद्धि-सिद्धियों को भेजती है, जो आकर बुद्धि को लोभ दिखाती हैं और वे ऋद्धि-सिद्धियाँ कल (कला), बल और छल करके समीप जाती और आँचल की वायु से उस ज्ञान रूपी दीपक को बुझा देती हैं॥4॥

*

Hey brother! She sends many Riddhi-Siddhis, who come and show greed to the intellect, and those Riddhi-Siddhis come near by tomorrow (art), force and deceit, and extinguish that lamp of knowledge with the wind of Aanchal.

**

होइ बुद्धि जौं परम सयानी। तिन्ह तन चितव न अनहित जानी॥
जौं तेहि बिघ्न बुद्धि नहिं बाधी। तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी॥5॥

**

यदि बुद्धि बहुत ही सयानी हुई, तो वह उन (ऋद्धि-सिद्धियों) को अहितकर (हानिकर) समझकर उनकी ओर ताकती नहीं। इस प्रकार यदि माया के विघ्नों से बुद्धि को बाधा न हुई, तो फिर देवता उपाधि (विघ्न) करते हैं॥5॥

*

If the intellect has become very mature, then it does not look towards them considering them (riddhi-siddhis) as injurious (harmful). In this way, if the intellect is not obstructed by the obstacles of Maya, then the deity gives the title (obstacle).

**

इंद्री द्वार झरोखा नाना। तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना॥
आवत देखहिं बिषय बयारी। ते हठि देहिं कपाट उघारी॥6॥

*

इंद्रियों के द्वार हृदय रूपी घर के अनेकों झरोखे हैं। वहाँ-वहाँ (प्रत्येक झरोखे पर) देवता थाना किए (अड्डा जमाकर) बैठे हैं। ज्यों ही वे विषय रूपी हवा को आते देखते हैं, त्यों ही हठपूर्वक किवाड़ खोल देते हैं॥6॥

*

The doors of the senses are the doors of the house of the heart. There (on each window) the deities are seated in the police station. As soon as they see the wind of the object coming, they stubbornly open the door.

**

जब सो प्रभंजन उर गृहँ जाई। तबहिं दीप बिग्यान बुझाई॥
ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा। बुद्धि बिकल भइ बिषय बतासा॥7॥

*

ज्यों ही वह तेज हवा हृदय रूपी घर में जाती है, त्यों ही वह विज्ञान रूपी दीपक बुझ जाता है। गाँठ भी नहीं छूटी और वह (आत्मानुभव रूप) प्रकाश भी मिट गया। विषय रूपी हवा से बुद्धि व्याकुल हो गई (सारा किया-कराया चौपट हो गया)॥7॥

*

As soon as that strong wind enters the house of the heart, the lamp of science gets extinguished. Even the knot did not leave, and that (atman experience form) light also disappeared. The intellect was disturbed by the wind of the subject (all the work done was ruined)॥7॥

**

इंद्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सोहाई। बिषय भोग पर प्रीति सदाई॥
बिषय समीर बुद्धि कत भोरी। तेहि बिधि दीप को बार बहोरी॥8॥

---

*

इंद्रियों और उनके देवताओं को ज्ञान (स्वाभाविक ही) नहीं सुहाता, क्योंकि उनकी विषय-भोगों में सदा ही प्रीति रहती है और बुद्धि को भी विषय रूपी हवा ने बावली बना दिया। तब फिर (दोबारा) उस ज्ञान दीप को उसी प्रकार से कौन जलावे?॥8॥

The senses and their deities do not like knowledge (naturally), because there is always love for their objects and pleasures and the intellect is also made fuzzy by the wind of the object. Then (again) who should light that lamp of knowledge in the same way?॥8॥

**

दोहा : तब फिरि जीव बिबिधि बिधि पावइ संसृति क्लेस।
हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ बिहगेस॥118 क॥

*

(इस प्रकार ज्ञान दीपक के बुझ जाने पर) तब फिर जीव अनेकों प्रकार से संसृति (जन्म-मरणादि) के क्लेश पाता है। हे पक्षीराज! हरि की माया अत्यंत दुस्तर है, वह सहज ही में तरी नहीं जा सकती॥118 (क)॥

*

(Thus after the lamp of knowledge is extinguished) Then the soul then experiences the tribulations of sansriti (birth-death) in many ways. O bird king! Hari's Maya is very bad, she cannot be easily trampled.118 (a)

**

कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक।
होइ घुनाच्छर न्याय जौं पुनि प्रत्यूह अनेक॥118 ख॥

*

ज्ञान कहने (समझाने) में कठिन, समझने में कठिन और साधने में भी कठिन है। यदि घुणाक्षर न्याय से (संयोगवश) कदाचित् यह ज्ञान हो भी जाए, तो फिर (उसे बचाए रखने में) अनेकों विघ्न हैं॥118 (ख)॥

*

Knowledge is difficult to say (explain), difficult to understand and difficult to cultivate. Even if this knowledge may be attained (by chance) by syllabic justice, then there are many obstacles (to preserve it) 118 (b)

**

चौपाई :

ग्यान पंथ कृपान कै धारा। परत खगेस होइ नहिं बारा॥
जो निर्बिघ्न पंथ निर्बहई। सो कैवल्य परम पद लहई॥1॥

*

ज्ञान का मार्ग कृपाण (दोधारी तलवार) की धार के समान है। हे पक्षीराज! इस मार्ग से गिरते देर नहीं लगती। जो इस मार्ग को निर्विघ्न निबाह ले जाता है, वही कैवल्य (मोक्ष) रूप परमपद को प्राप्त करता है॥1॥

*

The path of knowledge is like the edge of a kirpan (double-edged sword). O bird king! It doesn't take long to fall down this route. One who takes this path unhindered, he attains the supreme abode in the form of Kaivalya (salvation).

**

अति दुर्लभ कैवल्य परम पद। संत पुरान निगम आगम बद॥
राम भजत सोइ मुकुति गोसाईं। अनइच्छित आवइ बरिआईं॥2॥

*

संत, पुराण, वेद और (तंत्र आदि) शास्त्र (सब) यह कहते हैं कि कैवल्य रूप परमपद अत्यंत दुर्लभ है, किंतु हे गोसाईं! वही (अत्यंत दुर्लभ) मुक्ति श्री रामजी को भजने से बिना इच्छा किए भी जबर्दस्ती आ जाती है॥2॥

*

Saints, Puranas, Vedas and (Tantra etc.) Shastras (all) say that Paramapadha in Kaivalya form is extremely rare, but O Gosain! The same (extremely rare) liberation comes forcibly even without any desire by worshiping Shri Ramji.

**

अस बिचारि हरि भगत सयाने। मुक्ति निरादर भगति लुभाने॥
भगति करत बिनु जतन प्रयासा। संसृति मूल अबिद्या नासा॥4॥

*

ऐसा विचार कर बुद्धिमान् हरि भक्त भक्ति पर लुभाए रहकर मुक्ति का तिरस्कार कर देते हैं। भक्ति करने से संसृति (जन्म-मृत्यु रूप संसार) की जड़ अविद्या बिना ही यंत्र और परिश्रम के (अपने आप) वैसे ही नष्ट हो जाती है,॥4॥

*

Thinking like this, the wise Hari devotees, being tempted by devotion, despise liberation. By doing bhakti, the root of ignorance (the world in the form of birth-death) is destroyed in the same way (by itself) without any machinery and effort, 4॥

**

भोजन करिअ तृपिति हित लागी। जिमि सो असन पचवै जठरागी॥
असि हरि भगति सुगम सुखदाई। को अस मूढ़ न जाहि सोहाई॥5॥

*

जैसे भोजन किया तो जाता है तृप्ति के लिए और उस भोजन को जठराग्नि अपने आप (बिना हमारी चेष्टा के) पचा डालती है, ऐसी सुगम और परम सुख देने वाली हरि भक्ति जिसे न सुहावे, ऐसा मूढ़ कौन होगा?॥5॥

*

Just as food is eaten for satiety and that food is automatically digested by the stomach (without our efforts), who would be such an idiot, such easy and supremely pleasing Hari Bhakti, which is not liked?॥5॥

**

दोहा :

सेवक सेब्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगारि।
भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत बिचारि॥119 क॥

*

हे सर्पों के शत्रु गरुड़जी! मैं सेवक हूँ और भगवान् मेरे सेव्य (स्वामी) हैं, इस भाव के बिना संसार रूपी समुद्र से तरना नहीं हो सकता। ऐसा सिद्धांत विचारकर श्री रामचंद्रजी के चरण कमलों का भजन कीजिए॥119 (क)॥

*

O enemy of snakes, Garudji! I am the servant and the Lord is my sevya (master), without this feeling one cannot swim through the ocean of the world. Considering such a principle, worship the lotus feet of Shri Ramchandraji॥119 (a)

**

जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हि करइ चैतन्य।
अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य॥119 ख॥

*

जो चेतन को जड़ कर देता है और जड़ को चेतन कर देता है, ऐसे समर्थ श्री रघुनाथजी को जो जीव भजते हैं, वे धन्य हैं॥119 (ख)॥

*

Blessed are the creatures who worship such a capable Shri Raghunathji, who destroys the conscious and animates the matter.

**

भक्ति की महिमा

चौपाई :

कहेउँ ग्यान सिद्धांत बुझाई। सुनहु भगति मनि कै प्रभुताई॥
राम भगति चिंतामनि सुंदर। बसइ गरुड़ जाके उर अंतर॥1॥

*

मैंने ज्ञान का सिद्धांत समझाकर कहा। अब भक्ति रूपी मणि की प्रभुता (महिमा) सुनिए। श्री रामजी की भक्ति सुंदर चिंतामणि है। हे गरुड़जी! यह जिसके हृदय के अंदर बसती है,॥1॥

*

I explained the principle of knowledge and said. Now listen to the glory (glory) of the gem of devotion. The devotion of Shri Ramji is beautiful Chintamani. Oh, Mr. Garuda! In whose heart it resides, 1॥

**

परम प्रकास रूप दिन राती। नहिं कछु चहिअ दिआ घृत बाती॥
मोह दरिद्र निकट नहिं आवा। लोभ बात नहिं ताहि बुझावा॥2॥

*

वह दिन-रात (अपने आप ही) परम प्रकाश रूप रहता है। उसको दीपक, घी और बत्ती कुछ भी नहीं चाहिए। (इस प्रकार मणि का एक तो स्वाभाविक प्रकाश रहता है) फिर मोह रूपी दरिद्रता समीप नहीं आती (क्योंकि मणि स्वयं धनरूप है) और (तीसरे) लोभ रूपी हवा उस मणिमय दीप को बुझा नहीं सकती (क्योंकि मणि स्वयं प्रकाश रूप है, वह किसी दूसरे की सहायता से प्रकाश नहीं करती)॥2॥

*

He remains as the Supreme Light day and night (by itself). He doesn't need anything like lamp, ghee and light. (Thus one is the natural light of the gem) Then the poverty of attachment does not come near (because the gem itself is the form of wealth) and (third) the wind of greed cannot extinguish the gem (because the gem itself is the form of light, it cannot be extinguished by any Does not light with the help of another)॥2॥

**

प्रबल अबिद्या तम मिटि जाई। हारहिं सकल सलभ समुदाई॥
खल कामादि निकट नहिं जाहीं। बसइ भगति जाके उर माहीं॥3॥

*

(उसके प्रकाश से) अविद्या का प्रबल अंधकार मिट जाता है। मदादि पतंगों का सारा समूह हार जाता है। जिसके हृदय में भक्ति बसती है, काम, क्रोध और लोभ आदि दुष्ट तो उसके पास भी नहीं जाते॥3॥

*

(By His light) the strong darkness of ignorance is dispelled. Madadi loses the whole group of kites. In whose heart there is devotion, lust, anger and greed etc. wicked do not even approach him.

*

गरल सुधासम अरि हित होई। तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई॥
ब्यापहिं मानस रोग न भारी। जिन्ह के बस सब जीव दुखारी॥4॥

*

उसके लिए विष अमृत के समान और शत्रु मित्र हो जाता है। उस मणि के बिना कोई सुख नहीं पाता। बड़े-बड़े मानस रोग, जिनके वश होकर सब जीव दुःखी हो रहे हैं, उसको नहीं व्यापते॥4॥

*

(By His light) the strong darkness of ignorance is dispelled. Madadi loses the whole group of kites. In whose heart there is devotion, lust, anger and greed etc. wicked do not even approach him.

**

राम भगति मनि उर बस जाकें। दुख लवलेस न सपनेहुँ ताकें॥
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं॥5॥

*

श्री रामभक्ति रूपी मणि जिसके हृदय में बसती है, उसे स्वप्न में भी लेशमात्र दुःख नहीं होता। जगत में वे ही मनुष्य चतुरों के शिरोमणि हैं जो उस भक्ति रूपी मणि के लिए भली-भाँति यत्न करते हैं॥5॥

*

In whose heart the gem of Shri Ram Bhakti resides, he does not have the slightest sorrow even in a dream. Only those men in the world are the head of the clever, who strive hard for that gem of devotion.

**

सो मनि जदपि प्रगट जग अहई। राम कृपा बिनु नहिं कोउ लहई॥
सुगम उपाय पाइबे केरे। नर हतभाग्य देहिं भटभेरे॥6॥

*

यद्यपि वह मणि जगत् में प्रकट (प्रत्यक्ष) है, पर बिना श्री रामजी की कृपा के उसे कोई पा नहीं सकता। उसके पाने के उपाय भी सुगम ही हैं, पर अभागे मनुष्य उन्हें ठुकरा देते हैं॥6॥

*

Although that gem is manifest (perfect) in the world, but without the grace of Shri Ramji no one can find it. The ways to get it are also easy, but unfortunate people reject them.6॥

**

पावन पर्बत बेद पुराना। राम कथा रुचिराकर नाना॥
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी। ग्यान बिराग नयन उरगारी॥7॥

*

वेद-पुराण पवित्र पर्वत हैं। श्री रामजी की नाना प्रकार की कथाएँ उन पर्वतों में सुंदर खानें हैं। संत पुरुष (उनकी इन खानों के रहस्य को जानने वाले) मर्मी हैं और सुंदर बुद्धि (खोदने वाली) कुदाल है। हे गरुड़जी! ज्ञान और वैराग्य ये दो उनके नेत्र हैं॥7॥

*

Vedas and Puranas are sacred mountains. Various types of stories of Shri Ramji are beautiful mines in those mountains. The saintly man (the one who knows the secret of his mines) is a mortal and a beautiful intellect (the digger) is a spade. Oh, Mr. Garuda! Knowledge and dispassion are their two eyes.7॥

**

भाव सहित खोजइ जो प्रानी। पाव भगति मनि सब सुख खानी॥
मोरें मन प्रभु अस बिस्वासा। राम ते अधिक राम कर दासा॥8॥

*

जो प्राणी उसे प्रेम के साथ खोजता है, वह सब सुखों की खान इस भक्ति रूपी मणि को पा जाता है। हे प्रभो! मेरे मन में तो ऐसा विश्वास है कि श्री रामजी के दास श्री रामजी से भी बढ़कर हैं॥8॥

*

The creature who seeks it with love, finds this gem of devotion, the mine of all pleasures. Oh, Lord! It is such a belief in my mind that the servants of Shri Ramji are more than Shri Ramji.

**

राम सिंधु घन सज्जन धीरा। चंदन तरु हरि संत समीरा॥
सब कर फल हरि भगति सुहाई। सो बिनु संत न काहूँ पाई॥9॥

*

श्री रामचंद्रजी समुद्र हैं तो धीर संत पुरुष मेघ हैं। श्री हरि चंदन के वृक्ष हैं तो संत पवन हैं। सब साधनों का फल सुंदर हरि भक्ति ही है। उसे संत के बिना किसी ने नहीं पाया॥9॥

*

Shri Ramchandraji is the ocean and a patient saint is a cloud. Shri Hari is the sandalwood tree and Saint is the wind. The fruit of all means is beautiful Hari devotion. No one has found him without a saint॥9॥

**

अस बिचारि जोइ कर सतसंगा। राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा॥10॥

*

ऐसा विचार कर जो भी संतों का संग करता है, हे गरुड़जी उसके लिए श्री रामजी की भक्ति सुलभ हो जाती है॥10॥

*

Thinking like this, whoever associates with saints, O Garudji, the devotion of Shri Ramji becomes accessible to him.

**

दोहा :

ब्रह्म पयोनिधि मंदर ग्यान संत सुर आहिं।
कथा सुधा मथि काढ़हिं भगति मधुरता जाहिं॥120 क॥

*

ब्रह्म (वेद) समुद्र है, ज्ञान मंदराचल है और संत देवता हैं, जो उस समुद्र को मथकर कथा रूपी अमृत निकालते हैं, जिसमें भक्ति रूपी मधुरता बसी रहती है॥120 (क)॥

*

Brahm (Veda) is the ocean, knowledge is the sky and saints are the deities, who churn that ocean to extract the nectar of story, in which the sweetness of devotion resides. 120 (a)

**

बिरति चर्म असि ग्यान मद लोभ मोह रिपु मारि।
जय पाइअ सो हरि भगति देखु खगेस बिचारि॥120 ख॥

*

वैराग्य रूपी ढाल से अपने को बचाते हुए और ज्ञान रूपी तलवार से मद, लोभ और मोह रूपी वैरियों को मारकर जो विजय प्राप्त करती है, वह हरि भक्ति ही है, हे पक्षीराज! इसे विचार कर देखिए॥120 (ख)॥

*

The victory that one attains by protecting oneself from the shield of dispassion and by killing enemies of the form of madness, greed and delusion with the sword of knowledge, that is Hari Bhakti, O bird king! Think it over and see॥120 (b)॥

**

सप्तप्रश्न

पक्षी-राजसगरूण के सातों प्रश्न और उनके कागभुसुंडी दिये उत्तरों में शायद रामचरितमानस का सार है।

पक्षी-राज गरूड़ का प्रश्न

नाथ मोहि निज सेवक जानी। **सप्त प्रस्न*** मम कहहु बखानी॥1॥

*

पक्षीराज गरुड़जी फिर प्रेम सहित बोले- हे कृपालु! यदि मुझ पर आपका प्रेम है, तो हे नाथ! मुझे अपना सेवक जानकर मेरे सात प्रश्नों के उत्तर बखान कर कहिए॥1॥

*

Garuda (the king of birds) further submitted in loving tone. “If you cherish fondness for me , my gracious master, kindly recognise as your servant and answer me the following seven questions of mine.

**

प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा। **सब ते दुर्लभ कवन सरीरा॥१**
बड़ दुख कवन कवन सुख भारी। सोउ संछेपहिं कहहु बिचारी॥2॥२,३

*

हे धीर-बुद्धि नाथ! पहले तो यह बताइए कि **सबसे दुर्लभ कौन सा शरीर है फिर सबसे बड़ा दुःख कौन है और सबसे बड़ा सुख कौन है**, यह भी विचार कर संक्षेप में ही कहिए॥2॥

*

Tell me, first of all, my strong- minded master, **which form of all is the most difficult to obtain?** Next consider and **tell me briefly which is the greatest misery and which again is the highest pleasure.**

**

संत असंत मरम तुम्ह जानहु। तिन्ह **कर सहज सुभाव** बखानहु॥४
कवन पुन्य श्रुति बिदित बिसाला। कहहु कवन अघ परम कराला॥3॥५,६

*

संत और असंत का मर्म (भेद) आप जानते हैं, **उनके सहज स्वभाव का वर्णन कीजिए**। फिर कहिए कि **श्रुतियों में प्रसिद्ध सबसे महान् पुण्य कौन सा है और सबसे महान् भयंकर पाप कौन है**॥3॥

*

You know **the essential characteristics of the saints and the evil- minded, describe their innate disposition**. And also tell **which is the highest religious merits made known in the Vedas and which, again, is the most terrible sin.**

*

मानस रोग कहहु समुझाई। तुम्ह सर्बग्य कृपा अधिकाई॥७

*

फिर मानस रोगों को समझाकर कहिए। आप सर्वज्ञ हैं और मुझ पर आपकी कृपा भी बहुत है।

*

Further tell me in unambiguous terms the diseases of the mind, omniscient as you are and richly endowed with compassion.

**

काकभुशुण्डिजी का उत्तर

तात सुनहु सादर अति प्रीती। मैं संछेप कहउँ यह नीती॥4॥

*

Listen, dear Garuda, with reverence and apt attention while I tell you briefly y views on these questions.

*
हे तात अत्यंत आदर और प्रेम के साथ सुनिए। मैं यह नीति संक्षेप से कहता हूँ॥4॥
*
नर तन सम नहिं कवनिउ देही। जीव चराचर जाचत तेही॥
नरक स्वर्ग अपबर्ग निसेनी। ग्यान बिराग भगति सुभ देनी॥5॥
*
मनुष्य शरीर के समान कोई शरीर नहीं है। चर-अचर सभी जीव उसकी याचना करते हैं। वह मनुष्य शरीर नरक, स्वर्ग और मोक्ष की सीढ़ी है तथा कल्याणकारी ज्ञान, वैराग्य और भक्ति को देने वाला है॥5॥
*
There is no other form as good as the human body: every living creatures - whether animate or in animate- craves for it. It is the ladder that takes the soul either to hell or to heaven or again to final beatitude and is the bestower of blessings in the form of wisdom, dispassion, and devotion.
**

सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर। होहिं बिषय रत मंद मंद तर॥
काँच किरिच बदलें ते लेहीं। कर ते डारि परस मनि देहीं॥6॥
*
ऐसे मनुष्य शरीर को धारण (प्राप्त) करके भी जो लोग श्री हरि का भजन नहीं करते और नीच से भी नीच विषयों में अनुरक्त रहते हैं, वे पारसमणि को हाथ से फेंक देते हैं और बदले में काँच के टुकड़े ले लेते हैं॥6॥
*

**
नहिं **दरिद्र** सम दुख जग माहीं। **संत मिलन** सम सुख जग नाहीं॥
पर उपकार बचन मन काया। संत सहज सुभाउ खगराया॥7॥
*

जगत् में दरिद्रता के समान दुःख नहीं है तथा संतों के मिलने के समान जगत् में सुख नहीं है। और हे पक्षीराज! मन, वचन और शरीर से परोपकार करना, यह संतों का सहज स्वभाव है॥7॥

*

There is no misery in this world as terrible as poverty and no blessing as great as communion with saints. Beneficence in thought, word and deed is the innate disposition of saints, O, king of the birds.

**

संत सहहिं दुख पर हित लागी। पर दुख हेतु असंत अभागी॥
भूर्ज तरू सम संत कृपाला। पर हित निति सह बिपति बिसाला॥8॥

*

संत दूसरों की भलाई के लिए दुःख सहते हैं और अभागे असंत दूसरों को दुःख पहुँचाने के लिए। कृपालु संत भोज के वृक्ष के समान दूसरों के हित के लिए भारी विपत्ति सहते हैं (अपनी खाल तक उधड़वा लेते हैं)॥8॥

*

The saints undergo suffering in the interest of others while impious wretches do so with a view to tormenting others. Tender hearted saints, like the birch tree, submit to the greatest torture(even allow their skin to be peeled off) for the good of others.

**

उदय संतत सुखकारी। बिस्व सुखद जिमि इंदु तमारी॥
खल बिनु स्वारथ पर अपकारी। अहि मूषक इव सुनु उरगारी॥

*

दुष्ट बिना किसी स्वार्थ के साँप और चूहे के समान अकारण ही दूसरों का अपकार करते हैं॥9॥

*

While the wicked, like the hemp, have their skin flayed off and persist in order to be able to bind others (in the form of cords). Listen O enemy of snakes: like the rat and serpent, the wicked injure others without any gain to themselves.

**

परम धर्म श्रुति बिदित **अहिंसा। पर निंदा** सम अघ न गरीसा॥11॥

*

और संतों का अभ्युदय सदा ही सुखकर होता है, जैसे चंद्रमा और सूर्य का उदय विश्व भर के लिए सुखदायक है। वेदों में अहिंसा को परम धर्म माना है और परनिन्दा के समान भारी पाप नहीं है॥11॥

*

The advancement of a saint on the other hand, is conducive to joy, even as the rise of sun and moon brings delight to the whole universe.
A vow of non-violence is the highest religious merit known to the Vedas; and there no sin as grievous as speaking ill of others.

**

सुनहु तात अब मानस रोगा। जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा॥14॥
- हे तात! अब मानस रोग सुनिए, जिनसे सब लोग दुःख पाया करते हैं॥14॥

**

मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला। तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला॥
काम बात कफ **लोभ** अपारा। **क्रोध** पित्त नित छाती जारा॥15॥

*

सब रोगों की जड़ मोह (अज्ञान) है। उन व्याधियों से फिर और बहुत से शूल उत्पन्न होते हैं। काम वात है, लोभ अपार कफ का होना है और क्रोध पित्त है जो सदा छाती जलाता रहता है॥15॥

*

Infatuation is the root of all ailments and from these again arise many other troubles.Lust is a counterpart of wind and inordinate greed corresponds to an abundance of phlegm; while anger represents bile, which constantly burns the breast.

**

प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई। उपजइ सन्यपात दुखदाई॥
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब सूल नाम को जाना॥16॥

*

यदि कहीं ये तीनों भाई (वात, पित्त और कफ) प्रीति कर लें (मिल जाएँ), तो दुःखदायक सन्निपात रोग उत्पन्न होता है। कठिनता से प्राप्त (पूर्ण) होने वाले जो विषयों के मनोरथ हैं, वे ही सब शूल (कष्टदायक रोग) हैं, उनके नाम कौन जानता है (अर्थात् वे अपार हैं)॥16॥

*

Should all these three combine, there results what is known as Sannipata (a derangement of the offer said the humours of the body, causing fever which is dangerous type).The craving for manifold pleasures of senses , so difficult to realise, are the various distempers, which are too numerous to name.

**

चौपाई :

ममता दादु कंडु इरषाई। **हरष बिषाद** गरह बहुताई॥
पर सुख देखि जरनि सोइ छई। कुष्ट **दुष्टता मन कुटिलई**॥17॥

*

ममता दाद है, ईर्षा (डाह) खुजली है, हर्ष-विषाद गले के रोगों की अधिकता है। पराए सुख को देखकर जो जलन होती है, वही क्षयी है। दुष्टता और मन की कुटिलता ही कोढ़ है॥17॥

*

The feeling of mine-ness corresponds to ring worms, envy represents itches, while joy and grief corresponds to a disease of the throat marked by an excessive enlargement of its glands. Grudging contemplation of others' happiness represents consumption; while wickedness and perversity of soul corresponds to leprosy.

**

अहंकार अति दुखद डमरुआ। **दंभ कपट मद मान** नेहरुआ॥
तृस्ना उदरबृद्धि अति भारी। **त्रिबिधि ईषना** तरुन तिजारी॥18॥

*

अहंकार अत्यंत दुःख देने वाला डमरू (गाँठ का) रोग है। दम्भ, कपट, मद और मान नहरुआ (नसों का) रोग है। तृष्णा बड़ा भारी उदर वृद्धि (जलोदर) रोग है। तीन प्रकार (पुत्र, धन और मान) की प्रबल इच्छाएँ प्रबल तिजारी हैं॥18॥

*

Egotism is counterpart of the most painful gout; while hypocrisy, deceit, arrogance and pride corresponds to the disease known Dracontiasis (which is marked by the presence in the body of a parasite known as guinea- worm). Thirst of enjoyment represents the most advance type of dropsy, while three types of cravings (for progeny, riches, and honours) corresponds to the violent quartan fever.

**

जुग बिधि ज्वर **मत्सर अबिबेका**। कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका॥19॥

*

मत्सर और अविवेक दो प्रकार के ज्वर हैं। इस प्रकार अनेकों बुरे रोग हैं, जिन्हें कहाँ तक कहूँ॥19॥

*

Jealousy and thoughtlessness are the two types of fever. There are many more diseases too numerous to mention.

**

संत कवि का आख़िरी प्रार्थना

उत्तर कांड का राम चरित मानस का आख़िरी दोहा, जो अपने आप में सम्पूर्ण है। यह एक भक्त का आख़िरी विनय लगता है अपने इष्टदेव से।

मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भव भीर॥

*

हे श्री रघुवीर! मेरे समान कोई दीन नहीं है और आपके समान कोई दीनों का हित करने वाला नहीं है। ऐसा विचार कर हे रघुवंशमणि! मेरे जन्म-मरण के भयानक दुःख का हरण कर लीजिये।

*

There is no one as helpless as me, and no one is even is equal to you in helping a helpless person.Realising this, please take away my terrible fear of the freedom from the worldly burden.

**

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम॥

**

जैसे कामी को स्त्री प्रिय लगती है और लोभी को जैसे धन प्यारा लगता है, वैसे ही हे रघुनाथजी। हे रामजी! आप निरंतर मुझे प्रिय लगिए॥

*

May You be ever so dear to me, O' Lord of the Raghu Clan!as woman is dear to a lustful man, and enhancing property is dear to the greedy, O, Rama.

**

इति